



Since 1995

JABALPUR PUBLIC COLLEGE

Affiliated to R.D.V.V. Jabalpur

RUN BY SHIV NARAYAN FOUNDATION

Shape your career with us

Facilities & Highlights

- Conference Hall
- Well Equipped Lab
- Library
- Wi-Fi Campus
- Canteen
- Career Guidance
- Sports & Games
- Campus Selection

- **D.El.Ed.**
- **B.Ed.**
- **M.Ed.**
- **B.A. B.Ed.**
- **D.C.A.**
- **P.G.D.C.A.**
- **Proposed
B.Ed. M.Ed.**

For More Information Contact

49, Karmeta, Patan Road, Ahead of Radio Station
Near MPSRTC Depot, Jabalpur (M.P.)
Ph. : 0761-2688838/9425154213/9826826822/9713561012
E-mail : erj.jpc@gmail.com
Website : jpc.org.in



VOLUME - 3

ISSUE - 1

EMERGING RESEARCH JOURNAL

June-2018



VOLUME - 3

ISSUE - 1

June - 2018

ISSN No. : 2456-2424

EMERGING RESEARCH JOURNAL

MULTIDISCIPLINARY INTERNATIONAL REFERRED JOURNAL

JABALPUR PUBLIC COLLEGE

RUN BY SHIV NARAYAN FOUNDATION

49, KARMETA, PATAN ROAD, JABALPUR (M.P.)

E-mail : erj.jpc@gmail.com

Website : www.erjjpc.org.in, www.jpc.org.in





ISSN No. : 2456-2424

Emerging Research Journal

Vol. - 3

Issue - 1

June 2018

A Multi-Disciplinary International Research Journal

Emerging Research Journal is a high quality Journal devoted to the field of science, social science, education, commerce & Management. "Emerging research Journal" is an official Publication of the national society of Shiv Narayan Foundation. The Journal publishes original records, review articles, short communications, scientific survey, etc. Emerging Research Journal provides a forum for all above disciplines for development and research techniques and produces of laboratory investigations. It aims to Provide a highly readable and valuable addition to the literature which will serve as an indispensable reference for years to come. The Journal's core aim therefore, is to provide a platform for the researchers, scholars and research findings with the rest of the world there by facilitating informed decision which will improve society as a whole.



Council for Teacher Education

(Reg. No. MP Societies Registration Act 508/91)

Dr. K.M. Bhandarkar, National President



Mo.9823297750

email Id:- kmbhandar@gmail.com

website :- cteinternational.org

I am extremely happy to acknowledge that Jabalpur Public College run by Shiv Narayan Foundation Jabalpur is publishing a Multidisciplinary International Journal titled EMERGING RESEARCH JOURNAL bearing ISSN-2456-2424.

In fact, some months back I had gone through the contents of the Journal, I was very much impressed with the quality of the published research papers. Printing and other physical aspects were also up to the mark.

From the last 11 years I am working as a Chief Editor of the CTE National Journal and I therefore, know the problems and difficulties in running a Journal on continuing basis.

In today's scenario only research can help us to achieve the goal of excellence in education. The Chief Editor, Members of Editorial Board and Office Bearers of the Parent Society are doing a great job of promoting research.

On behalf of the council for Teacher Education, I congratulate you all for this academic endeavour and also extend my best wishes to the readers and researchers associated with this esteemed Journal.

With Greetings,

Nagpur

Date : 14-06-2018

(Dr. K.M. Bhandarkar)

PATRONS

Shri Praveen Verma
Director, Jabalpur Public College
Jabalpur, (M.P.)

Dr. Kapil Dev Mishra
Vice Chancellor, RDVV
Jabalpur (M.P.)

Dr. Balbir Singh
USA
bsingh1932@msn.com

Father G.V. Vazhan Arasu
Principal, St. Aloysius College,
Jabalpur (M.P.)

Shri Bhupendra Nigam
Counsellor, Govt. College of
Educational Psychology, Jabalpur (M.P.)
9425161398

Prof. S.K. Mehta
03, Shivani Complex, Gupteshwar
Road, Madan Mahal, Jabalpur (M.P.)
0761-2420596

EDITOR IN CHIEF

Dr. G.S. Mishra

EDITOR

Dr. Nivedita Paul

MANAGING EDITORS

Dr. Chitranshi Verma

Dr. P.L. Mishra

Dr. Shweta Pandey

Smt. Meenakshi Shrivastava

Smt. Priyanka Tamrakar

ADVISORY BOARD

Dr. K.M. Bhandarkar, Gondia (M.H.)
Dr. V.K. Gupta, Kurukshetra, (Haryana)
Dr. V.M. Shashi Kumar,
Thiruvananthapuram, Kerala
Prof. B.K. Sahoo, Dean Faculty of Education,
RDVV, Jabalpur (M.P.)
Dr. Damodar Jain, Bhopal (M.P.)
Dr. Sunil Pahwa, Jabalpur (M.P.)
Dr. Prem Khatri, Nepal
Dr. Arun Shukla, Jabalpur (M.P.)
Dr. Raina Tiwari, Jabalpur (M.P.)

Dr. Nilima Bhagwati, Assam
Dr. K.K. Sharma, Kurukshetra, (Haryana)
Dr. Alka Nayak, Ex. Vice Chancellor
RDVV, Jabalpur (M.P.)
Dr. Susamma Johnson,
Jabalpur (M.P.)
Dr. P. Pal Devnasan, Tamilnadu
Dr. S.D. Singh, Mathura (U.P.)
Dr. Ashutosh Dubey, Jabalpur (M.P.)
Dr. Bhawana Soneji, Jabalpur (M.P.)
Dr. Rashmi Singh, Jabalpur (M.P.)

DISCLAIMER

The authors are solely responsible for the contents of the papers compiled in this volume. The publishers, Editors in Chief and the members of the Editorial Board do not take any responsibility for the same in any manner. Errors, if any, are purely unintentional & readers are requested to communicate such errors to the editors or publishers to avoid discrepancies in future.

अनुक्रमणिका

क्र.

पेज नं.

शिक्षा / Education

1. **भारती मिश्रा / डॉ. (श्रीमती) के.के दुबे** 1-6
विभिन्न शिक्षण प्रशिक्षण संस्थाओं के संगठनात्मक परिवेश का प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षणिक अभिक्षमता पर प्रभाव
2. **डॉ. रीना जैन / राजभान हल्दकार** 7-10
कक्षा नवमी के विद्यार्थियों में परिमेय संख्या की समझ विकसित करना
3. **श्रीमती पूनम मिश्रा** 11-14
केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन का उनके संज्ञानात्मक विकास पर प्रभाव
4. **प्रतिभा मिश्रा** 15-19
स्ववित्तपोषित एवं वित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के पर्यावरण संबंधित ज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन
5. **डॉ. अम्बु नाथ मिश्रा** 20-25
अध्यापक शिक्षा की समस्याएं एवं सुधार
6. **कुमारी कविता दवे / डॉ. जी. एस. मिश्रा** 26-31
विभिन्न प्रबंधन के विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि, जीवन संतुष्टि के मध्य परस्पर सम्बन्धों का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास आत्म प्रत्यय पर प्रभाव का अध्ययन
7. **श्री ए.एन. माथुर / प्रमोद कुमार नामदेव** 32-37
हाई स्कूल के शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता का अध्ययन

8. **श्रीमती सुषमा पिल्ले / डॉ. पी.एल. मिश्रा** 38-42
उच्च माध्यमिक स्तर के हिन्दी पाठ्यवस्तु में समाहित मानवीय मूल्यों के प्रति शिक्षकों की जागरूकता का विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि पर प्रभाव का अध्ययन
9. **Thomas Chandy / Dr. Urmila Verma** 43-47
A Study of the Effect of Emotional Intelligence on Academic Achievement of Senior Secondary School Students
10. **Dr. Nimmi Maria Oommen** 48-51
Institutional Planning : Valuable Insights
11. **Dr. Preeti S.Pendharkar** 52-58
Occupational Stress Among Teachers And Their Adjustment
12. **Dr. Gayatree Goswamee** 59-61
Women Empowerment Through Education
13. **Ms. Dzūvimeno Iralu Yaden / Dr. Bendangyapangla** 62-68
Problems Affecting Learning of Chemistry Among Secondary School Students
14. **Dr. Urmila Yadav** 69-74
Gender Equality & Women Empowerment
15. **Dr. Nivedita Paul** 75-78
Brain Based Learning in Teacher Education

ललित कला / Fine Art

16. **श्रीमति कीर्ति मिश्रा** 79-83
भारत में चित्रकला का इतिहास

विभिन्न शिक्षण प्रशिक्षण संस्थाओं के संगठनात्मक परिवेश का प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षणिक अभिक्षमता पर प्रभाव

भारती मिश्रा*

डॉ. (श्रीमती) के.के. दुबे**

शोध सार

प्रस्तुत शोध अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य हैं - विभिन्न शिक्षण प्रशिक्षण संस्थानों के संगठनात्मक परिवेश का प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षणिक अभिक्षमता पर प्रभाव का अध्ययन। शासकीय, अशासकीय एवं विश्व विद्यालय शिक्षण विभाग में अध्ययनरत 720 छात्राध्यापकों को प्रस्तुत अध्ययन के न्यादर्श के लिए चुना गया है। शिक्षण अभिक्षमता परीक्षण माला- डॉ. आर. पी. सिंह एवं डॉ. आर. एस. शर्मा का प्रयोग किया गया है। निष्कर्ष के रूप में महिला एवं पुरुष प्रशिक्षणार्थियों के सम्मिलित समूह की शैक्षणिक अभिक्षमता पर विभिन्न संगठनात्मक परिवेश का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। विश्वविद्यालय शिक्षण विभाग के पुरुष एवं महिला प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षणिक अभिक्षमता में लिंग भिन्नता होती है एवं अशासकीय शिक्षण संस्थाओं के पुरुष एवं महिला प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षणिक अभिक्षमता में लिंग भिन्नता नहीं होती है।

की वडर्स- संगठनात्मक परिवेश, शैक्षणिक अभिक्षमता एवं बी. एड. प्रशिक्षणार्थी।

यह सर्वमान्य है कि शिक्षक राष्ट्र के कर्णधार होते हैं एवं वे राष्ट्र के भाग्य के निर्माता होते हैं। यह इसलिए कहा गया है कि प्रत्येक विद्यार्थी जब वह बालक या बालिका होता है तो उसमें प्रतिभाएँ एवं गुण अंतर्निहित होते हैं। शिक्षक अपने शिक्षण कार्य के माध्यम से विद्यार्थियों के इन अंतर्निहित क्षमताओं, योग्यताओं आदि को प्रस्फुटित कर विद्यार्थियों की सर्वांगीण विकास में सहायक होते हैं एवं अपना पूर्ण योगदान देते हैं। यह महत्वपूर्ण है कि शिक्षा पद्धति उसी समय अच्छी हो सकती है जब शिक्षक कुशल होगा। कुशल शिक्षक ही शिक्षा के प्रति अपने दायित्वों का सफलतापूर्वक निर्वाह करते हैं एवं उनकी शिक्षण अभिक्षमता उनमें सकारात्मक गुणों का विकास करती है। अच्छे शिक्षक होने के लिए, जिसमें शिक्षणकार्य के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति हो, यह आवश्यक हो जाता है कि वे कुशल अध्यापकों से प्रशिक्षण प्राप्त करें एवं अर्जित ज्ञान का अपने शिक्षण कार्य में उपयोग लाएं। प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए विभिन्न प्रकार की प्रशिक्षण संस्थाएँ उपलब्ध हैं। ये शासकीय, अशासकीय अथवा स्वशासी हो सकती हैं। बी.एड. का प्रशिक्षण प्रशिक्षणार्थी को शासकीय एवं अशासकीय प्रशिक्षण महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालय के शिक्षण विभाग में प्राप्त होता है, उनका संगठनात्मक परिवेश भिन्न होता है।

सहायक संगठनात्मक परिवेश एक ऐसा मानव पर्यावरण चक्र है जो एक संगठन में कर्मचारियों के कार्य हेतु बनाया जाता है। किसी भी संगठन के परिवेश का प्रभाव सभी लोगों पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष, दोनों ही रूपों में पड़ता है। किसी संगठन के परिवेश का प्रभाव उसकी स्वयं की उन्नति एवं वहाँ कार्य करने वाले कर्मचारियों के विकास एवं उन्नति पर भी पड़ता है, जैसे यदि किसी संस्था का वातावरण खुला है, वहाँ सभी कर्मचारियों को अपनी योग्यता बढ़ाने एवं छात्रों को अपनी प्रभावी विधियों से पढ़ाने की स्वतंत्रता होती है तो वहाँ शिक्षक पूर्ण लगन के साथ मन लगाकर अपना कार्य करता है, तो उनकी भी

* सहायक प्राध्यापक महार्थि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय, लमती, जबलपुर (म.प्र.)

** सेवानिवृत्त प्राचार्य, शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)

उन्नति होती है और संस्था की भी गुणवत्ता बढ़ती है।

संगठनात्मक परिवेश को विभिन्न विद्वानों ने अलग-अलग तरह से परिभाषित किया है जिसका मूल संगठन के प्रबंधन की प्रकृति से है। सामान्य रूप से शासकीय, अशासकीय एवं स्वशासी प्रबंधन के तरीके होते हैं जो विभिन्न संगठनात्मक परिवेशों को इंगित करते हैं। संगठन के परिवेश के विभिन्न पक्षों के बारे में व्यक्ति जो प्रत्यक्षीकरण करता है वह संगठनात्मक परिवेश के रूप में जाना जाता है। अलग-अलग प्रबंधन में यह प्रत्यक्षीकरण अलग-अलग तरह का होता है।

विभिन्न संगठनात्मक परिवेशों का प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षणिक अभिक्षमता संबंधी जो प्रमुख कार्य हुए हैं उनमें जेना, डॉ. प्रकाश चंद्र (2012) ने पाया कि हरिजन माध्यमिक विद्यालयों की शिक्षकों के शिक्षण अभिक्षमता, शिक्षण दक्षता एवं संगठनात्मक वातावरण के संदर्भ में लिंग भिन्नताएँ होती हैं एवं पढ़ाये जाने वाले विषय का इस पर प्रभाव पड़ता है। साथ ही उन्होंने यह भी पाया कि शिक्षण अभिक्षमता एवं शिक्षण दक्षता, शिक्षण अभिक्षमता एवं संगठनात्मक परिवेश तथा शिक्षण दक्षता तथा संगठनात्मक परिवेश के मध्य सार्थक सहसंबंध होता है। इससे स्पष्ट होता है शिक्षण अभिक्षमता एवं शिक्षण दक्षता के साथ संबंध होता है। वर्तमान समय विज्ञान एवं तकनीकी का युग कहा जाता है जिसमें अत्याधिक प्रतिस्पर्धा है एवं शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है। इसमें शिक्षा का एक ऐसा उद्देश्य होना चाहिए जो अधिगम समाज के साथ-साथ वैश्विक समाज के निर्माण में सहायक हो। यह सब कुछ विद्यार्थियों को शिक्षा देने वाले शिक्षकों पर निर्भर करता है। अतः विभिन्न परिवेश के शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता का अध्ययन करना अत्यंत सामयिक प्रतीत होता है जिससे विभिन्न परिवेश के शिक्षकों की शैक्षणिक अभिक्षमता का तुलनात्मक अध्ययन कर शिक्षा के अधिकत संभाव्य विकास हेतु कार्य किया जा सके।

यह महत्वपूर्ण है कि यदि हमें भविष्य में ऐसे विद्यार्थी चाहिये जो राष्ट्र के विकास में अच्छे नागरिक बनकर योगदान दे सकें तो यह आवश्यक हो जाता है कि सभी प्रशिक्षण संस्थाओं में अच्छे संगठनात्मक परिवेश की सकारात्मक विशेषताओं को समाहित किया जाये, जिससे ऐसे प्रशिक्षणार्थी मिल सकें जिनकी शिक्षण कार्य के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति हो और वे विद्यार्थियों के विकास में अपना अधिकतम संभाव्य योगदान दे सकें। यह उच्च शैक्षिक अभिक्षमता के माध्यम से संभव हो सकती है।

अतः प्रस्तुत शोधकार्य में यह देखने का प्रयास किया गया है कि क्या संगठनात्मक परिवेश का प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षणिक अभिक्षमता पर कोई प्रभाव पड़ता है? और यदि ऐसे निष्कर्ष आते हैं कि शैक्षणिक अभिक्षमता संगठनात्मक परिवेश से प्रभावित होती है तो तदनुसार शिक्षाविदों, शैक्षिक प्रशासकों, आदि को सुझाव दिये जा सकें।

उद्देश्य :-

1. प्रशिक्षण संस्थाओं के संगठनात्मक परिवेश का प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षणिक अभिक्षमता पर प्रभाव का अध्ययन।
2. शासकीय / अशासकीय / विश्वविद्यालय शिक्षण विभाग के पुरुष एवं महिला प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षणिक अभिक्षमता में लिंग भिन्नता का अध्ययन।

परिकल्पना :-

1. प्रशिक्षण संस्थाओं के संगठनात्मक परिवेश का प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षणिक अभिक्षमता पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

2. शासकीय / अशासकीय / विश्वविद्यालय शिक्षण विभाग के पुरुष एवं महिला प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षणिक अभिक्षमता में सार्थक लिंग भिन्नता नहीं होती है।

न्यादर्श :-

कुल 720 छात्राध्यापक / छात्राध्यापिकाओं को न्यादर्श के रूप में निम्नानुसार चयनित किया गया है।

न्यादर्श तालिका

प्रशिक्षणार्थी

परिवेश	पुरुष	महिला	योग
शासकीय	15	35	50
अशासकीय	135	325	460
विश्वविद्यालय शिक्षण विभाग	60	150	210
योग	210	510	720

चर :-

स्वतंत्र चर - संगठनात्मक परिवेश

परतंत्र चर - शैक्षणिक अभिक्षमता

नियंत्रित चर - बी. एड. प्रशिक्षणार्थी

उपकरण :-

शिक्षण अभिक्षमता परीक्षण बैटरी - डॉ. आर.पी. सिंह एवं डॉ. एस.एस.शर्मा

परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या :-

इन्हें निम्नांकित सारणियों में प्रस्तुत किया गया है:-

तालिका क्रमांक-01

विभिन्न संगठनात्मक परिवेश के महिला एवं पुरुषों के सम्मिलित समूह (संयुक्त रूप से)
प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षणिक अभिक्षमता संबंधित तुलनात्मक परिणाम

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन
शासकीय	50	148.68	11.90
अशासकीय	460	154.33	78.92
विश्वविद्यालय शिक्षण विभाग	210	163.21	15.11

प्रसरण विश्लेषण की सारांश तालिका

विचरण के स्रोत	स्वतंत्रता के अंश	वर्गों का योग	वर्गों का मध्यमान	एफ अनुपात	'पी' मान
समूह के मध्य	2	14667.22	7333.61	1.80	>0.05
समूह के बीच	717	2913178.10	4.63.01		

स्वतंत्रता के अंश -2,717

0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान -3.00

0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान -4.62

उपरोक्त तालिका में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट होता है कि विभिन्न संगठनात्मक परिवेश के महिला एवं पुरुष प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षणिक अभिक्षमता में सार्थक अंतर नहीं है। प्राप्त 'एफ' अनुपात का मान 1.80 आया है जो 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। उपरोक्त परिणाम से निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि महिला एवं पुरुषों के सम्मिलित समूह के प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षणिक अभिक्षमता पर विभिन्न संगठनात्मक परिवेश का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

अतः उपरोक्त परिणाम के परिपेक्ष्य में पूर्व में ली गई परिकल्पना स्वीकृत होती है।

तालिका क्रमांक-02

शासकीय / अशासकीय / विश्वविद्यालय शिक्षण विभाग के पुरुष एवं महिला प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षणिक अभिक्षमता संबंधी तुलनात्मक परिणाम

संगठनात्मक परिवेश	लिंग	N	M	S.D.	t / C.R.	'P' Value
शासकीय	पुरुष	15	156.53	10.86	3.35	< 1.01
	महिला	35	145.31	10.79		
अशासकीय	पुरुष	135	150.10	11.47	1.14	> 0.05
	महिला	325	156.10	93.58		
विश्वविद्यालय शिक्षा विभाग	पुरुष	60	170.83	7.42	6.54	< 0.01
	महिला	150	160.16	16.30		

उपरोक्त तालिका में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट हो जाता है कि शासकीय प्रशिक्षण संस्थाओं एवं विश्वविद्यालय शिक्षण विभाग के पुरुष एवं महिला प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षणिक अभिक्षमता में लिंग भिन्नता होती है। प्राप्त टी मान / क्रांतिक अनुपात का मान क्रमशः 3.35 एवं 6.54 हैं जो 0.01 पर सार्थक है। शासकीय महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालय शिक्षण विभाग के पुरुष प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षणिक अभिक्षमता, महिला प्रशिक्षणार्थियों से अधिक है। अशासकीय प्रशिक्षण संस्थाओं के पुरुष एवं महिला प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षणिक अभिक्षमता में लिंग भिन्नता नहीं है। प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 1.14 है जो 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है।

अतः पूर्व में ली गई परिकल्पना आंशिक रूप से स्वीकृत होती है।

परिणामों की व्याख्या -

विभिन्न संगठनात्मक परिवेश अर्थात् शासकीय, अशासकीय एवं विश्वविद्यालय शिक्षण विभागों के प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षणिक अभिक्षमता में सार्थक अंतर नहीं है। इन सभी संस्थाओं में प्रशिक्षणार्थियों का प्रशिक्षण के लिए चयन पूर्व परीक्षा के आधार पर होता है एवं केवल उन्हीं का प्रशिक्षण के लिए चयन होता है जिनमें औसत से अधिक शैक्षणिक अभिक्षमता होती है। संगठनात्मक परिवेशों के भिन्न होने के उपरांत भी सभी तीनों जगह के शिक्षक प्रशिक्षण यह अपना उत्तरदायित्व समझते हैं कि भविष्य में उन्हें ऐसे शिक्षक चाहिए जो विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में सहायक हों। तात्पर्य यह है कि तीनों प्रकार की शिक्षण संस्थाओं में प्रशिक्षणार्थियों को अपनी वर्तमान अभिक्षमता का विकास करने का पूरा अवसर मिलता है, संभवतः इसलिए वे शिक्षण अभिक्षमता के संदर्भ में एक से हैं।

यह महत्वपूर्ण है कि शासकीय महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालय शिक्षण विभाग के पुरुष प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षणिक अभिक्षमता, महिला प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में अधिक है जबकि अशासकीय संस्था में अध्ययनरत् पुरुष एवं महिला प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षणिक अभिक्षमता में सार्थक अंतर नहीं है। विश्वविद्यालय शिक्षण विभाग एवं शासकीय प्रशिक्षण संस्थाओं की तुलना में अशासकीय प्रशिक्षण संस्थाओं के अकादमिक एवं संगठनात्मक परिवेश में भिन्नता होती है। अशासकीय संस्थान नियमों के पालन में कठोर तो होते हैं पर उनमें यदा-कदा शिथिलता भी कर देते हैं भारतीय परिवेश में पूर्व में जो पुरुष प्रधानता थी इसमें पुरुषों का दायित्व परिवार के भरण-पोषण की व्यवस्था करना था। ऐसी स्थिति में पुरुष प्रशिक्षणार्थी अपने भविष्य को ध्यान में रखते हुए प्रशिक्षण का अधिकतम लाभ उठाने का प्रयास करते हैं जिससे वे एक कुशल शिक्षक होकर अपनी शैक्षणिक अभिक्षमता का अधिकतम लाभ अपने विद्यार्थियों को दे सकें।

अशासकीय प्रशिक्षण संस्थाओं के प्रशिक्षण कार्य की शैक्षणिक अभिक्षमता में लिंग भिन्नता ना होने संबंधी परिकल्पनाओं से स्पष्ट होता है कि लगभग सभी प्रशिक्षणार्थियों के पास पूर्व शिक्षण का अनुभव नहीं होता है एवं प्रतियोगी परीक्षा के माध्यम से चयन के कारण भी इनकी शैक्षणिक अभिक्षमता में अंतर नहीं होता। इस तरह स्पष्ट हो जाता है कि जहाँ एक ओर संगठनात्मक परिवेश का प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षणिक अभिक्षमता पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है वहीं दूसरी ओर अलग-अलग संगठनात्मक परिवेश की शिक्षण संस्थाओं में आंशिक लिंग भिन्नता है। इस संदर्भ में जेना, डॉ. प्रकाश चन्द्र (2012) का शोध महत्वपूर्ण है जिसमें उन्होंने पाया कि हरिजन माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता में संगठनात्मक वातावरण के फलस्वरूप लिंग भिन्नता होती है उन्होंने शिक्षण अभिक्षमता एवं शिक्षण दक्षता के मध्य संबंध भी पाया। प्रस्तुत शोध परिणाम इन परिणामों के आंशिक रूप से समान हैं।

निष्कर्ष -

1. विभिन्न संगठनात्मक परिवेश के महिला एवं पुरुषों के सम्मिलित समूह के प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षणिक अभिक्षमता पर विभिन्न संगठनात्मक परिवेश का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होता है।
2. शासकीय प्रशिक्षण संस्थाओं एवं विश्वविद्यालय शिक्षण विभाग के पुरुष एवं महिला प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षणिक अभिक्षमता में लिंग भिन्नता होती है। पुरुषों की शैक्षिक अभिक्षमता महिला प्रशिक्षणार्थियों से अधिक है।
3. अशासकीय प्रशिक्षण संस्थाओं के पुरुष एवं महिला प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षणिक अभिक्षमता में लिंग भिन्नता नहीं होती है।

संदर्भ ग्रंथ :-

1. अस्थाना, विपिन (2005) मनोविज्ञान एवं शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, आगरा विनोद पुस्तक मंदिर, 14 वां संस्करण।
2. कपिल, एच.के., सिंह, ममता (2012) सांख्यिकीय के मूल तत्व, आगरा, अग्रवाल पब्लिकेशन।
3. शर्मा, आर.ए. (2014) शिक्षा अनुसंधान, मेरठ, आर लाल बुक डिपो।
4. गुप्ता, आर (2014) शिक्षण अभिरूचि एवं शिक्षण अभिवृत्ति, नई दिल्ली, रमेश पब्लिशिंग हाऊस।
5. मिश्रा, विकास (2006) अध्यापकों तथा अध्यापिकाओं की अध्यापन कुशलता का तुलनात्मक अध्ययन (सी.एस.जे.एन.) विश्वविद्यालय, कानपुर।
6. International Journal of Educational and Psychological Research (IJETR) ISSN- 2279-0179, PP. 9-29.
7. www.eric.ed.gov.
8. www.Google.co.in
9. www.enwikipedia.org/wiki

कक्षा नवमीं के विद्यार्थियों में परिमेय संख्या की समझ विकसित करना

डॉ. रीना जैन*

राजभान हल्दकार**

शोध सार

प्रस्तुत शोध कक्षा नवमीं के विद्यार्थियों में परिमेय संख्या की समझ विकसित करना है। विषय में उद्देश्य के रूप में गणित विषय में परिमेय संख्या की अवधारणा (समझ) विकसित करना लिया गया है। न्यादर्श के रूप में शा.उ.मा.वि. कुआं, विकासखण्ड-बहोरीबंद, जिला-कटनी के कक्षा नवमीं के 55 विद्यार्थियों का चयन किया गया। उपकरण के रूप में स्वनिर्मित परीक्षण का उपयोग किया गया। सांख्यिकी के अंतर्गत प्रतिशत सांख्यिकी को लिया गया तथा निष्कर्ष रूप में पाया कि गतिविधि आधारित शिक्षण से विद्यार्थियों में उपलब्धि स्तर में 81.6% की वृद्धि हुई तथा संख्या की पहचान धनात्मक व ऋणात्मक संख्या, भिन्न व परिमेय संख्या की अवधारणा (समझ) 100% विकसित हुई।

प्रमुख शब्द - परिमेय संख्या, समझ का विकास।

विद्यार्थियों के जीवन में गणित के महत्व से सभी परिचित हैं। विद्यार्थियों में निरीक्षण-परीक्षण चिंतन और अन्वेषण करने की प्रवृत्ति और क्षमता एक दूसरे से कितनी भी भिन्न क्यों न हो उन्हें अपने विचारों को दूसरों के समक्ष प्रस्तुत करने के लिए कई बार गणित की आवश्यकता पड़ती ही है। बहुत पहले शिक्षा को आत्म ज्ञान एवं आत्म प्रकाश के साधन के रूप में जाना जाता था। आवश्यकतानुसार शिक्षा का अर्थ एवं स्वरूप बदलता गया। मानव को सभी क्षेत्रों में दक्ष बनाने हेतु आयु के विभिन्न स्तरों पर गणित, विज्ञान, भाषा, समाजशास्त्र, दर्शन शास्त्र, मनोविज्ञान आदि विषयों का अध्ययन कराया जाता है। वास्तव में गणित की सहायता के बिना प्रकृति के व्यवहार की व्याख्या संभव ही नहीं है। गणित, विज्ञान और तकनीकी का आधार अथवा मेरूदंड है। दैनिक जीवन में प्रतिदिन सैकड़ों बार कई वस्तुओं का समान बंटवारा करते हैं। जोड़ते, घटाते, गुणा व भाग करते हैं, जो कि भिन्न एवं परिमेय की अवधारणा को स्पष्ट करते हैं। वास्तव में सही तथ्य यह है कि सभी भिन्न तो परिमेय संख्या होती हैं परन्तु सभी परिमेय संख्या भिन्न हों, यह आवश्यक नहीं होता है। भिन्न हमेशा धनात्मक होती है जबकि परिमेय संख्या धनात्मक तथा ऋणात्मक दोनों होती हैं। बहुधा देखने में आता है कि छात्र वह परिमेय संख्या जिनका हर समान होता है, जोड़ एवं घटाना कर लेते हैं लेकिन जब हर अलग-अलग संख्या होती है तो जोड़ और घटाना नहीं कर पाते हैं।

इसके पीछे यही कारण समझ में आया है कि या तो छात्रों का ध्यान विषय वस्तु की ओर केन्द्रित नहीं हो पाता अथवा शिक्षकों द्वारा सहज एवं सरल शिक्षण से समझाया नहीं जाता है। परन्तु अगर गतिविधि आधारित शिक्षण में गणित विषय की अवधारणाओं को स्पष्ट किया जाए तो विद्यार्थियों में गणित विषय के प्रति रूचि, गुणात्मक सुधार, गृहकार्य के प्रति लगन में वृद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि पाई जाती है। (पटेल, मंगलदीन 2015, एवं शर्मा, संतोष 2017)। राज्य शैक्षिक अनुसंधान परिषद् का यह लक्ष्य है कि गणित की जटिल से जटिल समस्याओं का निदान सहज और सरल तरीके से करके

*व्याख्याता, प्रगत शैक्षिक अध्ययन संस्थान, जबलपुर (म.प्र.)

**एम.एड. प्रशिक्षणार्थी, प्रगत शैक्षिक अध्ययन संस्थान, जबलपुर (म.प्र.)

छात्रों को बताया जाए। परिमेय संख्याओं की जानकारी यदि प्रत्येक छात्र को हो जाए तो आगे की कक्षाओं में गणित विषय के अध्ययन में कठिनाई नहीं होगी एवं छात्रों में गणित विषय के प्रति रूचि और अधिक हो जायेगी।

उद्देश्य -

- गणित विषय में परिमेय संख्या की अवधारणा (समझ) को विकसित करना।

परिकल्पना -

- गतिविधि आधारित शिक्षण से गणित विषय में परिमेय संख्या की अवधारणा (समझ) विकसित किया जा सकता है।

न्यादर्श -

शा.उ.मा.वि. कुआं, विकासखंड बहोरीबंद, जिला-कटनी के कक्षा नवमी में अध्ययनरत् 55 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में चयन किया गया है।

उपकरण -

1. पूर्व परीक्षण - स्वनिर्मित
2. पश्च परीक्षण - स्वनिर्मित

विधि-

सर्वप्रथम न्यादर्श में चयनित विद्यार्थियों पर पूर्व परीक्षण का प्रशासन एवं फलांकन किया गया। इसके उपरान्त गतिविधि आधारित विधि से 30 दिन शिक्षण कार्य करने के उपरान्त पश्च परीक्षण का प्रशासन एवं फलांकन किया गया। औसत प्रतिशत के आधार पर विश्लेषण किया गया।

परिणामों का विश्लेषण -

पूर्व परीक्षण के उपरान्त उपचारात्मक अध्यापन एवं पश्च परीक्षण के प्रशासन के पश्चात् प्राप्त परिणामों को सारणीबद्ध किया गया। दोनों परीक्षणों के लिए शोधकर्ता द्वारा एक समूह के लिए प्रश्नवार, प्रतिशत के आधार पर प्राप्त मान को तालिका द्वारा प्रदर्शित कर विश्लेषण किया गया।

सारणी - 1

पूर्व एवं पश्च परीक्षण के तुलनात्मक परिणाम

परीक्षण	संख्या	सही हल करने वाले विद्यार्थियों का औसत प्रतिशत
पूर्व परीक्षण	55	17.6%
पश्च परीक्षण	55	99.2%
अंतर		81.6%

विद्यार्थियों की परिमेय संख्या की समझ अत्याधिक न्यून थी जोकि गतिविधि आधारित शिक्षण से विद्यार्थियों ने गतिविधियों के माध्यम से परिमेय संख्या से संबंधित नियम, क्रियाविधियों को सुना, देखा एवं स्वयं क्रिया जिससे उनकी परिमेय संख्या की समझ की कठिनाईयों का निराकरण हुआ। अतः पश्च परीक्षण में परिमेय संख्या की अवधारणा में लगभग शत-प्रतिशत वृद्धि पाई गई।

सारणी - 2

विभिन्न अवधारणाओं में पूर्व एवं पश्च परीक्षणों के तुलनात्मक परिणाम

प्रश्न क्र.	अवधारणा	पूर्व परीक्षण में सही उत्तर लिखने वाले विद्यार्थियों का प्रतिशत	पश्च परीक्षण में सही उत्तर लिखने वाले विद्यार्थियों का प्रतिशत	पूर्व व पश्च परीक्षण में सही उत्तर लिखने वाले विद्यार्थियों की संख्या का अंतर
01	सम संख्या	12%	100%	88%
02	बड़ी संख्या	20%	100%	80%
03	भाज्य	24%	100%	76%
04	दो अंकों की बड़ी संख्या	20%	100%	80%
05	संख्या का गुणा	28%	100%	72%
06	संख्या का भाग	16%	100%	84%
07	सम व विषम संख्या	28%	100%	72%
08	भिन्न	24%	92%	68%
09	भिन्न की प्रकृति	4%	100%	96%
10	परिमेय संख्या	0%	100%	100%

इस प्रकार उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट हो जाता है कि अंकगणित के विभिन्न अवधारणाओं में विद्यार्थियों के गणितीय प्रत्यय में सुधार हुआ। पूर्व में जहाँ वे इन अवधारणाओं को उतनी कुशलतापूर्वक प्रश्नों को नहीं कर पा रहे थे वहीं विभिन्न अवधारणाओं के उनकी समझ का विकास हुआ जिससे वे उन अवधारणाओं की प्रकृति को आसानी से समझने में सक्षम हो गए। यह पश्च परीक्षण के पूर्व विद्यार्थियों का विभिन्न अवधारणाओं को क्रमवार समझाने के फलस्वरूप समझ विकसित हुई है इससे स्पष्ट होता है कि यदि विद्यार्थियों को विभिन्न गणितीय अवधारणाओं का गतिविधि शिक्षण से अध्यापन में जहाँ एक ओर उनकी, इनकी प्रकृति के बारे में समझ का विकास हुआ उनमें, इनकी व्यावहारिक रूप से उपयोग करना आया। इस प्रकार प्रस्तुत शोधकार्य गतिविधि आधारित शिक्षण के सकारात्मक परिणाम प्रस्तुत कर रहा है। पटेल, मंगलदीन (2015) एवं शर्मा, संतोष (2017) ने भी समस्याओं के निदान एवं विद्यार्थियों में उच्च शैक्षिक उपलब्धि में गतिविधि आधारित शिक्षण की सकारात्मक भूमिका को पाया। यह परिणाम वर्तमान शोध परिणामों के अनुरूप हैं। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि यदि गणित विषय में परिमेय संख्या की अवधारणा की समझ को गतिविधि आधारित शिक्षण के

माध्यम से विकसित किया जाता है तो विद्यार्थियों की परिमेय संख्या की अवधारणा में वृद्धि हो जाएगी एवं इससे उत्तरोत्तर वृद्धि की सम्भावना है। उपरोक्त परिणामों के परिपेक्ष्य में पूर्व में ली गई परिकल्पना अस्वीकृत नहीं होती है क्योंकि परिणाम यह प्रदर्शित कर रहे हैं कि विद्यार्थियों की सभी अवधारणाओं में शत-प्रतिशत वृद्धि हुई है।

निष्कर्ष -

- गतिविधि आधारित शिक्षण से गणित विषय में परिमेय संख्या की अवधारणा विकसित हुई है।

संदर्भ ग्रन्थ -

- कपिल, एच.के. (2009), “अनुसंधान विधियाँ”, आगरा, चौदहवाँ संस्करण, राखी प्रकाशन।
- कोठारी एवं कोठारी (1980), “सांख्यिकीय के सिद्धांत एवं व्यवहार”, भोपाल, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी।
- राय, पारसनाथ (2008), “अनुसंधान परिचय”, आगरा, द्वादशम संस्करण, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल।
- म.प्र. पाठ्यपुस्तक निगम राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल, की कक्षा 6, 7, 8 व 9वीं की गणित की पुस्तकें।

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन का उनके संज्ञानात्मक विकास पर प्रभाव

श्रीमती पूनम मिश्रा*

शोध सार

प्रस्तुत शोध पत्र में केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन से उनका कितना संज्ञानात्मक विकास प्रभावित होता है देखा गया। अध्ययन हेतु प्रतिदर्श के रूप में केन्द्रीय विद्यालय एवं मध्यप्रदेश शिक्षा से नवमी एवं दसवीं के छात्र-छात्राओं का चयन किया गया। इनमें यह ज्ञात होता है कि संज्ञानात्मक विकास पर सतत्-व्यापक मूल्यांकन का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। अतः सतत् और व्यापक मूल्यांकन के विद्यालयों में रुचिकर रूप से क्रियान्वित किया जाना चाहिए।

शिक्षा एक ऐसा माध्यम है जो बालक के विकास की नींव है। शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास किया जाता है। यह विकास प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से समाज एवं राष्ट्र का विकास करता है। समय-समय पर शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति का आकलन करने के लिए मूल्यांकन का उपयोग किया जाता है। मूल्यांकन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा बालक के विकास एवं पाठ्यक्रम के शैक्षिक उद्देश्यों की पूर्ति का आकलन किया जाता है। मूल्यांकन ही वह साधन है जिसके द्वारा बालक में होने वाले ज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक परिवर्तनों का आकलन किया जाता है। अतः मूल्यांकन की प्रक्रिया शिक्षा जगत में वैदिक काल से आधुनिक काल तक व्याप्त है। केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल ने सतत् और व्यापक मूल्यांकन द्वारा विद्यार्थी के न केवल शारीरिक विकास पर जोर दिया बल्कि इसके द्वारा विद्यार्थी में सामाजिक विकास, मानसिक विकास, संज्ञानात्मक विकास तथा चारित्रिक विकास को भी परिलक्षित किया।

बौद्धिक विकास एक सतत् प्रक्रिया है। विभिन्न मानसिक क्रियाएं, पृथक-पृथक आयु स्तरों पर परिपक्व व परिष्कृत होती हैं। जिसमें संवेदना प्रत्यक्षीकरण, स्मृति, कल्पना तथा तर्क आदि मानसिक व्यवहारों का प्रत्यक्षीकरण होता है। विद्यार्थी का बौद्धिक विकास में संवेदना और प्रत्यक्षीकरण का महत्वपूर्ण स्थान है, इसके बिना विभिन्न वस्तुओं का सही ज्ञान नहीं हो पाता है। इस पहचानने की क्षमता को ही संज्ञानात्मक विकास कहा जाता है। उपरोक्त वर्णन से स्पष्ट हो जाता है कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के विकास के लिए शैक्षिक एवं गैर-शैक्षिक क्रियाओं में विद्यार्थियों की सहभागिता न केवल निश्चित वरन् अनिवार्य की जाये जिससे वे अपने शैक्षिक जीवन की अवधि में अपने व्यक्तित्व का समग्र विकास कर सकें। विभिन्न आयोगों की अनुशंसाओं के उपरांत केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल ने सन् 2009 में सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन को अनिवार्य कर दिया।

पूर्व में किये गये शोधों में मिश्रा, अमरजीत (2005) ने पाया कि केन्द्रीय माध्यमिक विद्यालय शिक्षा मण्डल द्वारा अपनाई गई ग्रेडिंग प्रणाली एवं सतत् व्यापक मूल्यांकन का विद्यार्थियों के समग्र विकास पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इसी प्रकार जादल, एम.एम. (2011) ने पाया कि प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों पर सतत् और व्यापक मूल्यांकन के उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। अतः इस क्षेत्र में गहन अध्ययन कर शोधकर्ता ने व्यक्तित्व के विकास के

*विभागाध्यक्ष, टेवाईट बी.एड. ट्रेनिंग कॉलेज, कटनी (म.प्र.)

संज्ञानात्मक विकास पर शोध करने का निर्णय लिया।

शोध निष्कर्षों के माध्यम से यह भी ज्ञात हो सकेगा कि क्या केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल (प्रयोगात्मक समूह) तथा मध्यप्रदेश शिक्षा मण्डल (नियंत्रित समूह) के विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक विकास में कोई अंतर होता है? यदि ऐसा है तो तुलनात्मक दृष्टिकोण से जो भी अच्छा होगा उसके माध्यम से विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक विकास हेतु प्रयत्न किये जा सकेंगे।

उद्देश्य -

- प्रस्तुत शोध कार्य का उद्देश्य माध्यमिक स्तर के छात्र, छात्रा एवं विद्यार्थियों का सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन पद्धति से मूल्यांकन का उनके संज्ञानात्मक विकास पर प्रभाव का अध्ययन है।

परिकल्पना-

- माध्यमिक स्तर के छात्र, छात्रा एवं विद्यार्थियों का सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन पद्धति से मूल्यांकन का उनके संज्ञानात्मक विकास पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

न्यादर्श-

शोध अध्ययन में परीक्षण हेतु केन्द्रीय विद्यालय से 600 छात्र-छात्राएँ और मध्य प्रदेश शिक्षा बोर्ड से 600 छात्र-छात्राओं को लिया गया।

उपकरण- स्टेन्डर्ड प्रोग्रेसिव मेट्रिसेस-जे.सी. रेवन्स

शोध विधि- प्रस्तुत शोध कार्य में आँकड़ों के एकत्रीकरण के लिए जबलपुर जिले के केन्द्रीय विद्यालय से 600 विद्यार्थी और मध्यप्रदेश माध्यमिक शिक्षा मण्डल के 600 विद्यार्थियों को यादृच्छिक विधि से लिया गया। उन पर स्टेन्डर्ड प्रोग्रेसिव मेट्रिसेस भरवाई गई तथा फलांकन किया गया। परिणामों की व्याख्या और विश्लेषण कर शोध निष्कर्ष प्राप्त किये गए।

परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या- प्रस्तुत शोध कार्य में आँकड़ों के आधार पर परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या निम्नानुसार है-

तालिका क्रमांक-01

विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक विकास पर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन संबंधी तुलनात्मक परिणाम

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	'पी' मान
केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल	600	46.99	14.87	0.84	> 0.05
मध्य प्रदेश शिक्षा बोर्ड	600	46.07	11.89		

स्वतंत्रता के अंश - 1198

0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान - 1.96

0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान - 2.58

उपरोक्त तालिका के परिणाम यह प्रदर्शित करते हैं कि केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मंडल के विद्यार्थियों का मध्यमान 46.99 है और म.प्र. शिक्षा मंडल के विद्यार्थियों का मध्यमान 46.07 है। इनके मध्य क्रांतिक अनुपात का मान 0.84 है जो सार्थक नहीं है। अतः मध्यमानों के बीच सार्थक अंतर नहीं है। अतः केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल एवं मध्य प्रदेश माध्यमिक शिक्षा मंडल के विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक विकास में सार्थक अंतर नहीं आया है।

तालिका क्रमांक-02

छात्रों के संज्ञानात्मक विकास पर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन संबंधी तुलनात्मक परिणाम

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	'पी' मान
केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल	300	46.78	10.20	0.72	> 0.05
मध्य प्रदेश शिक्षा बोर्ड	300	46.08	13.50		

स्वतंत्रता के अंश - 598

0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान - 1.96

0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान - 2.59

उपरोक्त तालिका में प्रदर्शित परिणाम से स्पष्ट होता है कि केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल का मध्यमान 46.78 है। मध्य प्रदेश शिक्षा मंडल का मध्यमान 46.08 है। मध्यमानों के मध्य सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अंतर नहीं है। (क्रांतिक अनुपात का मान - 0.72) अतः केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल एवं मध्यप्रदेश माध्यमिक शिक्षा मण्डल के छात्रों के संज्ञानात्मक विकास में सार्थक अंतर नहीं आया है।

तालिका क्रमांक-03

छात्राओं के संज्ञानात्मक विकास पर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन संबंधी तुलनात्मक परिणाम

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	'पी' मान
केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल	300	47.20	10.75	1.33	> 0.05
मध्य प्रदेश शिक्षा बोर्ड	300	46.06	10.28		

स्वतंत्रता के अंश - 598

0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान - 1.96

0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान - 2.59

उपरोक्त तालिका में प्रदर्शित परिणाम से स्पष्ट होता है कि केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल का मध्यमान 47.20 है। मध्य प्रदेश शिक्षा मंडल का मध्यमान 46.06 है। मध्यमानों के मध्य सांख्यिकीय दृष्टिकोण में सार्थक अंतर नहीं है। क्रांतिक अनुपात का मान 1.33 है। अतः केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल एवं मध्यप्रदेश माध्यमिक शिक्षा मण्डल की छात्राओं के संज्ञानात्मक विकास में सार्थक अंतर नहीं है।

उपरोक्त परिणामों से यह तथ्य उभरकर सामने आया है कि विद्यार्थी शिक्षा के जिस स्तर पर अध्ययन कर रहा है वहाँ सहशैक्षिक क्रियाओं को महत्व नहीं दे रहा है। अतः विद्यार्थी के संज्ञानात्मक विकास पर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। संज्ञानात्मक विकास को अप्रत्यक्ष रूप से बौद्धिक विकास के रूप में लिया जा सकता है। यह मान्यता है कि बौद्धिक विकास में बुद्धिलब्धि स्थिर रहती है, एवं संज्ञानात्मक विकास पर वंशानुक्रम का प्रभाव पड़ता है। ऐसी स्थिति में सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन का संज्ञानात्मक विकास पर प्रभाव न पड़ना स्वाभाविक प्रतीत होता है, विकास के अंतर्गत संवेदना, प्रत्यक्षीकरण, कल्पना, स्मरण शक्ति, तर्क शक्ति, भाषा संबंधी योग्यता, समस्या समाधान योग्यता ये सभी विद्यार्थियों के परिवार पर निर्भर करती है।

परंतु इसके विपरीत मिश्रा, अमरजीत (2005) ने पाया कि ग्रेडिंग प्रणाली एवं सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन का विद्यार्थियों के समग्र विकास-जिसके अंतर्गत-सामाजिक, चारित्रिक, मानसिक, शारीरिक, संवेगात्मक विकास है, प्रभाव पड़ता है। इसी प्रकार राव, आर. एस. एवं भारती एन (1989) ने देखा कि केन्द्रीय विद्यालय में सतत् मूल्यांकन के अंतर्गत पिता की शिक्षा का छात्रों की उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि में संज्ञानात्मक विकास आवश्यक है अतः इसलिए विद्यालयों में सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन का प्रभावकारी तरीके से लागू किया जाना आवश्यक है जिससे विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास हो सके।

निष्कर्ष-

- केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल के छात्र, छात्रा एवं विद्यार्थियों के सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन का उनके संज्ञानात्मक विकास पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

संदर्भ ग्रंथ-

- अग्रवाल, जे.सी. (2015) शैक्षिक प्रौद्योगिकी तथा प्रबंधन के मूल तत्व, आगरा, श्री विनोद पुस्तक मंदिर, संस्करण-4जी, पृ. 353-354
- Hurlock, B. Elizabeth (1997) Child Development, New Delhi, Tata MC Craw Hill Education Private Limited, Sixth Editio
- मंगल, एस.के. (2014) शिक्षा मनोविज्ञान, दिल्ली, पी. एच. आई. अधिगम प्राइवेट लिमिटेड, पृ. 103
- मंगल एस.के. मंगल शुभ्रा (2006) शैक्षिक तकनीकी के मूल तत्व एवं प्रबंधन, मेरठ, इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस।
- मिश्रा संतोष, मिश्रल दीपशिखा (2002) बाल विकास तथा पारिवारिक संबंध, जयपुर, यूनिवर्सिटी बुक हाउस प्राइवेट लिमिटेड, संस्करण 2002, पृ. 150-154
- राय, पारसनाथ, राय, सी.नी. (2011) अनुसंधान परिचय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन
- शर्मा, ओ. पी. सिंह, रामपाल (2008) शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, संस्करण-5, (2012-13), पृ. 92-94
- वर्मा, प्रीति, श्रीवास्तव, डी. एन. (2013-14) बाल मनोविज्ञान: बाल विकास (मानव विकास), आगरा, अग्रवाल पब्लिकेशन, संस्करण-प्रथम, पृ. 214-218

स्ववित्तपोषित एवं वित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के पर्यावरण संबंधित ज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन

प्रतिभा मिश्रा*

शोध सार

पर्यावरण की समस्या भारत देश की समस्या ही नहीं यह तो विश्व व्यापी समस्या है। शिक्षा मानव जीवन के विकास में सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंग है एवं शिक्षक को राष्ट्र का निर्माता कहा जाता है और पर्यावरणीय समस्या से निपटने के लिये जागरूकता के साथ-साथ ज्ञान का होना आवश्यक है। इसी को ध्यान में रखते हुये पर्यावरण के लिए वर्तमान में पर्यावरणीय ज्ञान को अति आवश्यक माना जा रहा है क्योंकि जब हमारा अस्तित्व ही नहीं रहेगा तो सारी प्रगति या विकास किस काम का होगा। प्रस्तुत शोध कार्य का उद्देश्य स्ववित्तपोषित एवं वित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के पर्यावरण संबंधित ज्ञान का अध्ययन करना है। इस हेतु जबलपुर नगर के स्ववित्तपोषित एवं वित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के कला एवं विज्ञान संकाय के 100 शिक्षकों का चयन कर उनकी पर्यावरण संबंधी ज्ञान के मापन हेतु डॉ. सीमा धवन का मानकीकृत पर्यावरण ज्ञान परीक्षण का चयनति शिक्षकों पर प्रशासन किया एवं निष्कर्ष स्वरूप पाया कि स्ववित्तपोषित एवं वित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के पर्यावरण सम्बन्धित ज्ञान में अंतर है।

अध्यापक शिक्षा का महत्वपूर्ण अंग होता है। पर्यावरण की समस्या भारत देश की समस्या ही नहीं यह तो विश्व व्यापी समस्या है। शिक्षा मानव जीवन के विकास में सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंग है एवं शिक्षक को राष्ट्र का निर्माता कहा जाता है और पर्यावरणीय समस्या से निपटने के लिये जागरूकता के साथ-साथ ज्ञान का होना आवश्यक है। बुद्धिजीवी वर्ग की निगाहें शिक्षा पर आकर टिकी है। इसी को ध्यान में रखते हुये पर्यावरण के लिए वर्तमान में पर्यावरणीय ज्ञान को अति आवश्यक माना जा रहा है क्योंकि जब हमारा अस्तित्व ही नहीं रहेगा तो सारी प्रगति या विकास किस काम का होगा।

उपरोक्त समस्या की उत्पत्ति से ही शोधकर्ता के मन में जिज्ञासा हुई है-

1. स्ववित्तपोषित एवं वित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में पर्यावरण संबंधित ज्ञान कितना है? यह स्थिति जबलपुर जिले में किस प्रकार परिलक्षित होती है?
2. स्ववित्तपोषित एवं वित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों का पर्यावरण संबंधित ज्ञान का स्तर क्या है?
3. जबलपुर जिले के स्ववित्तपोषित एवं वित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की पर्यावरण संबंधित ज्ञान में क्या कोई अन्तर है? यह अन्तर कला एवं विज्ञान वर्ग के शिक्षकों में किस प्रकार इंगित होता है?

इन्हीं प्रश्नों का समाधान प्राप्त करने के लिये शोधार्थी ने समस्या का चयन किया है।

पर्यावरण की परिभाषायें देते समय इस ओर ध्यान आकर्षित किया गया था कि पर्यावरण, इस पृथ्वी पर रहने वाले प्राणी जगत को उस पर आने वाली विपदाओं से उन्हें सुखमय जीवन देने का प्रयास करना है। साथ ही साथ उन्हें इस योग्य

*सहायक प्राध्यापक, एन.ई.एस. एजुकेशन कॉलेज, गोरखपुर, जबलपुर (म.प्र.)

भी बनाना है कि वे आगे और हो सकने वाली समस्याओं को पूर्व में ही जान सकें और उनका हल भी हो जाये और नियंत्रित जीवन प्रक्रिया में कोई बाधा भी न हो। पर्यावरण के प्रति शिक्षकों का ज्ञान इसलिए भी आवश्यक है कि शिक्षक के माध्यम से ही विद्यार्थी भी अनुकरण करता है। यदि शिक्षक का ज्ञान पर्यावरण के प्रति उच्च होगा तो विद्यार्थी का भी उच्च होना स्वाभाविक है। शुद्ध हवा, पेयजल, भोजन और ऊर्जा तथा शुद्ध वातावरण, आवास आदि यदि उच्च एवं अच्छी मात्रा में होंगे तो जीवन स्तर ऊँचा उठेगा।

शिक्षकों को पर्यावरण की समस्या से देश की सामाजिक उन्नति एवं आर्थिक प्रगति पर पड़ रहे, कुप्रभावों से अवगत होना आवश्यक है, क्योंकि शिक्षक छात्रों को पर्यावरणीय ज्ञान प्रदान करने का अच्छा माध्यम होता है। हमारे देश को ही नहीं वरन् सम्पूर्ण विश्व को पर्यावरणीय ज्ञान की आवश्यकता है क्योंकि सभी देशों में प्रदूषण की समस्या उत्पन्न हो रही है। अतः सभी देशों के लोगों (शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र) को पर्यावरण ज्ञान होना चाहिए। पर्यावरणीय ज्ञान एक ऐसा ज्ञान है, जिसके माध्यम से युवा पीढ़ी को समकालीन जीवन की वास्तविकताओं का सामना करने की शिक्षा लेकर सक्रिय नागरिक बनाया जा सकता है।

पेड़ एवं वनस्पति ही केवल CO₂ को प्राणवायु O₂ में परिवर्तित कर सकते हैं। अतः वायुमण्डल में ऑक्सीजन की आवश्यक मात्रा रखने तथा CO₂ की वृद्धि को रोकने के लिये तथा उससे होने वाली पर्यावरणीय विकृतियों से अवगत कराने हेतु शिक्षार्थी के करने या न करने की बातें बतानी हैं।

पर्यावरण समस्या के लिये समाधान और समाधान के लिये खोज तथा अनुसंधान अति आवश्यक है। चूंकि माध्यमिक स्तर तक आते-आते छात्रों का ज्ञान विस्तृत हो जाता है। उनमें चिन्तन, मनन की क्षमता आ जाती है। अतः शिक्षक पर्यावरणीय ज्ञान का बोध कराकर विद्यार्थियों के माध्यम से समाज के सभी वर्गों को एक साथ लेकर पर्यावरणीय ज्ञान कराकर एक शक्तिशाली समाज की आधार शिला अपने ज्ञान द्वारा स्थापित कर सकता है। इसलिए पर्यावरणीय ज्ञान से जुड़े अध्ययन एवं अनुसंधान विशेष महत्वपूर्ण होते हैं। इस हेतु नीलम देवी (2003) छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय की छात्रा द्वारा किया गया “पर्यावरण एवं परिस्थितिकी के विकास की आवश्यकता एवं महत्व तथा पर्यावरण प्रदूषण संरक्षण हेतु प्रबंधन की व्याख्या तथा पर्यावरण परिस्थितिकी के विकास में शिक्षक तथा शिक्षा के योगदान का अध्ययन किया” एवं निष्कर्ष पाया कि प्रदूषण के प्रति जागृति आवश्यक है। प्रदूषण नियंत्रण उपायों का दृढ़ता से लागू किया जाये। साथ ही शिक्षा द्वारा पर्यावरण संरक्षण व विकास संभव है। इसी प्रकार विनोद कुमार (2003) छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय के छात्र द्वारा किया गया वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित “स्नातक एवं परास्नातक स्तर के शिक्षकों का प्रदूषण के प्रति जागरूकता का अध्ययन” किया एवं पाया कि स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर के शिक्षकों में प्रदूषण के प्रति समान जागरूकता है।

स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालय :- स्ववित्तपोषित शिक्षा वह शिक्षा है जो स्वयं अपने आप में आर्थिक स्थिति में सम्पन्न हो अर्थात् शिक्षण संस्थायें, जो सरकार द्वारा आर्थिक स्थिति से वंचित, जिनका वेतन शिक्षण संस्थाओं द्वारा ही निर्धारित किया जा रहा है।

वित्तपोषित माध्यमिक विद्यालय :- ऐसी संस्थायें जो सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त हों तथा उनकी आर्थिक स्थिति सरकार पर निर्भर होती है, उन्हें वित्तपोषित संस्था कहा जाता है। इन संस्थाओं में शिक्षक कितने होंगे, योग्यतायें क्या होगी? छात्रों से शुल्क कितना लिया जायेगा? आदि का निर्धारण सरकार द्वारा किया जाता है।

उद्देश्य:-

1. स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के पर्यावरण संबंधित ज्ञान का अध्ययन करना।

2. वित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के पर्यावरण संबंधित ज्ञान का अध्ययन करना।
3. स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के कला एवं विज्ञान वर्ग के शिक्षकों के पर्यावरण संबंधित ज्ञान का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ :-

1. स्ववित्तपोषित एवं वित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के पर्यावरण संबंधित ज्ञान में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के कला एवं विज्ञान वर्ग के शिक्षकों के पर्यावरण संबंधित ज्ञान में सार्थक अंतर नहीं है।
3. वित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के कला एवं विज्ञान वर्ग के शिक्षकों के पर्यावरण संबंधित ज्ञान में सार्थक अंतर नहीं है।

न्यादर्श - प्रस्तुत शोध हेतु न्यादर्श का चयन निम्नानुसार किया गया -

विद्यालय का प्रकार	कला संकाय	विज्ञान संकाय	कुल
स्ववित्तपोषित	25	25	50
वित्तपोषित	25	25	50
कुल	50	50	100

उपकरण - प्रस्तुत शोध कार्य में उपकरण के रूप में डॉ. सीमा धवन निर्मित मानकीकृत पर्यावरण ज्ञान परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

परिणामों का विश्लेषण -

तालिका संख्या -01

स्ववित्तपोषित एवं वित्तपोषित माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों का पर्यावरण ज्ञान संबंधी तुलनात्मक परिणाम

विद्यालय	संख्या	मध्यमान विचलन	मानक अनुपात	क्रांतिक	सार्थकता
स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालय	50	60.02	5.51	2.66	0.01 स्तर पर सार्थक अंतर हैं
वित्तपोषित माध्यमिक विद्यालय	50	63.00	5.65		

स्वतंत्रता के अंश - 98

0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान - 1.98

0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान - 2.63

तालिका 01 प्रदर्शित परिणाम से स्पष्ट है स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालय के 50 शिक्षकों का मध्यमान 62.02 तथा मानक विचलन 5.51 है। वित्तपोषित माध्यमिक विद्यालय के 50 शिक्षकों का मध्यमान 63.00 तथा मानक विचलन 5.65 है। स्ववित्तपोषित एवं वित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के पर्यावरणीय ज्ञान में सार्थक अंतर पाया गया है, क्योंकि दोनों समूहों के लिए क्रांतिक अनुपात का मान 2.66 प्राप्त हुआ है जो कि 0.10 स्तर पर सार्थकता हेतु निर्धारित न्यूनतम मान से अधिक है। वित्तपोषित माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों का पर्यावरणीय ज्ञान, स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों से अधिक है। अतः शोध परिकल्पना (H_1) अस्वीकृत होती है।

तालिका संख्या-02

स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालय के कला एवं विज्ञान वर्ग के शिक्षकों के पर्यावरणीय ज्ञान संबंधी तुलनात्मक परिणाम

वित्तपोषित माध्यमिक विद्यालय	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता
कला शिक्षक	25	58.96	6.01	1.13	0.05 स्तर पर
विज्ञान शिक्षक	25	60.72	4.92		सार्थक नहीं है।

स्वतंत्रता के अंश - 48

0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान - 2.01

0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान - 2.68

तालिका 02 प्रदर्शित परिणाम से स्पष्ट है स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालय के कला वर्ग के शिक्षकों के पर्यावरणीय ज्ञान का मध्यमान 58.96 तथा मानक विचलन 6.01 है तथा स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालय के विज्ञान वर्ग के शिक्षकों का मध्यमान 60.71 तथा मानक विचलन 4.92 प्राप्त हुआ है। दोनों समूह के लिए 'टी' का मान 1.13 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर निर्धारित न्यूनतम मान की अपेक्षा कम है। अतः कहा जा सकता है कि स्ववित्तपोषित कला एवं विज्ञान वर्ग के शिक्षकों के पर्यावरणीय ज्ञान में सार्थक अंतर नहीं है। अतः शोध परिकल्पना (H_2) स्वीकृत होती है।

तालिका संख्या -03

स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालय के कला एवं विज्ञान वर्ग के शिक्षकों के पर्यावरणीय ज्ञान संबंधी तुलनात्मक परिणाम

वित्तपोषित माध्यमिक विद्यालय	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता
कला शिक्षक	25	63.52	6.32	0.628	0.05 स्तर पर
विज्ञान शिक्षक	25	62.52	4.87		सार्थक नहीं है।

स्वतंत्रता के अंश - 48

0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान - 2.01

0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान - 2.68

तालिका 03 से स्पष्ट है वित्तपोषित माध्यमिक विद्यालय के कला वर्ग के शिक्षकों के पर्यावरणीय ज्ञान का मध्यमान 63.52 तथा मानक विचलन 6.32 है तथा वित्तपोषित माध्यमिक विद्यालय के विज्ञान वर्ग के शिक्षकों के पर्यावरणीय ज्ञान का मध्यमान 62.52 तथा मानक विचलन 4.87 प्राप्त हुआ है। दोनों समूह के लिए 'टी' का मान 0.628 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 स्तर निर्धारित न्यूनतम मान की अपेक्षा कम है। अतः कहा जा सकता है कि वित्तपोषित कला एवं विज्ञान वर्ग के शिक्षकों के पर्यावरणीय ज्ञान में सार्थक अंतर नहीं है। अतः शोध परिकल्पना (H_3) स्वीकृत होती है।

निष्कर्ष एवं व्याख्या :-

1. जबलपुर नगर के स्ववित्तपोषित एवं वित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों का पर्यावरण संबंधित ज्ञान के तुलनात्मक अध्ययन के पश्चात यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि दोनों वर्गों के पर्यावरणीय दृष्टिकोण में अंतर है। जबकि नीता वर्मा (2004) का शोध अध्ययन यह दर्शाता है कि प्राथमिक स्तर के वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित शिक्षकों के पर्यावरणीय अभिवृत्ति में भिन्नता पायी गयी है जो प्रस्तुत शोध को बल प्राप्त करती है। इसके पीछे प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित होना भी हो सकता है।
2. अध्ययन के फलस्वरूप यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि जबलपुर नगर के स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के कला एवं विज्ञान वर्ग के शिक्षकों का पर्यावरण संबंधित ज्ञान के दृष्टिकोण में कोई अंतर नहीं है। अर्थात् दोनों वर्ग समान दृष्टिकोण रखते हैं। कुमारी अलका गुप्ता (1999) का शोध यह दर्शाता है कि दोनों समूह की जागरूकता में अंतर दिखाई नहीं देता है। जिससे शोध सार्थक सिद्ध होता है। इसके पीछे यह कारण हो सकता है कि प्राथमिक स्तर के ही पर्यावरण शिक्षा पर बल दिया जा रहा है।

संदर्भ ग्रंथ :-

1. भारत, वी.डी., "इन्वारमेन्टल एजुकेशन इन इण्डिया", यूनिवर्सिटी न्यूज, वोल्यूम 38 नं. 06 (7 फरवरी 2000)।
2. गोयल, एम. के., "पर्यावरण शिक्षा", विनोद पुस्तक भवन, आगरा (2004)।
3. गुप्ता, एस. पी., "आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन", शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद (2007)।
4. कपिल, एच.के., "सांख्यिकी के मूल", विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा (1996)।
5. पाण्डेय, वी.एस., "पर्यावरण अध्ययन", किताब घर कानपुर (1995)।
6. प्रहलाद, बी. "इन्वारमेन्टल नालेज इन्वारमेन्टल इट्टीट्यूड एण्ड परसोसन रिगार्डिंग", इन्वारमेन्टल एजुकेशन एमांक प्री-सर्विस एण्ड सेकेण्डरी स्कूल टीचर्स-दि महाराजा शिवाजी राव यूनीवर्सिटी ऑफ बरौदा (1991)
7. प्रसाद, एस., "पर्यावरण एवं हम", प्रभात प्रकाश, नई दिल्ली (1989)।
8. सिंह, बी., "पर्यावरण शिक्षा", लायल बुक डिपो, मेरठ (1997)।
9. सिंह, दिनेश, "परिस्थितिकी एवं पर्यावरण", ज्ञान भारती पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स (2004)।
10. सक्सेना, ए.बी., "एन्वारमेन्टल एजुकेशन नेशनल", साइक्लोलाजी कार्पोरेशन, आगरा, (2003)

अध्यापक शिक्षा की समस्याएं एवं सुधार

डॉ. अम्बु नाथ मिश्रा *

आलेख सार

आज की भारतीय अध्यापक-शिक्षा में उत्कृष्टता, प्रवीणता और समानता के सिद्धान्तों की व्यवहार-भूमि में बड़ी निष्ठा के साथ प्रतिष्ठा की जानी चाहिए। यह अपेक्षा वस्तुतः नई-शिक्षा नीति 1986 के द्वारा उच्च शिक्षा जगत से की गयी है। 'सर्व शिक्षा अभियान' की अनिवार्यता और उसकी सकारता के निहितार्थ इन दिनों जैसे भी बड़ी संख्या में अध्यापकों की आवश्यकता आ पड़ी है। इस उद्देश्य की परिपूर्ति के आशय से विश्वविद्यालयों द्वारा एन.सी.टी.ई. की अनुमति से अप्रत्याशित संख्या में बी.एड. कालेजों की मान्यता दी गयी है। पर ऐसा करने से निश्चय ही गुणवत्ता सभी दृष्टियों से ह्रासोन्मुख ही नजर आ रही है। शिक्षण, प्रशिक्षण, शोध, विस्तार शिक्षा सबसे सम्बन्धित समस्याएं बढ़ गयी हैं। सुयोग्य अध्यापक प्रशिक्षक काफी खोज के बाद भी नहीं मिले रहे हैं। भौतिक संसाधन अनुपाततः निरन्तर घटते जा रहे हैं। प्रशिक्षण पाने एवं प्रशिक्षण देने दोनों के व्यय निरन्तर बढ़ते जा रहे हैं स्ववित्तपोषित पाठ्यक्रम / संस्थान तो बढ़ रहे हैं पर इनकी गुणवत्ता, इनका व्यवस्थित संचालन, इनकी वांछित उत्पादकता प्रतिफलहीन दशाओं को प्राप्त हो रहा है, जो सदैव चिन्तनीय है। अतएव सेवा नियोजन अवसरों को भी दृष्टि में रखते हुए अध्यापक-प्रशिक्षण पाठ्यक्रम को संचालक अनुमत किया जाना चाहिए। महिला-समानता हेतु भी अध्यापक-शिक्षा के स्वरूप को तैयार किया जाना अपेक्षित है।

सघन प्रशिक्षण कार्यक्रमों की आयोजना द्वारा श्रेष्ठतम, श्रेष्ठ हितैषिणी आत्मा वाला शिक्षक-समुदाय तैयार किया जाना सर्वथा अभीष्ट है। बदले, बदलते हुए समाज के लिए अपरिहार्य जीवन-मूल्यों को आत्मयसात करते हुए श्रेष्ठ उदात्त सभी माननीय मूल्यों से सम्बन्धित शिक्षक-प्रशिक्षक ही राष्ट्र और मावनता का वृहत्तर कल्याण साध सकेंगे। अतः अभिनव शैक्षिक प्रौद्योगिकी का सहायता लेते हुए, सुनियोजित, अध्यापक प्रशिक्षण-कार्यक्रमों द्वारा, निष्ठापूर्वक सभी उदीयमान आगत समस्याएँ समाधानित की जानी चाहिए। केन्द्र एवं राज्य सरकारों के साथ निजी क्षेत्र के अग्रणी समृद्ध जन / संस्थाएँ सभी इन पुनीत अनुष्ठान में भरसक हाथ बँटाये। आशा की जानी चाहिए हमारी प्रचलित अध्यापक-शिक्षा अवश्य ही क्रमशः वांछित सुधरे पथ पर गतिमान हो सकेगी।

उदीयमान ज्ञान में प्रेमी समाज की उच्च शिक्षा की बड़ी भूमिका होती है। राष्ट्रीय संपदा के समृद्ध करने में यह बड़ा योगदान करती है। आर्थिक समृद्धि और माननीय पूंजी के बीच सम्बन्ध की स्थापना में इसका कार्यकारी अवदान होता है। मानवीय पूंजी के विकास के ही अनुपात में राष्ट्रीय पूंजी और आय में वृद्धि होती है। इसलिए मानवीय ज्ञान और कुशलताओं के परिक्षेत्र में यदि धन और सुविधाओं का निवेश किया जायेगा तो निश्चित ही इनमें वृद्धि होगी। शैक्षिक अर्थशास्त्रियों के प्रयोगों के आधार पर निष्कर्ष निकले हैं। 21 वीं सदी के शुभागमन ने इस तथ्य को मुखरित कर दिया है। मात्र गुण संवाही सीखने की संस्थाएँ ही विश्व नेतृत्व की क्षमता से राष्ट्र युवाओं को संयुजित कर सकती है। इस गुणवत्ता की दशा को मूर्तित करने हेतु उच्च शिक्षा के संस्थाओं की आन्तरिक गतिकी (The Internal Dynamics) का अभिनवतापूर्वक समुन्नत करना होगा साथ साथ ही व्यवस्था में युगापेक्षी परिवर्तन लाना होगा।

*सूबेदार मेजर (धर्मगुरू), जम्मू एंड काश्मीर राइफल्स रेजीमेंट, जम्मू काश्मीर

शिक्षा के क्षेत्र में गुणात्मक परिवर्तन लाने के निमित्त शिक्षकों के पेशेवर विकास हेतु ठोस कार्यक्रम की आवश्यकता है। स्वतन्त्रता से पूर्व बने आयोगों व समितियों ने भारतीय अध्यापक शिक्षा की दयनीय दशा में सुधार लाने की आवश्यकता पर बल दिया है। स्वतन्त्रता के बाद बैठायें गये सभी आयोगों तथा राष्ट्रीय नीतियों ने अध्यापक शिक्षा को स्थिति को दुखद बताया और उसके सुधार हेतु काफी सुझाव दिये। विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग ने अध्यापक शिक्षा के संदर्भ में लिखा है कि 'आज के युग का आधारभूत सिद्धान्त यह है कि वास्तविक शिक्षा अधिकांश रूप में प्रकरण एवं पढ़ाये जाने वाली पाठ्यवस्तु एवं उसके स्मरण से सम्बन्धित न होकर स्वयं व्यतीत किये जाने वाले जीवन एवं उद्देश्यपूर्ण कार्यक्रम में भाग लेने का नाम है' इसके साथ ही उन्होंने प्रशिक्षण संस्थानों में दिये जाने वाले पाठन अभ्यास को असन्तोषजनक बताते हुए पर्याप्त सुधार लाए जाने के सुझाव दिये।

भारत में शिक्षा नीति को समयानुसार निरूपित किया गया है और यह शिक्षा समितियों एवं आयोगों की विभिन्न रिपोर्टों में निहित अनुसंशा पर आधारित है जिनमें से महत्वपूर्ण है- कोठरी आयोग (1966), चट्टोयाध्याय समिति (1985), राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.पी.ई. 1986, 1992), आचार्य राममूर्ति समिति (1990), यशपाल समिति (1993) एवं राष्ट्रीय पाठ्यचर्या ढांचा (एन.सी.एफ. 2005) निःशुल्क एवं बालशिक्षा अधिकार (आर.टी.ई.) अधिनियम, 2009, जो 01 अप्रैल से लागू हुआ का देश में शिक्षक शिक्षा के लिए महत्वपूर्ण निहितार्थ है।

कुल मिलाकर इस बीच अध्यापक शिक्षा का विस्तार तो आवश्यकता के अधिक हुआ है परन्तु इसके स्तर में कोई सुधार नहीं हुआ अपितु उसमें भारी गिरावट आई है।

अध्यापक शिक्षा की वर्तमान समस्याएँ-

नव्यज्ञान और अधिगम के बीच में त्वरित एवं क्रान्तिकारी विकास के कारण आज का अध्यापक शिक्षा जगत संक्रमण की परिस्थिति से गुजर रहा है। यहां नित्य नूतन चुनौतियों उभर कर सामने आ रही है। अनेकानेक सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक कारण इन्हें और भी बढ़ा रहे हैं। प्रत्येक स्तर पर अध्यापक शिक्षा का मूलभूत लक्ष्य यथापेक्षा पूरित नहीं हो पा रहा है।

इसी कारणवश अध्यापक शिक्षा न तो उत्तम अध्यापक एवं अध्यापिकाओं की तैयारी को सुनिश्चित कर पा रही है, और न ही उसमें उच्च स्तरीय गुणात्मकता को समावेशित कर पा रही है। अध्यापक, श्रेष्ठ, निर्देशकर्ता के रूप में उभर रही है इससे अध्यापक शिक्षा के संकल्पित निहितार्थ पूरे नहीं हो पा रहे हैं। फलस्वरूप आज की अध्यापक शिक्षा अनेकानेक समस्याओं से जूझ रही है।

प्रवेशपरक समस्याएँ-

वर्तमान प्रदेश, देश में अध्यापक-शिक्षा कार्यक्रमों के विभिन्न स्तरों पर प्रवेश एक बड़ी समस्या बना हुआ है। विश्वव्यापी 'सर्व शिक्षा अभियान' के तहत इन वर्षों में देश में प्राथमिक पूर्व माध्यमिक विद्यालय तेजी से खोले गये हैं और खोले जा रहे हैं। इसी कारण से बड़ी संख्या में अध्यापकों की आवश्यकता आ पड़ी है।

प्रशासनिक समस्याएँ-

अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में राज्य शासन एवं विश्वविद्यालयों का नियंत्रण कम है। प्रशिक्षण पाठ्यक्रम को आरम्भ करने की अनुमति इधर के वर्षों में राष्ट्रीय अध्यापक-शिक्षा परिषद देती है। इससे प्रशिक्षण पाठ्यक्रम और नए प्रशिक्षण संस्थान खोलना काफी कठिन हो गया है। परिणाम स्वरूप शिक्षा और प्रशिक्षण का स्तर इन वर्षों में गिरता जा रहा है। राज्य

शासन, विश्वविद्यालय और राष्ट्रीय-अध्यापक-शिक्षा परिषद ये सभी मिलकर वांछित प्रतिमानों और अन्तवृद्धि स्थिर तत्वों का अनुसरण नहीं कर पा रही हैं। प्रवेश शिक्षण, प्रशिक्षण, शोध तथा परीक्षण-इनके सारे प्रतिमान गिरते जा रहे हैं अतः निश्चय ही यह प्रशासनिक समस्या गम्भीरता से विचारणीय एवं समाधान योग्य है।

पाठ्यक्रम सम्बन्धी समस्याएँ :-

अध्यापक:- शिक्षा का प्राचलित पाठ्यक्रम माध्यमिक स्तर पर सर्वत्र प्रायः एक वर्ष का है। जिसमें अवकाश एवं प्रवेश समयावधि को छोड़कर 200 दिन का समय शेष बचता है जो प्राचलित पाठ्यक्रम के पूरा करने हेतु पर्याप्त नहीं है। इसी कारणवश राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद ने इस अवधि को 2 वर्षों की करने की सिफारिश की है। इंटर्नशिप को अनिवार्य बनाये जाने की दशा में यह और भी समाचीन प्रतीत होता है। किन्तु अधिकांश संस्थाओं ने इस व्यवहारिक करने में अपनी अक्षमता प्रकट की है। प्रायः देखा जाता है कि अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम में शिक्षण अभ्यास का महत्व नहीं दिया जाता है।

शिक्षण-अभ्यास से सम्बन्धित समस्याएँ :-

वर्तमान अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम का एक बहुत बड़ा उपेक्षित पक्ष है अधिकांश प्रशिक्षण संस्थानों में इन दिनों न तो यथेष्ट अध्यापकीय निरीक्षण पर्यवेक्षण की व्यवस्था दिखायी देती और न ही प्रशिक्षणार्थियों को इतना समय दिया जाता है कि वे पाठ्य विषय वस्तु को विधिवत् शिक्षण की पूरी तैयारी कर सकें। तथा पाठ का समुचित समन्वय कर सकें।

मूल्यांकन सम्बन्धी समस्याएँ :-

NAAC ने शिक्षा क्षेत्र में गुणवत्ता अनुरक्षण-संवर्धन के आशय से पाठ्यक्रम पक्षों पर विचार करते हुए सात परिमापी बिन्दु वांछनीय बनाये हैं:-

1. शिक्षण- अधिगम
2. मूल्यांकन
3. शोध
4. परामर्श एवं विस्तार
5. अवस्थापन एवं अधिगम संसाधन
6. छात्र अनुपोषण एवं प्रगति
7. संगठन एवं प्रबन्धन

अध्यापक शिक्षा के सन्दर्भ में भी यही सात आयामी परिमापी व्यवहार्य समाचीन प्रतीत होती है। किन्तु प्रशिक्षण अवधि की अल्पता एवं अव्यवस्था और व्यावसायिक मनोवृत्ति के प्रभाववश, ऐसा वस्तुतः हो नहीं पा रहा है।

अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमपरक नियोजनात्मक समस्याएँ :-

शिक्षा की राष्ट्रीय नीति- 1986 एवं संशोधित शिक्षा नीति-1992 ने अध्यापक शिक्षा को एक निरन्तर प्रक्रिया बताया है, साथ ही इसने इसके सेवापूर्व और सेवाकालीन दोनों घटकों की अपृथक् रेखांकित की है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने अन्य पक्षों पर विचार करते हुए अध्यापक- शिक्षा सन्दर्भ में निम्नलिखित बिंदु पर प्रकाश डाला गया है।

1. व्यावसायिक दायित्व बोध तथा अध्यापकों की सम्पूर्ण अभियोग्यताएँ शिक्षा जगत में महनीय है।
2. सेवापूर्व अध्यापक शिक्षा ने गतिशील अभिनव अध्यापन विज्ञान के क्षेत्र में कोई योगदान नहीं किया गया है, अपितु उसने हासमान प्रवृत्ति-तत्त्वों को दर्शाया है।
3. अध्यापक शिक्षा के कार्यक्रम मुख्यतः सेवापूर्व प्रशिक्षण से जुड़े हैं। उसकी वस्तुतः कोई सुनियोजित सेवापूर्व, प्रशिक्षण योजनायें नहीं हैं और जो वांछित संसाधनों सुविधाओं के अभाव में ग्रसित हैं।

कहना न होगा, 'अध्यापक शिक्षा परिषद' के प्रयासों के बाद भी उक्त कमियों और अभावों से देश की अध्यापक शिक्षा, न्यूनाधिक आज भी जकड़ी है, जो चिन्तनीय है।

पुनश्चर्या पाठ्यक्रम सम्बन्धी समस्याएँ :-

अध्यापक शिक्षा क्षेत्र में पुनश्चर्या पाठ्यक्रमों का विशेष महत्व है। 'शिक्षा शास्त्र' विषय में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा कतिपय विश्वविद्यालय में वर्ष में एक दो बार पुनश्चर्या पाठ्यक्रम चलाये जाते हैं। जिसमें विस्तारपोषित विभागों अथवा महाविद्यालयों से प्रध्यापक एवं शिक्षाकर्मी प्रतिभाग करते हैं। किन्तु क्लेश है कि अध्यापक - शिक्षा के क्षेत्र में ऐसी कोई यथेष्ट व्यवस्था अब तक नहीं है। आज हमारा अध्यापक - शिक्षा जगत पुनश्चर्या पाठ्यक्रम सम्बन्धी अभावों चुनौतियों से आक्रांत है जिस पर गम्भीर कार्यवाही नितान्त अपरिहार्य है।

विकास, शोध, मूल्य शिक्षा सम्बन्धी समस्याएँ:-

सस्ते विस्तार की प्रवृत्ति से आक्रान्त होने के कारण आज का सम्पूर्ण अध्यापक - शिक्षातन्त्र सही विकास पथ से दूर है। राष्ट्र एवं समाज अध्यापक समुदाय से विकास के नेतृत्व की बड़ी अपेक्षाएँ रखता है। किन्तु हमारी अध्यापक शिक्षा द्वारा प्रसूत ये प्राध्यापक और अध्यापक इस निष्कर्ष पर सही नहीं उतर पा रहे हैं। विस्तार सेवाओं के क्षेत्र में तो ये लगभग शून्य की दशा में है।

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद लगभग कई वर्षों से अध्यापक शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में नवाचारों और शोध को प्रोत्साहित करने का प्रयास कर रही है, किन्तु कष्ट है कि हमारे अध्यापक शिक्षा संस्थान इन आयामों के क्षेत्र में यथेष्ट प्रगति नहीं कर पा रहे हैं। वस्तुतः अध्यापक - शिक्षा के क्षेत्र में व्याप्त समस्या आज भी है।

वर्तमान में 'अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम' किसी भी स्तर पर माननीय जीवन आदर्शों तथा मूल्य एवं नैतिकता के मापदण्डों के बारे में व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान करने में न तो समक्ष दिखाई पड़ता है और न ही तत्पर है। हमारे अध्यापक शिक्षा समाज में राष्ट्रीय चेतना तो प्रायः प्रसुप्त दिखती है।

अध्यापक शिक्षा समस्या समाधान हेतु सुझाव :-

1. सबसे पहले हमें वर्तमान भारतीय परिस्थिति के अनुकूल अध्यापक शिक्षा के लक्ष्य को कुशलता, रूचि, मनोवृत्ति आदि व्यवहारगत उपलब्धियों के आधार पर निर्धारित करना होगा।
2. शिक्षक शिक्षा के विभिन्न प्रकार की संस्थाओं के मध्य भी अध्यापकों का आदान-प्रदान उनके मध्य पृथकता का अन्त करने हेतु आवश्यक है।
3. अध्यापक शिक्षा संस्थानों के लिए यह भी आवश्यक है कि वह अपने पुरातन छात्र परिषद् को अधिक सक्रिय बनाये

- उनसे अधिकाधिक सम्पर्क पत्राचार या अन्य माध्यमों से बढ़ाया जाए और शिक्षा की विभिन्न समस्याओं पर मिलजुलकर बातचीत करायी जाये।
4. अध्यापक शिक्षा संस्थाओं में राष्ट्रीय एवं स्थानीय आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर वर्तमान पाठ्यचर्या शिक्षण विधियों आदि का निर्धारण किया जाना चाहिए।
 5. सैद्धान्तिक पाठ्यक्रम के सुधार के साथ-साथ पाठन अभ्यास क्रम में भी आमूलचूल परिवर्तन लाया जाना आवश्यक है।
 6. प्रशिक्षित शिक्षकों को बेकार भटकने न दिया जाय और सरकार उन्हें शीघ्रातिशीघ्र प्रशिक्षित वेतनमान दिलाने की व्यवस्था सुनिश्चित करें।
 7. सरकार को चाहिए कि प्रशिक्षित शिक्षकों को समायोजित की व्यवस्था को सुनिश्चित करे।
 8. अध्यापक शिक्षा में शोध कार्यों का अभाव है केवल बड़ी डिग्रियों के लिए शैक्षिक अनुसंधान कार्य की अपेक्षा आज क्रियात्मक अनुसंधान पर सर्वाधिक बल दिया जाना चाहिए।
 9. शिक्षक - शिक्षा संस्थाओं की दशा सुधारने के लिए उनके अनावश्यक विस्तार पर विराम लगाना चाहिए। निम्न स्तर के संस्थानों पर पूर्णतः प्रतिबंध लगाना चाहिए। साथ ही साथ शिक्षकों की जबाबदेही निश्चित की जाय।
 10. अध्यापक शिक्षा संस्थाओं में होने वाले शोषण को रोकने हेतु सभी शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं पर केन्द्रीय / राज्य सरकारों का नियंत्रण हो जिन संस्थाओं में छात्राध्यापकों से अधिक शुल्क लिया जाता हो उन्हें तुरन्त बंद कर दिया जाये।

निष्कर्ष :-

अध्यापक शिक्षण पर विभिन्न आयोगों ने पर्याप्त विचार प्रस्तुत किए हैं। कुछ सुझाव तो उसमें ऐसे भी हैं जिन्हें शताब्दियों से दोहराया जा रहा है पर वे क्रियान्वित आज तक नहीं किए जा सके हैं। अध्यापक शिक्षा जैसे महत्वपूर्ण पक्ष की उपेक्षा हुई है जो नहीं होना चाहिए क्योंकि इसका सम्बन्ध मानव मूल्यों एवं अच्छे अध्यापक-अध्यापिकाओं के निर्माण से है। यह प्रसन्नता की बात है कि आयोगों के सुझाव के आधार पर जहाँ इसके (अध्यापक शिक्षा) असन्तुलित प्रसार की बात है वह इस बीच समाप्त कर दी गई है और सेवारत प्रशिक्षित शिक्षकों की सतत् शिक्षा की व्यवस्था भी की जा रही है। हाँ शिक्षक शिक्षा के स्तर में वांछित विकास नहीं किया जा सका है। इस बीच शिक्षक-शिक्षा के क्षेत्र में कई नई समस्याएँ भी सामने आ जाती हैं। जैसे-प्रायोगिक कार्यों को सम्पादित करने की समस्याएं अभ्यर्थियों के चयन की समरूप, शिक्षक-शिक्षा संस्थाओं की दशा सुधारने की समस्या और प्रशिक्षणार्थियों के मूल्यांकन की समस्या यदि देखा व समझाया जाये तो अब अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में विशेष आधिवेशन एवं संगोष्ठी की आवश्यकता नहीं है। सुझावों के कार्यान्वित किया जाना ही परम आवश्यक है। यदि शिक्षा से जुड़े सभी व्यक्ति ईमानदार और कर्तव्यनिष्ठ हो जाए तो कम साधनों से भी शिक्षा के उद्देश्यों को अधिक से अधिक प्राप्त किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रंथ :-

- 1- P.V Gupta Higher Education in India in The New Millenium Challenges and Remedies, Univeresity News: Vol 42 No. 50

- 2- Dr. G.C Bhattacharya: Teahcer educaton: Vinod Pustak Mandir Dr. Rangey Raghav Marg, Agra-2 2004-05 Page.13
- 3- Kaipana Kharade and Sybil Thomas: Knowledge management and teacher education in and for the new times, university news, vol. 42 No.26 page 16-17
- 4- Suneel Behari Mohanty: NCTE and quality in teacher education university news 35, (29) July 21 1997
- 5- Hari ram Jasta: Adhunik Bharat me Shashik Chintan: Hindi, Education
- 6- Shiv pal: Adhunik Bhartiya Samaj me Adhyap ka Mahatav 2013
- 7- Naresh Kumar: Adhyapak Shiksha: 2016
- 8- Jyotisana Saxena: Adhyapak Shiksha me Gudvatta:2011

विभिन्न प्रबंधन के विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि, जीवन संतुष्टि के मध्य परस्पर सम्बन्धों का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास आत्म प्रत्यय पर प्रभाव का अध्ययन

कुमारी कविता दवे*
डॉ. जी. एस. मिश्रा**

शोध सार

प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य विभिन्न प्रबंधन के विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं जीवन संतुष्टि के मध्य परस्पर सम्बन्धों का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास आत्म प्रत्यय पर प्रभाव का अध्ययन करना है। इस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु विवरणात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। कार्य संतुष्टि के मापन हेतु प्रमोद कुमार एवं डी. एन. मूथा की कार्य संतुष्टि मापनी एवं जीवन संतुष्टि के मापन हेतु ओ. जी. आलम एवं डॉ. रामजी श्रीवास्तव की जीवन संतुष्टि मापनी तथा व्यक्तित्व विकास-आत्म प्रत्यय के मापन हेतु डॉ. जी. पी. शैरी, डॉ. आर. पी. वर्मा एवं पी. के. गोस्वामी द्वारा निर्मित आत्म प्रत्यय मापनी का प्रयोग यादृच्छिक विधि से चयनित 600 शिक्षक एवं 800 विद्यार्थियों पर किया गया। परिणामों से ज्ञात होता है कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास-आत्म प्रत्यय पर शाला प्रबंधन की प्रकृति एवं कार्य संतुष्टि व जीवन संतुष्टि के मध्य परस्पर सम्बन्धों का प्रभाव पड़ता है।

शिक्षा मानव जीवन को सँवारने के मार्ग का प्रारंभिक बिन्दु है, जहाँ से वह अपनी विशिष्ट जीवन शैली और लक्ष्यों की ओर चलने तथा पहुँचने का ज्ञान प्राप्त करता है, जिसके कारण उसका और समाज का विकास होता है। शिक्षा के द्वारा मानव की अंतर्निहित योग्यताओं को विकसित करके समाज को संपन्न बनाया जा सकता है क्योंकि शिक्षा का लक्ष्य है ज्ञान के प्रति समर्पण की भावना और लगातार सीखने की प्रवृत्ति। करुणा, प्रेम और श्रेष्ठ परम्पराओं का विकास भी शिक्षा के उद्देश्य हैं। यह तभी संभव है, जब विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का विकास एक अच्छे अकादमिक वातावरण में योग्य एवं दक्ष शिक्षकों द्वारा हो। जब तक शिक्षक शिक्षा के प्रति समर्पित नहीं होगा, तब तक अच्छी शिक्षा की कल्पना नहीं की जा सकती है।

सामान्य रूप से विद्यालयों को शासकीय एवं अशासकीय प्रबंधन के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। इन दोनों प्रकार के विद्यालयों में प्रशासकीय दृष्टिकोण से निश्चित रूप से अंतर है, परंतु दोनों प्रकार के विद्यालयों का प्रमुख उद्देश्य उच्च गुणवत्तापूर्ण विद्यार्थियों का निर्माण एवं विकास करना है। सामान्यतः शिक्षण का आधार शिक्षक हैं। शिक्षक कतिपय कौशलों, तकनीक तथा प्रविधि के द्वारा सरलता से बालक में वांछित व्यवहार परिवर्तन करने का प्रयास करता है। विद्यालय में शिक्षक सबसे प्रमुख व्यक्ति है, जो बालक के व्यक्तित्व के निर्माण में सहायता प्रदान करता है। बालकों के अंदर अध्यापक उनकी मुख्य आवश्यकता तथा रूचि के अनुसार ही परिवर्तन लाने की सोचता है, जिससे प्रत्येक बालक एक निश्चित तथा उचित ढंग से कार्य कर सके और अपने अंदर उचित परिवर्तन कर सके।

अतः कहा जा सकता है कि शिक्षक का स्वयं का व्यक्तित्व बालक के व्यवहार पर बहुत अधिक प्रभाव डालता है। यदि शिक्षक अपने कार्य व जीवन से संतुष्ट रहे उन्हें तनाव न हो तो विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का विकास के साथ ही उसके

*वरिष्ठ अध्यापक, शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, पौड़ीकला, जबलपुर (म.प्र.)

**सेवानिवृत्त प्राचार्य, शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)

कार्य मूल्यों के फलस्वरूप विद्यालयीन वातावरण भी उत्कृष्ट बनता है। होता सुजाता (1980), राइस डब्यू राबर्ट, नियन पी जेनिट, हंट जी रेमंड (1980) ने कार्य संतुष्टि एवं जीवन संतुष्टि में धनात्मक सह संबंध बताया। डेमीरेल हुसैन (2013), आदिनतन बेलगिन एवं के सी ओ हेकन (2016) ने शिक्षकों की कार्य संतुष्टि व जीवन संतुष्टि उच्च सहसंबंध को पाया। प्रकाश एस एवं जेवियर एस अमालदास (2014) ने बताया शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में सार्थक अंतर हैं। फारलैंड एमसी लूरा, मरे ऐलिजाबेथ, फिलिफसन साइवेनेस (2016) ने बताया कि छात्राओं का आत्म प्रत्यय, छात्रों की तुलना में शिक्षकों से अधिक प्रभावित होता है।

वर्तमान में शिक्षा की स्थिति में यह अत्यंत महत्वपूर्ण कि यह ज्ञात किया जाये कि शिक्षक / शिक्षिकाएँ अपने कार्य से संतुष्ट हैं या नहीं? क्योंकि संतुष्ट होने पर ही वे अपनी पूर्ण दक्षता, उत्साह, उमंग के साथ अपने दायित्व का निर्वाहन करेंगे। अतः शोधकर्ता ने यह जानने का प्रयास किया है कि शिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं जीवन संतुष्टि का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास-आत्म प्रत्यय पर क्या प्रभाव पड़ता है।

उद्देश्य-

- विभिन्न प्रबंधन के विद्यालयों के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि एवं जीवन संतुष्टि के मध्य परस्पर सम्बन्धों का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास-आत्म प्रत्यय पर प्रभाव का अध्ययन।

परिकल्पना-

- शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि एवं जीवन संतुष्टि के मध्य परस्पर सम्बन्धों का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास-आत्म प्रत्यय पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

चर -

- स्वतंत्र चर - (i) कार्य संतुष्टि
(ii) जीवन संतुष्टि
(iii) प्रबन्धन

परतंत्र चर - (i) व्यक्तित्व विकास-आत्म प्रत्यय

नियंत्रित चर - (i) कम से कम पांच वर्ष का शैक्षणिक अनुभव

विधि -

न्यादर्श में चयनित शिक्षकों और शिक्षिकाओं को कार्य संतुष्टि एवं जीवन संतुष्टि मापनी प्रशासित की तत्पश्चात् उनका फलांकन करके उच्च एवं निम्न श्रेणी में वर्गीकरण किया। वर्गीकृत शिक्षकों के चयनित विद्यार्थियों पर आत्म प्रत्यय के परीक्षण प्रशासित किया। तत्पश्चात् फलांकन करके सांख्यिकी का उपयोग करके परिणामों की विश्लेषण एवं व्याख्या करके निष्कर्ष प्राप्त किए।

न्यादर्श-

शोध कार्य में जबलपुर जिले के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के 600 शिक्षक-शिक्षिकाएँ एवं 800 विद्यार्थियों का यादृच्छिक विधि द्वारा चयन किया गया।

उपकरण-

- (i) कार्य संतुष्टि मापनी - प्रमोद कुमार एवं डी. एन. मूथा
- (ii) जीवन संतुष्टि मापनी - ओ. जी. आलम एवं रामजी श्रीवास्तव
- (iii) आत्म प्रत्यय मापनी - डॉ. जी. पी. शैरी, डॉ. आर. पी. वर्मा, एवं डॉ. पी. के. गोस्वामी

परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या-

इन्हें निम्न तालिकाओं में प्रस्तुत किया गया है-

तालिका क्रमांक - 1

शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं जीवन संतुष्टि के मध्य परस्पर संबंधों का व्यक्तित्व विकास आत्म-प्रत्यय पर प्रभाव संबंधी अध्ययन

विद्यालय का प्रकार	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन
शासकीय	उच्च कार्य संतुष्टि / उच्च जीवन संतुष्टि	40	31.40	5.23
	उच्च कार्य संतुष्टि / निम्न जीवन संतुष्टि	40	35.58	6.80
	निम्न कार्य संतुष्टि / उच्च जीवन संतुष्टि	40	32.70	6.72
	निम्न कार्य संतुष्टि / निम्न जीवन संतुष्टि	40	28.48	6.50
अशासकीय	उच्च कार्य संतुष्टि / उच्च जीवन संतुष्टि	40	32.55	6.79
	उच्च कार्य संतुष्टि / निम्न जीवन संतुष्टि	40	32.05	6.53
	निम्न कार्य संतुष्टि / उच्च जीवन संतुष्टि	40	32.73	5.09
	निम्न कार्य संतुष्टि / निम्न जीवन संतुष्टि	40	28.03	3.32

प्रसरण विश्लेषण सारांश तालिका

प्रसरण के स्रोत	स्वतंत्रता के अंश	वर्गों का योग	मध्यमान वर्ग	'एफ' अनुपात	'पी' मान
समूहों के मध्य	7	1676.25	239.46	6.68	< 0.01
समूहों के बीच	312	11190.50	35.87		

स्वतंत्रता के अंश - 7, 312

0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान - 2.03

0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान - 2.69

तालिका क्र. 1 में शासकीय व अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं जीवन संतुष्टि के मध्य परस्पर सम्बन्धों का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास-आत्म प्रत्यय सम्बन्धी परिणामों से स्पष्ट है कि विभिन्न समूह के मध्य सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अंतर है। प्राप्त "एफ" अनुपात का मान 6.68 है जो 0.01 स्तर पर सार्थक है। शासकीय

विद्यालय के उच्च कार्य संतुष्टि एवं निम्न जीवन संतुष्टि वाले समूह का व्यक्तित्व विकास-आत्म प्रत्यय का प्रत्यक्षीकरण सर्वाधिक अच्छा है। इसके विपरीत अशासकीय विद्यालय के निम्न कार्य संतुष्टि एवं निम्न जीवन संतुष्टि वाले समूह का व्यक्तित्व विकास-आत्म प्रत्यय का प्रत्यक्षीकरण सबसे कम अच्छा है।

उपरोक्त परिणामों के परिपेक्ष्य में निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास-आत्म प्रत्यय पर शाला प्रबंधन की प्रकृति एवं कार्य संतुष्टि व जीवन संतुष्टि के मध्य परस्पर सम्बन्धों का प्रभाव पड़ता है।

तालिका क्रमांक - 2

शासकीय व अशासकीय विद्यालय के शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि व जीवन संतुष्टि के मध्य परस्पर संबंधों व्यक्तित्व विकास-आत्मप्रत्यय पर प्रभाव संबंधी अध्ययन

विद्यालय का प्रकार	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन
शासकीय	उच्च कार्य संतुष्टि / उच्च जीवन संतुष्टि	40	31.68	520
	उच्च कार्य संतुष्टि / निम्न जीवन संतुष्टि	40	36.58	6.75
	निम्न कार्य संतुष्टि / उच्च जीवन संतुष्टि	40	34.70	6.74
	निम्न कार्य संतुष्टि / निम्न जीवन संतुष्टि	40	29.48	6.75
अशासकीय	उच्च कार्य संतुष्टि / उच्च जीवन संतुष्टि	40	34.15	5.15
	उच्च कार्य संतुष्टि / निम्न जीवन संतुष्टि	40	33.95	4.74
	निम्न कार्य संतुष्टि / उच्च जीवन संतुष्टि	40	36.23	6.03
	निम्न कार्य संतुष्टि / निम्न जीवन संतुष्टि	40	30.48	4.42

प्रसरण विश्लेषण सारांश तालिका

प्रसरण के स्रोत	स्वतंत्रता के अंश	वर्गों का योग	मध्यमान वर्ग	'एफ' अनुपात	'पी' मान
समूहों के मध्य	7	1944.79	277.83	8.35	< 0.01
समूहों के बीच	312	10377.70	33.26		

स्वतंत्रता के अंश - 7, 312

0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान - 2.03

0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान - 2.69

तालिका क्र. 2 में शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों की शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि एवं जीवन संतुष्टि के मध्य परस्पर सम्बन्धों का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास आत्म-प्रत्यय पर प्रभाव सम्बन्धी सारणी से स्पष्ट है कि विभिन्न समूह के मध्य सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अंतर है। प्राप्त "एफ" अनुपात का मान 8.35 है जो 0.01 स्तर पर सार्थक है। शासकीय विद्यालय की शिक्षिकाओं के उच्च कार्य संतुष्टि एवं निम्न जीवन संतुष्टि वाले समूह का प्रत्यक्षीकरण सबसे अच्छा है जबकि शासकीय विद्यालय के ही निम्न कार्य संतुष्टि एवं निम्न जीवन संतुष्टि वाले समूह का प्रत्यक्षीकरण सबसे

कम है।

परिणामों से स्पष्ट है कि शासकीय विद्यालय के उच्च कार्य संतुष्टि और निम्न जीवन संतुष्टि वाले शिक्षक शिक्षिकाओं का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास-आत्म प्रत्यय पर सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है। संभवतः जब शिक्षक अपने कार्य से संतुष्ट होते हैं तब उन्हें अपने जीवन यापन में आर्थिक स्थिति की चिंता नहीं होती है, उनका भविष्य सुरक्षित रहता है, ऐसी स्थिति में वे विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में अधिक से अधिक सकारात्मक भूमिका का निर्वाहन करते हैं जबकि अशासकीय विद्यालयों में शिक्षकों को उतनी कार्य संतुष्टि नहीं होती है कार्य दबाव अधिक, वेतन व अन्य सुविधाएँ कम होती है, उनका भविष्य सुरक्षित नहीं होता है वे अपनी ही समस्याओं में व्यस्त रहते हैं जिसके कारण वे विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के कारक - आत्म प्रत्यय के लिए अधिक सकारात्मक भूमिका का निर्वहन नहीं कर पाते हैं। एस.सी. फारलैंड लूरा, मरे एलिजाबेथ, फिलिफसन सिवेनेस (2016) ने बताया कि छात्र-शिक्षक संबंध का विद्यार्थियों के आत्म प्रत्यय पर विशेष प्रभाव पड़ता है। डेमीरेल, हुसैने (2013) ने बताया कि शिक्षकों की उच्च कार्य संतुष्टि शिक्षक की कार्य प्रणाली और जीवन संतुष्टि दोनों को प्रभावित करती है। आदिनतन वेलगिन के.ओ.सी. हाकेन (2016) में बताया कि शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का उनकी जीवन संतुष्टि पर प्रभाव पड़ता है। अतः स्पष्ट है कि जब शिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं जीवन संतुष्टि उच्च होगी, तब ही वे निष्ठापूर्वक विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास-आत्म प्रत्यय के विकास में सकारात्मक भूमिका का निर्वहन कर पाएंगे।

उपरोक्त परिणामों के परिपेक्ष्य में निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास-आत्म प्रत्यय पर शाला प्रबंधन की प्रकृति एवं कार्य संतुष्टि व जीवन संतुष्टि के मध्य परस्पर सम्बन्धों का प्रभाव पड़ता है।

निष्कर्ष -

- शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि एवं जीवन संतुष्टि के मध्य परस्पर सम्बन्धों का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास-आत्म प्रत्यय पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

सन्दर्भ ग्रंथ -

- अस्थाना मधु, वर्मा किरनवाला (2012) व्यक्तित्व मनोविज्ञान, दिल्ली मोतीलाल बनारसीदास, तृतीय संस्करण, पृ. 104-109
- कपिल डॉ. एच. के. एवं सिंह ममता (2012) सांख्यिकी के मूल तत्व, आगरा, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, तृतीय संस्करण, पृ. संख्या 93-95, 162-175, 419-455
- सिंह, अरूण कुमार (2012) मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास, दसवाँ संस्करण, पृ. 438-440
- शर्मा, एस.एन. एवं शर्मा अंजना (2007) आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान के आधार, आगरा: एच.पी. भार्गव बुक हाऊस, सप्तम संस्करण, पृ. 431-467
- Aydintan Belgin, KOC Hakan (2016) "The Relationship between Job Satisfaction and Life Satisfaction : An Empirical study on Teachers' International Journal of Business and Social Science, Vol. 7, No.10
- Demirel, Husne (2013) "An Investigation of the Relationship between Job and Life Satisfaction

among Teachers.' Elsevier ltd open access under CC By-NC-ND license

- Farland, Mc Laura, Murray Elizabeth, Sivanes Phillipson (2016) "Student- Teacher relationship and student Self-Concept : Relationship with Teacher and Student Gender', Australian Journal of Education, Vol 60 (1) 5-25
- Hota, Suiata (1990) "Working Women's perceptions of their self and environment in relation to Job and Life Satisfaction' Fifth survey of Research in Education NCERT, Vol. II page No. 1704
- Prakash, S., Xavier S.J. Amaladoss (2014) "Role of Teacher Education Institutions in developing personality of student teacher. I-manager's Journal of Educational Psychology, Vol. 8 No.1
- Rice W Bobert, Near P. Janet, Hunt G. Raymond (1980) "The job satisfaction/life satisfaction Relationship : A Review of Empirical Research', Basic and Applied Social Psychology 1 (1) 37-64

हाई स्कूल के शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता का अध्ययन

श्री ए.एन. माथुर*
प्रमोद कुमार नामदेव**

शोध सार

प्रस्तुत शोध कार्य का उद्देश्य शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता का अध्ययन करना है। इस हेतु न्यादर्श स्वरूप डिण्डौरी जिले के शहपुरा ब्लॉक के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के कला एवं विज्ञान संकाय के 100 हाई स्कूल शिक्षकों का चयन किया गया। शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता ज्ञात करने हेतु शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता मापनी का प्रशासन शिक्षकों पर किया गया। शोध कार्य में निष्कर्ष स्वरूप पाया कि हाई स्कूल के कला एवं विज्ञान संकाय के शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया इसी प्रकार शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अतः कहा जा सकता है कि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र तथा कला एवं विज्ञान संकाय का शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

जीवन के रास्ते का मार्गदर्शन करने हेतु ईश्वर ने अपने प्रतिनिधि के रूप में शिक्षक (गुरु) का निर्माण किया है। सर्वविदित है कि श्रेष्ठ शिक्षक की सहायता, विश्वास व उसके विद्वतापूर्ण एवं उचित-निर्देशन के अभाव में शिक्षार्थी किंकर्तव्यविमूढ़ की स्थिति में रहता है तथा अपने जीवन के मूल्यों, लक्ष्यों तथा उद्देश्यों को प्राप्त करने में असहाय महसूस करता है। पुरातन काल से ही भारतीय समाज में शिक्षक को सर्वोच्च व श्रेष्ठतम स्थान दिया गया है। उसे राष्ट्र के भविष्य का निर्माता कहा गया है क्योंकि शिक्षक जिन बच्चों को आज शिक्षा देते हैं वे बच्चे ही भविष्य में राष्ट्र के अच्छे नागरिक बनते हैं। इस प्रकार शिक्षक के ऊपर ही यह निर्भर करता है कि वह किस प्रकार के नागरिक तैयार करता है।

डॉ. राधाकृष्णन कहते हैं कि 'समाज में अध्यापक का स्थान बड़ा महत्वपूर्ण है। वह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को सामाजिक परंपराएँ तथा तकनीकी कौशल पहुँचाने का केन्द्र है और ज्ञान के प्रकाश को प्रज्वलित रखने में सहायक होता है।' शिक्षक सभी शैक्षिक कार्यक्रमों की आधारशिला या धुरी है, जिनमें पाठ्यक्रम, पाठ्यवस्तु, पाठ्यपुस्तकें, मूल्यांकन, शिक्षण विधियाँ तथा शिक्षण उद्देश्य आदि आते हैं। इस प्रकार अध्यापक, शिक्षा पद्धति का केन्द्र बिंदु है। किसी भी राष्ट्र की उन्नति उस राष्ट्र की शिक्षा पद्धति तथा शिक्षक पर निर्भर करती है। इस संदर्भ में कहा गया है कि शिक्षक का कर्तव्य विद्यार्थियों के चरित्र का निर्माण करना है। इसके लिए अध्यापक में ही सद्गुण नहीं होंगे तो वह बच्चों में कैसे अच्छे गुणों का विकास कर सकेगा। अतः अध्यापकों में ऐसे गुण व क्षमताओं का विकास करने के लिए उन्हें निरंतर अध्ययनरत रहना चाहिए। अध्यापक के महत्व पर प्रकाश डालते हुए श्री सैदन कहते हैं- यदि शिक्षक जलता हुआ दीप नहीं है, तो वह दूसरों में ज्ञान के प्रकाश को प्रसारित करने में सदैव असमर्थ रहेगा। रवीन्द्रनाथ ठाकुर के शब्दों में- 'एक अध्यापक वास्तविक अर्थों में नहीं सिखा सकता, जब तक कि वह स्वयं भी सीख न रहा हो चूंकि एक दीपक को प्रज्वलित नहीं कर सकता तब तक उसकी अपनी ज्योति जलती न रहे।' भारतीय समाज में शैक्षणिक सुधार की आवश्यकता का एक लंबे समय से लगातार

*वरिष्ठ व्याख्याता, प्रगत शैक्षिक अध्ययन संस्थान (आईएएसई), जबलपुर (म.प्र.)

**एम.एड., शोधार्थी, प्रगत शैक्षिक अध्ययन संस्थान (आईएएसई), जबलपुर (म.प्र.)

अनुभव किया जा रहा है। स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि “हमें ऐसे शिक्षक चाहिए जो चरित्रवान, मानसिक रूप से उत्तम, बुद्धिमान, मूल्यवान नागरिक हो जिससे प्रत्येक छात्र अपने पैरों पर खड़ा हो सके।”

हाईस्कूल के शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता का अध्ययन के द्वारा शोधकर्ता आवश्यक कारणों को जान कर यह प्रयास करेगा कि किन-किन क्षेत्रों में आवश्यक सुधार किये जाये जिससे शिक्षकों के अध्यापन, शैक्षिक स्तर एवं जीवन मूल्यों में सुधार आ सके। वे अपने अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्ध एवं समर्पित हो सकें। इस शोध से केवल हाईस्कूल के शिक्षकों का ही नहीं बल्कि पूरे अध्यापक वर्ग का विकास होगा जिससे शिक्षकों की अध्यापन अभिवृत्तियों में सुधार आएगा और फलस्वरूप शिक्षार्थी भी देश के अच्छे मूल्यवान आदर्श नागरिक बनेंगे, जिससे देश का भविष्य उज्ज्वल होगा। शोधकार्य से प्राप्त परिणामों के आधार पर शिक्षा को और अधिक प्रभावी बनाया जा सकेगा और उम्मीद है कि एक साथ प्रयास के रूप में सामने आयेंगे तथा शिक्षा को एक नया आयाम मिल सकेगा।

ब्रजेश, कुमार गौतम (2014) ने प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की अध्ययन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता का अध्ययन किया एवं पाया कि कला वर्ग के शिक्षकों की विज्ञान वर्ग के शिक्षकों से, पुरुष शिक्षकों की महिला शिक्षकों से, ग्रामीण शिक्षकों की शहरी शिक्षकों से तथा विवाहित शिक्षकों की अविवाहित शिक्षकों से, शासकीय शिक्षकों की अशासकीय शिक्षकों से अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता अधिक धनात्मक पाई गई। नीना, स्वाने (2015) ने शहरी व ग्रामीण प्राथमिक शालाओं के 115 शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता का अध्ययन किया एवं अध्ययन से यह ज्ञात हुआ है ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के शिक्षकों का उनके अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

इससे यह स्पष्ट होता है कि शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय / अध्ययन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता शिक्षकों के रहवास की प्रकृति एवं शिक्षक या शिक्षिका होने पर भी निर्भर करती है। अतः यह महत्वपूर्ण हो जाता है कि विभिन्न विषयों के शिक्षकों एवं उनके रहवास की प्रकृति, उनके लिंग एवं जाति का उनके स्वयं के व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता पर प्रभाव का अध्ययन किया जा सके। निष्कर्ष शिक्षा की गुणवत्ता विकसित करने में योगदान दे सकेंगे।

शोध के उद्देश्य -

1. हाईस्कूल के कला एवं विज्ञान के शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता का अध्ययन करना।
2. हाईस्कूल के महिला एवं पुरुष वर्ग के शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता का अध्ययन करना।
3. हाईस्कूल के ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता का अध्ययन करना।
4. हाईस्कूल के आरक्षित एवं अनारक्षित वर्ग के शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ-

1. हाईस्कूल के कला एवं विज्ञान के शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. हाईस्कूल के महिला एवं पुरुष शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. हाईस्कूल के ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
4. हाईस्कूल के आरक्षित एवं अनारक्षित वर्ग के शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

न्यादर्श -

चयनित न्यादर्श निम्नानुसार है-

विशेषताएँ	वर्ग / समूह	आवृत्ति
विषय	कला	64
	विज्ञान	36
लिंग	पुरुष	54
	महिला	46
क्षेत्र	ग्रामीण	66
	शहरी	34
जातिवर्ग	आरक्षित	66
	अनारक्षित	34

शोध उपकरण - प्रस्तुत शोध कार्य में उपकरण के रूप में डॉ. रविन्दर कौर, डॉ. सबरजीत रानू एवं सर्वजीत कौर द्वारा निर्मित शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता मापनी का प्रयोग किया गया है।

शोध विधि - प्रस्तुत शोध कार्य हेतु सर्वेक्षण अनुसंधान विधि का प्रयोग किया गया है।

परिणामों का विश्लेषण -

तालिका क्रमांक 01

हाई स्कूल के कला एवं विज्ञान संकाय के शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता संबंधी तुलनात्मक परिणाम

संकाय	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता
कला	36	141.64	12.13	0.37	0.05 स्तर पर
विज्ञान	64	142.58	12.01		सार्थक नहीं

स्वतंत्रता के अंश . 98

0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान . 1.98

0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान . 2.62

तालिका क्रमांक 01 के अनुसार हाई स्कूल के कला एवं विज्ञान संकाय के शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता में सार्थक अंतर नहीं है। अर्थात् कला एवं विज्ञान संकाय का शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

तालिका क्रमांक 02

हाई स्कूल के पुरुष एवं महिला शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता संबंधी तुलनात्मक परिणाम

लिंग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता
पुरुष	54	142.96	12.63	0.65	0.05 स्तर पर
महिला	46	141.39	11.29		सार्थक नहीं

स्वतंत्रता के अंश - 98

0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान - 1.98

0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान - 2.62

तालिका क्रमांक 02 के अनुसार हाई स्कूल के पुरुष एवं महिला शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता में सार्थक अंतर नहीं है। अर्थात् महिला एवं पुरुष शिक्षकों का अध्ययन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

तालिका क्रमांक 03

हाई स्कूल के ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता संबंधी तुलनात्मक परिणाम

क्षेत्र	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता
ग्रामीण	66	142.39	11.73	0.85	0.05 स्तर पर
शहरी	34	141.94	12.67		सार्थक नहीं

स्वतंत्रता के अंश - 98

0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान - 1.98

0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान - 2.62

तालिका क्रमांक 03 के अनुसार हाई स्कूल के ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता में सार्थक अंतर नहीं है अर्थात् ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों का अध्ययन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

तालिका क्रमांक 04

हाई स्कूल के आरक्षित एवं अनारक्षित वर्ग के शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता संबंधी तुलनात्मक परिणाम

जाति वर्ग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	'टी' मान	सार्थकता
आरक्षित	66	143.91	13.36	2.28	0.05 स्तर पर
अनारक्षित	34	139.00	8.03		सार्थक है

स्वतंत्रता के अंश - 98

0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान - 1.98

0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान - 2.62

तालिका क्रमांक 04 के अनुसार हाई स्कूल के आरक्षित एवं अनारक्षित शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता के मध्यमान क्रमशः 143.91 एवं 139.00 प्राप्त हुए हैं। मध्यमानों की दृष्टि से आरक्षित जाति वर्ग के शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता अनारक्षित जाति वर्ग के शिक्षकों से अधिक पाई गई है।

स्वतंत्रता के अंश 98 पर टी का मान 2.28 प्राप्त हुआ जो कि 0.05 सार्थकता स्तर के टी मान (1.98) से अधिक है। अतः हाई स्कूल के आरक्षित जाति वर्ग एवं अनारक्षित जाति वर्ग के शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता में सार्थक अंतर है। शोधकर्ता का ऐसा मत है कि अनारक्षित (सामान्य) वर्ग के शिक्षक वातावरण एवं अनुवांशिकता के प्रभाव के कारण अपने अध्यापन व्यवसाय के प्रति अधिक वचनबद्ध हैं।

उपरोक्त समस्त तालिकाओं में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट है कि हाई स्कूल के कला एवं विज्ञान संकाय के शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता में सार्थक अंतर नहीं है। अर्थात् कला एवं विज्ञान संकाय का शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। इसका कारण संभवतः यह हो सकता है कि विज्ञान वर्ग के शिक्षकों का मानसिक स्तर अनुसंधान करने के लिए या उच्च शिक्षक हेतु ज्यादा उपयुक्त है जबकि कला वर्ग के शिक्षक सामाजिकता नैतिकता के साथ बच्चों के विकास में ज्यादा सहायक सिद्ध होते हैं। हाई स्कूल के पुरुष एवं महिला शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता में सार्थक अंतर नहीं है अर्थात् महिला एवं पुरुष शिक्षकों का अध्ययन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। इसका एक प्रमुख कारण यह हो सकता है कि पुरुष शिक्षक ज्यादा सक्रिय होते हैं एवं शिक्षण को प्रभावशीलता प्रदान करते हैं जबकि महिला शिक्षक अन्य कार्यों को प्राथमिकता देती है। हाई स्कूल के ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता में सार्थक अंतर नहीं है। शोधकर्ता का मत है कि अधिकतर हाईस्कूल ग्रामीण परिवेश में हैं तथा ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षक अपने विद्यार्थियों की मूलभूत समस्याओं से परिचित हैं अतः शहरी शिक्षकों से अध्यापन व्यवसाय के प्रति अधिक वचनबद्धता प्रदर्शित करते हैं। हाई स्कूल के आरक्षित जाति वर्ग एवं अनारक्षित जाति वर्ग के शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता में सार्थक अंतर पाया गया है इसका कारण यह हो सकता है कि सामान्य वर्ग के शिक्षक शिक्षा के प्रति आरक्षित वर्ग के शिक्षक से ज्यादा जागरूकता रखते हैं अतः उनकी अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता, आरक्षित वर्ग के शिक्षकों से ज्यादा पाई जाती है।

निष्कर्ष -

1. हाईस्कूल कला एवं विज्ञान वर्ग के शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. हाईस्कूल के पुरुष शिक्षकों के एवं महिला शिक्षकों की दूरवर्ती शिक्षा अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता में सार्थक अंतर नहीं है।
3. हाई स्कूल के शहरी शिक्षकों के एवं ग्रामीण शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता में सार्थक अंतर नहीं है।
4. सामान्य वर्ग के शिक्षकों की आरक्षित वर्ग के शिक्षकों से अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता में अधिक धनात्मक अभिवृत्ति पाई गई है एवं हाई स्कूल के सामान्य वर्ग के शिक्षकों एवं आरक्षित वर्ग के शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता में सार्थक अंतर है।

संदर्भ ग्रंथ -

- भटनागर, सुरेश (2003). शिक्षा मनोविज्ञान, मेरठ: इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस।
- कपिल, एच.के. (2008). सांख्यिकी के मूल तत्व, आगरा: अग्रवाल पब्लिकेशन, अष्टम् संस्करण।
- माथुर, एस. एस. (1979). शिक्षा मनोविज्ञान, आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर, 16वाँ संस्करण।
- पाठक, पी. डी. (2006). शिक्षा मनोविज्ञान, आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर।
- राय, पारसनाथ (2010). अनुसंधान परिचय, आगरा: लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, अनुपम प्लाजा।
- सरिन, शशिकला एवं अंजनी (2012). शैक्षिक अनुसंधान विधियाँ, आगरा: अग्रवाल पब्लिकेशन्स, सप्तम् संस्करण।
- एन.सी.ई.आर.टी. प्राथमिक शिक्षक, शैक्षिक संवाद की पत्रिका, अप्रैल 2014।

उच्च माध्यमिक स्तर के हिन्दी पाठ्यवस्तु में समाहित मानवीय मूल्यों के प्रति शिक्षकों की जागरूकता का विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि पर प्रभाव का अध्ययन

श्रीमती सुषमा पिल्ले*
डॉ. पी.एल. मिश्रा**

शोध सार

समाजीकरण की प्रक्रिया समाज की गत्यात्मक निरन्तर परिवर्तनशीलता में जीवनमूल्यों का जन्म, अर्जन, रोपड़, संरक्षण व विकास को पीढ़ी दर पीढ़ी स्थानान्तरित करती है जो युग बीत चुका होता है उस युग के सामाजिक मूल्य व मान्यताएं नये युग में पुराने साबित हो जाते हैं और नये युग का श्री गणेश एक बार पुनः व्यक्ति व समाज की मूल्य व मान्यताओं में अभूतपूर्व परिवर्तन कर नये सामाजिक मूल्यों को पुनः स्थापित करते हैं। सामाजिक बुद्धि व्यक्ति की व्यक्तिगत व सामाजिक जागरूकता का संयुक्त मापन होती है जो सामान्य रूप से व्यक्ति का अपने समूहों में किसी विशेष सामाजिक परिस्थितियों में उसके प्रभावपूर्ण ढंग से व्यवहार करने की उसकी क्षमता होती है। जो उसके अपने साथी समूह या वरिष्ठों के साथ व्यवहारिक समायोजन व सामंजस्य बनाने की क्षमता के साथ ही उसकी व्यवहारिक कुशलता के रूप में प्रदर्शित होती है। किसी व्यक्ति विशेष के द्वारा, सामाजिक दुनिया के बारे में संग्रहित ज्ञान ही सामाजिक बुद्धि है। **केन्टोर एवं किहीस्ट्रोम (1987)** सामाजिक बुद्धि युक्त व्यक्ति विपरीत परिस्थितियों में अधिक आत्मविश्वासी हो संतुलित व्यवहार करते हैं सामाजिक परिस्थितियों से समायोजन करने के लिए यही लब्धि व्यक्ति को प्रेरित करती हैं जिससे व्यक्ति दूसरों की भावनाओं व मंतव्यों को बेहतर तरीके से समझता है और प्रभावी अंतःक्रियाओं के माध्यम से अलग तरह की अभिवृत्ति, रूचि, आशायेँ, इच्छायें, उम्मीदें रखता है। जिससे उसकी सारी शक्ति सकारात्मक कार्य में लगती है और वह अपनी क्षमताओं का अधिकतम उपयोग कर सामाजिक अराजकता को विराम प्रदान करता है। प्रस्तुत शोध कार्य का उद्देश्य शासकीय उच्च माध्यमिक स्तर की हिन्दी पाठ्यवस्तु में समाहित मानवीय मूल्यों के प्रति शिक्षकों की जागरूकता का छात्र / छात्राओं / विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना है। प्रस्तुत शोध के लिये **सर्वेक्षण विधि** का प्रयोग किया गया है। **न्यादर्श** के रूप में 800 (400 छात्र + 400 छात्राओं) को लिया गया है। **निष्कर्ष** से ज्ञात होता है कि शासकीय उच्च माध्यमिक स्तर की हिन्दी पाठ्यवस्तु में समाहित मानवीय मूल्यों के प्रति शिक्षकों की जागरूकता का उनके छात्र / छात्राओं / विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ा है।

एक सशक्त राष्ट्र का निर्माण उस राष्ट्र में रहने वाले लोगों के माध्यम से ही संभव हो पाता है। और एक अच्छे नागरिक की पहचान ही यह होती है कि वह अपने राष्ट्र के प्रति प्रेम और निष्ठा, आपसी सद्भाव अनुशासन और स्थापित सामाजिक नियमों मानदण्डों के अनुसार आचरण करें जिससे उसमें नागरिकता की भावना सही अर्थों में विकसित हो सके, और वह अपनी पूर्ण क्षमता के साथ अपने मजबूत हाथों में देश की बागडोर को ले सके। इसकी पूर्ति के लिए प्रत्येक राष्ट्र की यह राष्ट्रीय आवश्यकता बन जाती है कि वह अपने देश की युवाशक्ति में सकारात्मक ऊर्जा के संचार हेतु एवं देश की सामाजिक - सांस्कृतिक अस्मिता को अभिव्यक्ति व समय की चुनौतियों का सामना करने के विशिष्ट शिक्षा-प्रणाली

* रिसर्च स्कॉलर, शिक्षा संकाय, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)

** प्राचार्य (सेवानिवृत्त), शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)

विकसित करें, क्योंकि वर्तमान समय में शिक्षा का सर्वप्रथम उद्देश्य विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास करना है ताकि वो अपने सामाजिक दायित्वों का पालन सफलतापूर्वक कर सकें।

शिक्षा एक प्रतिपादन है जिसका मूर्तरूप शिक्षक जो समाज की हर सत्ता से इसीलिए ऊपर हैं क्योंकि बालक उसे अपना आदर्श मान उससे ही संस्कारों और समाजीकरण की शिक्षा का अर्थ समझकर उसको ग्रहणकर जीवन व्यवहार में उसका अनुकरण करता है। व्यक्ति व समाज परस्पर साधन व साध्य दोनों हैं। अतः इनमें अन्योन्याश्रय संबंध पाया जाता है। **राधा कमल मुखर्जी** के अनुसार “मूल्य समाज द्वारा मान्यता प्राप्त इच्छाएँ तथा लक्ष्य है जिनका अन्तरीकरण सीखने, समाजीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से होता है।”

सामाजिक बुद्धि प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से व्यक्ति के सामाजिक अन्तर्व्यक्तिक, अन्तर्व्यवहारिक, अन्तर क्रियाओं के समायोजन से संबंधित होती है जो व्यक्ति को व्यवहारिक कौशल क्षमता प्रदान कर उसकी चारित्रिक गुणों की निपुणता पर जोर देती है। जिससे व्यक्ति की व्यवहारिक समायोजित कार्य निष्पादन की योग्यता का पता चलता है। सामाजिक बुद्धि सम्प्रत्यय को **ई.एल. थार्नडाइक (1920)** ने सर्वप्रथम न केवल बताया अपितु विशद् अध्ययन कर पाया कि व्यक्ति के **आत्म (Self)** का विकास ‘परस्पर व्यवहार’ के माध्यम से कर मनुष्य को समाजीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से सामाजिक प्राणी यही लब्धि बनाती है और इसके पीछे व्यक्ति के **स्वयं (Self)** में कार्य करने वाली लब्धि व्यक्ति को समाज से संबंध बनाने की योग्यता प्रदान कर उसमें ‘समायोजन क्षमता’ उत्पन्न व विकसित करती है जिसके परिणामस्वरूप व्यक्ति में व्यवहारिक कौशल क्षमता आती है जिससे बालक की सामाजिकता को बल प्राप्त होता है। आपने बताया यह बुद्धि व्यक्ति की सामाजिक अन्तःक्रियाओं और समायोजित संवेगात्मक मूल प्रवृत्तियों से संबंधित वह बुद्धि है जो समाज के अंतर्गत ‘सामाजिक दशाओं के अनुसार सामाजिक पर्यावरण में व्यक्ति को समुचित व्यवहार करने की प्रेरणा देती है’ अतः एक ओर यह लब्धि व्यक्ति की सामाजिक अन्तर्व्यवहारिक कुशलता को संबल प्रदान करती है तो दूसरी ओर समाज में व्यक्ति के अन्तर्व्यक्तिक संबंधों की निपुणता पर जोर देती है क्योंकि इस बुद्धि का व्यक्ति की संवेगात्मक लब्धि व व्यवहार समायोजन संबंधी संज्ञान से उच्च धनात्मक सह संबंध पाया जाता है।

निकोसे, आर.एल. (2010) ने ‘भावी शिक्षकों की सामाजिक बुद्धि का अध्ययन किया’ परिणाम स्वरूप पुरुष एवं महिला छात्राध्यापकों की सामाजिक बुद्धि में सार्थक अंतर पाया गया। पुरुष छात्राध्यापकों की सामाजिक बुद्धि महिलाओं छात्राध्यापिकाओं की तुलना में अधिक थी एवं ग्रामीण छात्राध्यापिकाओं की सामाजिक बुद्धि शहरी छात्राध्यापिकाओं की तुलना में अधिक थी। **सेमबियान, आर एवं विश्वनाथन जी. (2012)** ने ‘महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि पर’ कार्य किया परिणामों में पाया कि विभिन्न क्षेत्रों के महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है, लेकिन लिंग एवं संस्था के प्रकार से संबंधित महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि में सार्थक अंतर है। **सक्सेना, डॉ. सुमनलता एवं जैन, डॉ. रजत कुमार, (2013)** ने ‘लिंग एवं विषयधारा के संबंध में स्नातक विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि का अध्ययन’ किया परिणामों से स्पष्ट हुआ कि लिंग के आधार पर प्राप्त विश्लेषण यह दर्शाते हैं कि छात्रों की तुलना में छात्राओं में सामाजिक बुद्धि अधिक है कला संकाय के विद्यार्थियों में अन्य विषयधाराओं की अपेक्षा अधिक सामाजिक बुद्धि है।

अपने अध्ययन में सामाजिक बुद्धि विषय पर **नैनसी केनहर एवं जॉन किस्ट्रोम** ने उस अवधारणा को व्यक्त किया जो व्यक्ति अक्सर अपने सामाजिक संबंधों में अनुमान लगाते हैं- मैं किस परिस्थिति में हूँ ? और यह व्यक्ति किस प्रकार का है- जो मुझे बात कह रहा है ? और वह नियम जिनसे वे अनुमान लगाते हैं जैसे - उसका इससे क्या मतलब है? और उसका उपाय - मैं अब इस बारे में क्या करने जा रहा हूँ ? **सोरेन्सन (Sorenson)** ने इस लब्धि को अपने साथ और दूसरों के साथ भली-भाँति चले-चलने (समायोजित करने) की बढ़ती हुई योग्यता बताया। **फ्रीमैन एवं शौवल (Freeman and**

Showel) ने सामाजिक बुद्धि को 'समाजीकरण की प्रक्रिया के अंतर्गत सामाजिक संबंधों में परिपक्वता प्राप्त करना बताया। श्रीमती हरलॉक, सेमुअल स्माइल्स, बोनहेम, वेलेन्टाइन डमविले, मक्डूगल आदि मनोवैज्ञानिकों व दर्शन सामाजिक शास्त्रियों ने सामाजिक बुद्धि पद को केन्द्र में रखकर इसके अर्थ को सामाजिक विकास व चरित्रिक निर्माण के रूप में स्पष्ट किया।

“सामाजिक बुद्धि स्वयं एवं समाज जागरूकता के विषय में एक संचित माप है जो जटिल सामाजिक परिवर्तनों को संभालने के लिए सामाजिक विश्वास, ढंग, क्षमता, और इच्छा को विकसित करता है।” - रॉस इनीविल

सामाजिक बुद्धि को अनेक कारक प्रभावित करते हैं एवं कारकों की तीव्रता यह सुनिश्चित करती है कि कारकों का सामाजिक बुद्धि पर किस प्रकार का प्रभाव पड़ रहा है। वर्तमान में सामाजिक बुद्धि को शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षकों की पाठ्यवस्तु संबंधी जागरूकता भी प्रभावित करती है सामान्य रूप से शिक्षकों को अब वैज्ञानिक तकनीकी युग में पुरानी परिपाटी से पाठ्यवस्तु संबंधी ज्ञान प्रदान करने पर उतना अधिक ध्यान न देकर वर्तमान में उपयोगी संज्ञान के प्रति जागरूकता रखते हुए पाठ्यवस्तु संबंधी मूल्यों पर ध्यान देना चाहिए। सामाजिक बुद्धि निश्चित रूप से व्यक्ति संबंधी सामाजिक व्यवहार की सफलता की भविष्यवाणी में अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस बुद्धि का प्रशिक्षण देकर हम बालक को सामाजिक रूप से परिपक्व बना सकते हैं, जिससे उसमें सामाजिक व्यवहारिक समायोजन क्षमता का विकास होगा और वह भविष्य में सशक्त प्रभावशाली नागरिक के रूप में देश की प्रगति में एक अहम भूमिका अदा कर पायेगा क्योंकि इस लब्धि का व्यक्ति के कार्य व्यापार क्षेत्र एवं व्यावसायिक जीवन की सफलता में लगभग 80 प्रतिशत का योगदान रहता है जो विभिन्न अनुसंधान परिणामों से स्पष्ट होता है। सामाजिक लब्धि सम्प्रत्यय की सराहना मात्र इसलिए नहीं की जा सकती कि यह एक नवीनतम सम्प्रत्यय है अपितु यह बुद्धि व्यक्ति के सम्मुख यह आदर्श प्रस्तुत करती है कि कैसे वह अपने आप को समाज में सशक्त, खुशहाल व प्रभावी बनाये रख सकता है। वर्तमान अनुसंधान में मूल्यों संबंधी शिक्षिकाओं की जागरूकता का उनके छात्र / छात्राओं / विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ा है।

उद्देश्य :- शासकीय उच्च माध्यमिक स्तर की हिन्दी पाठ्यवस्तु में समाहित मानवीय मूल्यों के प्रति शिक्षकों की जागरूकता का छात्र / छात्राओं / विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि पर प्रभाव का अध्ययन।

परिकल्पना: शासकीय उच्च माध्यमिक स्तर की हिन्दी पाठ्यवस्तु में समाहित मानवीय मूल्यों के प्रति शिक्षकों की जागरूकता का उनके छात्र / छात्राओं / विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

चर-

स्वतंत्र चर - मूल्यों के प्रति शिक्षकों की जागरूकता

परतंत्र चर - सामाजिक बुद्धि

नियंत्रित चर - कक्षा 9वीं एवं आयु 12-14 वर्ष के छात्र

न्यादर्श -

न्यादर्श में विद्यालयों की सूची में से हिन्दी विषय को पढ़ाने वाली 43 शिक्षिकाओं का यादृच्छिक विधि से चयन किया गया। इन शिक्षिकाओं पर शोधार्थी द्वारा स्वनिर्मित मूल्यों संबंधी जागरूकता मापनी का प्रशासन एवं फलानकन कर उच्च एवं निम्न जागरूक शिक्षिकाओं का चयन किया गया। ये शिक्षिकाएँ जिन कक्षाओं में अध्यापनकार्य कर रही थी उनके विद्यार्थियों को निम्नानुसार न्यादर्श में चयनित किया गया -

तालिका क्रमांक - 01

न्यादर्श तालिका

शिक्षक जागरूकता स्तर		संख्या	कुलयोग
छात्र	उच्च	200	400
	निम्न	200	
छात्रा	उच्च	200	400
	निम्न	200	
विद्यार्थी (छात्र / छात्रा)	उच्च	400	800
	निम्न	400	

उपकरण :- सामाजिक बुद्धि मापनी - डॉ. एस. माथुर द्वारा निर्मित।

विधि:- न्यादर्श में चयनित विद्यालयों के शिक्षक / शिक्षिकाओं पर शोधार्थी द्वारा निर्मित पाठ्यवस्तु में समाहित मूल्यों संबंधी जागरूकता मापनी का प्रशासन कर उच्च एवं निम्न जागरूक शिक्षक / शिक्षिकाओं के विद्यार्थियों पर सामाजिक बुद्धि मापनी का प्रशासन किया गया एवं फलांकन के उपरांत परिणामों का विश्लेषण अगली कंडिका में प्रस्तुत किया गया।

परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या - न्यादर्श से प्राप्त प्रदत्त का सांख्यिकीय विश्लेषण निम्नांकित तालिकाओं में प्रस्तुत किया गया है -

तालिका क्रमांक - 02

उच्च एवं निम्न मूल्यों के प्रति जागरूक शिक्षकों के विद्यार्थियों के सामाजिक बुद्धि के तुलनात्मक परिणाम

जागरूकता स्तर		संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	'पी' मान
छात्र	उच्च	200	61.92	11.84	3.99	< 0.01
	निम्न	200	66.08	9.38		
छात्रा	उच्च	200	73.50	8.69	9.99	< 0.01
	निम्न	200	64.01	10.10		
विद्यार्थी (छात्र / छात्रा)	उच्च	400	67.71	11.89	3.47	< 0.01
	निम्न	400	65.04	9.80		

स्वतंत्रता के अंश - 398 / 798

0.05 स्तर पर सारणीमान - 1.96 / 1.96

0.01 स्तर पर सारणीमान - 2.59 / 2.58

उपरोक्त सारणी में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट होता है कि पाठ्यवस्तु में समाहित मूल्यों के प्रति शिक्षिकाओं की जागरूकता का छात्र / छात्राओं एवं विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। तीनों समूहों के लिए प्राप्त क्रांतिक अनुपातों के मान क्रमशः - 3.99, 9.99 एवं 3.47 हैं जो 0.01 स्तर पर सार्थक है। निम्न जागरूकता वाली शिक्षिकाओं के छात्रों की सामाजिक बुद्धि, उच्च जागरूकता वाली शिक्षिकाओं के छात्रों से अधिक है जबकि उच्च जागरूकता वाली शिक्षिकाओं की छात्राओं / विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि, निम्न जागरूकता वाली शिक्षिकाओं की अपेक्षा अधिक है। यह परिणाम स्वभाविक प्रतीत होता है क्योंकि सामाजिक बुद्धि का मूल्यों के साथ सहचर्य होता है जो शिक्षक मूल्यों के प्रति जागरूक होंगे वे अपने अध्यापन में इससे संबंधित बातों को विषयवस्तु से जोड़ते हैं जिससे विद्यार्थियों को जीवन की वास्तविकता एवं समाज में उसकी क्या भूमिका है? इस संबंध में ज्ञान मिलता है जो विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार एवं सामाजिक समायोजन के विकास में सहायक होता है।

पूर्व अनुसंधानों के परिपेक्ष्य में यदि वर्तमान अनुसंधान कार्य के परिणामों को जोड़ा जाये तो छात्र एवं छात्राओं के परिपेक्ष्य में यह परिणाम सक्सेना, डॉ. सुमनलता एवं जैन, डॉ. रजत कुमार, (2013) के परिणामों के अनुरूप हैं। जिसमें उन्होंने जब लिंग एवं विषयधारा के संबंध में स्नातक विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि का अध्ययन किया परिणामों से स्पष्ट हुआ कि लिंग के आधार पर प्राप्त विश्लेषण यह दर्शाते हैं कि छात्रों की तुलना में छात्राओं में सामाजिक बुद्धि अधिक है कला संकाय के विद्यार्थियों में अन्य विषयधाराओं की अपेक्षा अधिक सामाजिक बुद्धि है, एक अन्य अनुसंधान में निकोसे, आर.एल. (2010) ने निष्कर्ष स्वरूप पाया कि पुरुष छात्राध्यापकों की अपेक्षा महिला छात्राध्यापिकाओं एवं ग्रामीण की अपेक्षा शहरी छात्राध्यापिकाओं की सामाजिक बुद्धि अधिक पायी गयी, सेमबियान, आर एवं विश्वनाथन जी. (2012) ने अपने अध्ययन में निष्कर्ष स्वरूप पाया कि छात्रों की तुलना में छात्राओं में सामाजिक बुद्धि अधिक है व कलासंकाय के विद्यार्थियों में अन्य विषयधाराओं की अपेक्षा अधिक सामाजिक बुद्धि है, निम्न शोध परिणामों से जो बात उभर कर आती है, वह यह है कि मूल्यों के प्रति शिक्षिकाओं की जागरूकता का छात्र / छात्राओं / विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

निष्कर्ष :-

- शासकीय उच्च माध्यमिक स्तर की हिन्दी पाठ्यवस्तु में समाहित मानवीय मूल्यों के प्रति शिक्षकों की जागरूकता का उनके छात्र / छात्राओं / विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ा है।

संदर्भ ग्रन्थ :-

- (1) श्रीवास्तव डी.एन., 'समाज मनोविज्ञान', छठवां संस्करण, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, पृ. सं. 29
- (2) सरीन एण्ड सरीन, 'शैक्षिक अनुसंधान विधियां', नवीनतम संस्करण विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, पृ. सं. 105
- (3) कपिल, एच.के. (2005) सांख्यिकीय में मूल तत्व, आगरा (उ.प्र.), विनोद पुस्तक मंदिर, नवीनतम संस्करण, पृ. सं. 258
- (4) मंगल, एस.के. (2008), शिक्षा मनोविज्ञान, (हिन्दी), नई दिल्ली, प्रेंटिस हॉल ऑफ इंडिया, प्राइवेट लिमिटेड, प्रथम संस्करण, पृ. सं. 176

Journals

- Deepti Hooda "Social Intelligence as a predictor of positive psychological Health", Journal of the Indian Academy of Applied Psychology, January 2009, Vol. 35, No. 1, pg. 143-150.
- Monalima Dutta, g. Baratha (1998) "Social Adjustment of Adlescents". Indian Psychological Review, Vol. 50, No. 2, pg. 90-94.

A Study of the Effect of Emotional Intelligence on Academic Achievement of Senior Secondary School Students

Thomas Chandy*
Dr. Urmila Verma**

ABSTRACT

The present study investigates the effect of emotional intelligence on the academic achievement of the senior secondary school students. The research scholar in this paper has made a humble attempt to study the impact of emotional intelligence on academic achievement particularly of the students of class 12th. Of the 1000 population of students from the primary sample, 750 were selected for the final sample. The sample included students both from government and private schools. The findings of the study revealed that there is partial effect of emotional intelligence on academic achievement of the senior secondary school students. Boys with high emotional intelligence have better academic achievement. There is no effect of emotional intelligence on academic achievement of girls and students. There are no gender differences in academic achievement in relation to emotional intelligence.

Key Words - Emotional intelligence, Academic achievement, Senior secondary students

"Education is the complete development of the individuality of the child, so that he can make this original contribution to human life according to the best capacity".

T.P. Nunn

Education is the process of developing the capacities and potentials of the individual so as to prepare that individual to be successful in a specific society or culture. From this perspective, education is serving primarily as an individual development function. Education begins at birth and continues throughout life.

It is constant and ongoing. That is why Kothari Education Commission stated in the opening sentence of its report 'the destiny of India is now being shaped in her classrooms'. Through education alone the necessary changes in the knowledge, skills, interests and values of the people as a whole could be brought about, which is basic to every programme of social and economic betterment of people, of which India stands in need.

Mishra Poonam (2012) conducted a study to examine a study of the effect of emotional intelligence on academic achievement of Jaipur senior secondary students. The study revealed that there is a positive effect of emotional intelligence on academic achievement of total group students and especially girl students.

Akbar, Muhammad; Shah, Asghar Ali; Khan, Ejaz Ahmad; Akhter, Masud and Riaz, Muhammad Naveed (2011) conducted a study to examine the relationship between emotional intelligence and

* Ph.D., Research Scholar, RDVV, Jabalpur (M.P.)

** Retired Professor of Education, PSM College, Jabalpur (M.P.)

academic achievement among higher secondary school students. Significant relationship was found between two constructs. Female students scored high as compared to male students. Dr. Chamundeswari S. (2012) conducted a study on emotional intelligence and academic achievement among students at the higher secondary level in which the results showed a positive significant correlation between emotional intelligence and academic achievement among the students. Further the students belonging to the central board schools had a higher level of emotional intelligence compared to students in state board but did not differ with students in matriculation board schools at the higher secondary level. Similarly, students belonging to central board schools were found to perform better in academics compared to students in state and matriculation board schools at the higher secondary level.

From the previous researches on the related topic it was found that there was a significant positive correlation between emotional intelligence and academic achievement. The studies showed that there was positive effect of emotional intelligence on academic achievement. In other words, individuals with high emotional intelligence would perform better academically. Again, individuals with sound emotional intelligence are generally disciplined. Students who are disciplined will be in a better position to concentrate in their studies and perform better in academic results.

The relationship between emotional intelligence and academic achievement is obvious to a great extent. This is evident in many young persons, especially among adolescents and teenagers. Many of them in their secondary or senior secondary levels experience serious stress and strife. As a result, they are not able to concentrate on their studies. This will result in their bad academic performance and poor result.

The conclusions of the present study would be of great help to the students, their parents and educators for improving the academic achievement through training for enhancement of emotional intelligence

Objectives -

1. To study the effect of emotional intelligence on academic achievement of senior secondary school students.
2. To study gender differences in academic achievement in relation to emotional intelligence

Variables -

1. Independent variable - Emotional intelligence
2. Dependent variable - Academic achievement
3. Control variable - Senior secondary school students

Hypotheses -

1. There will be no effect of emotional intelligence on academic achievement of senior secondary school students.
2. There will be no gender differences in academic achievement in relation to emotional intelligence

Sample Design - The Primary sample of study is shown in the following table

Table No - 1
Primary Sample

Nature of Management	Boys	Girls	Total
Government	201	204	405
Private	324	271	595
Total	525	475	1000

After administration of the Emotional Intelligence test the final sample of study was shown as below -

Table No.2
Final Sample

Emotional Intelligence	Boys	Girls	Total
High	130	245	375
Low	153	222	375
TOTAL	283	467	750

Test used - Emotional Intelligence Inventory by Dr. S. Mangal and Mrs. Shubhra Mangal

Method of Data Collection -

The emotional intelligence scale was administered on the students of government and private schools as shown in the primary sample. After scoring of the test the students were divided into high and low emotional intelligence groups as shown in final sample table. The academic achievement of these students was taken from school records.

Analysis and Discussion of Results -

The analysis of results has been presented in the following table

Table No. 3
Comparative results of effect of Emotional Intelligence on Academic Performance

Gender	Emotional Intelligence	N	M	S.D	C.R	'P' Value
Boys	High	130	71.72	10.74	2.03	< 0.05
	Low	153	69.09	11.06		
Girls	High	245	71.55	9.82	0.61	> 0.05
	Low	222	70.98	10.59		
Boys+Girls	High	375	71.61	10.13	1.84	> 0.05
	Low	375	70.21	10.81		

Degree of freedom - 281, 465/748

Minimum value at 0.05 level - 1.97/1.96

Minimum value at 0.01 level - 2.59/258

There is effect of emotional intelligence of boys on academic achievement. The obtained value of CR is 2.03 which is significant at 0.05 level. High emotional intelligence boys have greater achievement than those of low emotional intelligence.

From the results presented in the above table it is clear that there is no effect of emotional intelligence on academic achievement of girls and students. The obtained values of CR's are 0.61 and 1.84 respectively which are less than the minimum values for significance at 0.05 level.

Thus, from the above results it may be concluded that there is no effect of emotional intelligence on academic achievement of girls and boys students, but boys with high emotional intelligence have higher academic achievement than those with low.

Table No. 4
Comparative results of boys and girls in relation to Emotional Intelligence

EI	Gender	N	M	S.D	C.R	'P' Value
High	Boys	130	71.72	10.74	0.15	> 0.05
	Girls	245	71.55	9.82		
Low	Boys	153	69.09	11.06	1.65	> 0.01
	Girls	222	70.98	10..59		

Degree of freedom -373

Minimum value at 0.05 level - 1.97
Minimum value at 0.01 level - 2.59

The results presented in the above table show that there are no significant gender differences in academic achievement of high and low emotional intelligence boys and girls. The obtained values of critical ratios are 0.15 and 1.65 which are not significant at 0.05 level.

Thus, from the above table it may be inferred that there are no gender differences in academic achievement relation to emotional intelligence.

Thus, from the above results it is apparent that there is partial effect of emotional intelligence on academic achievement since only in the case of boys, impact is seen. For the other two groups the academic achievement is independent of emotional intelligence. It will not be out of place to mention that though there is too much emphasis on equality of boys and girls yet in the present Indian culture the boys are known to be bread earners for the family. It is for this reason that the emotional intelligence has played its role for boys enhanced academic achievement. Higher the emotional intelligence, better is the adjustment since emotional integration, emotional maturity, empathy play their roles for better social relationships resulting in a comparatively mental health. This helps in more concentration and a better disciplined life which helps in a better emotional control resulting in better academic achievement. The results of Mishra, Poonam (2012) show that there was a positive effect of emotional intelligence on academic achievement of students (boys and girls) and specially girls. The results of the present research are contrary to these findings since it is found that there is impact of emotional intelligence on academic achievement of boys, with boys of high emotional intelligence scoring more academically. For girls and students, in the present research work, there is no impact of emotional intelligence on academic achievement. Chamundeshwari, S (2012) also found a significant correlation between emotional intelligence and academic achievement. These are partially in concurrence with the

results of the present research. The hypothesis is partially accepted.

As far as gender differences are concerned, no gender difference in academic achievement in relation to emotional intelligence have been found. It is natural since both boys and girls irrespective of their various characteristics try their utmost for optimum results. The results are contrary to the findings of Akbar, Muhammad, et. al (2011) where gender differences were found with girls scoring an edge over the boys, i.e., girls scored better than boys in academic achievement. The hypothesis is, thus, accepted.

Thus, from the above results it is observed that there is partial impact of emotional intelligence on academic achievement.

Conclusions -

The following conclusions have been drawn -

1. There is effect of emotional intelligence on senior secondary school boys. The boys with high emotional intelligence have greater achievement than those of low emotional intelligence
2. For the girls and the students there is no impact of emotional intelligence on their academic achievement
3. There are no gender differences in academic achievement in relation to emotional intelligence

References :-

- Caruso, Mayer J.D., Salovey P. (2001) Emotional Intelligence and Emotional Leadership, New Jersey : Erlbaum Associates.
- Goleman, Daniel (2005) Working with Emotional Intelligence, New York : Bantam.
- Indu & Nisha Kumari (2010) : Emotional intelligence of college students. Journal of Educational Research and Extension.Vol.47, No.3, pp.9-15.
- Karthika Gupta, P. (2010) : Emotional Intelligence among students. Edutracks. (Teachers in relation to the general intelligence and academic achievement), Vol. 10, p.03
- <http://dictionary.bnet.com/definition/Emotional+Intelligence.html>
- www.eric.gov.in
- <http://www.wikipidia>

Institutional Planning : Valuable Insights

Dr. Nimmi Maria Oommen*

ABSTRACT

"Institutional planning is a programme of development and improvement prepared by an educational institution on the basis of its felt needs and the resources available or likely to be available, with a view to improving the school programme and school practices.

The goals of planning and education in a democratic country are similar. Both aim at good life of all the citizens. Planning is the determinant and the determiner of education. Better education leads to better planning and better planning leads to the tremendous development in education both in its view. The Planning Commission has drawn a number of Five Year Plans of this country which have great significance to our educationists. This conceptual paper analyses the various aspects of institutional planning.

Keywords : Institutional planning, education, characteristics, improvement.

"Institutional planning is a programme of development and improvement prepared by an educational institution on the basis of its felt needs and the resources available or likely to be available, with a view to improving the school programme and school practices. It is based on the principle of optimum utilisation of the resources available in the school and the community." -M.B.Buch.

The different objectives of Institutional Planning are:

1. To provide equality of opportunities to all the pupils to get education.
2. To bring an accord between the development of an institution and national-level planning.
3. To have all-round development and improvement of the school.
4. To make education productive, so that with education may come economic riches.
5. To make provision for utilization of adequate available manpower of the institution.
6. To make education available to even the poorest of the citizens.
7. To provide an opportunity to the local community, school staff, students and teachers to join hands in improving the institution.
8. To provide realistic and concrete ideas to institutional planning.

Institutional planning should be based on certain predetermined objectives and all activities planned should help directly or indirectly to achieve these ends. The objectives of institutional planning should be in consonance with the district educational plan. It can be short term or long-term depending upon the circumstances and needs of the school.

*Assistant Professor of Education, Titus II Teachers College, Tiruvalla, Kerala

Scope of Institutional Planning:

The institutional plan seeks improvement in all directions. Institutional planning envisages a programme of development in its own sphere. Thus, it must touch varied aspects of the organisation of secondary schools.

The institutional planning must take the shape of an over-all scheme for the improvement of the school in respect of the following:

(a) Improvement of the school campus:

- (i) Provision of more facilities to the pupils like the supply of drinking water, sanitary facilities, mid-day meals, medical facilities etc.
- (ii) Collection of library books, magazines, journals; instructional materials and audio-visual aids for the school.
- (iii) Construction, maintenance and repair of school building.

(b) Improvement of Academic Facilities:

- (i) Dividing the curriculum in each subject into monthly and weekly units and sub-units.
- (ii) Organisation of remedial teaching for slow-learners.
- (iii) Organisation of seminars, conference etc. in the institution.
- (iv) Support to teacher-improvement programmes like in-service training, refresher courses, orientation courses etc. for teachers.

(c) Improvement of Co-curricular activities:

- (i) Organisation of physical activities in the school.
- (ii) Organisation of literary activities like preparation of bulletin boards, wall magazine, improved teaching aids and equipment's.
- (iii) Organisation of social service projects.

(d) School Improvement Projects:

- (i) Functional Literacy programmes.
- (ii) Adult education programme.
- (iii) Organisation of S.U.P.W.
- (iv) Maintenance and love for ecological equilibrium.

Again, the institutional planning must include investigation and research in the form of Action Research and Evaluation, conducted by the teacher in actual classroom situations on matters concerning teaching- learning process.

Important Characteristics by A. T Buch (1968)

(1) Need-based:

It is based on the felt needs of the staff of the institution and could incorporate needs in the

area of institutional organization, curricular and co-curricular programmes, support services, etc.

(2) Strengthening Human Efforts:

An institutional plan makes purposeful and deliberate efforts to enhance and augment human efforts by utilization of faculty's imagination, creativity, initiative and inspiration. It does not rely only on financial and physical infrastructural support.

(3) Specificity:

Every school/college has its own image and individual personality which is emphasized when planning for development and improvement as well as allocating resources and boosting potentials. Thus, every institution needs to have its own unique, specific plan.

(4) Goal-orientedness:

An institutional plan is directed towards pursuing the national goal of attaining excellence with equity. This requires; continuous improving and developing an institution by fixing higher goals each time.

(5) Optimum Utilization:

Its major criterion is to utilize human, financial and other non-material resources in a way which facilitates maximum benefits with minimum negative consequences i.e., in an optimum manner.

(6) Flexibility:

The national and state level plans are rigid in nature due to the top-down approach adopted and bureaucratic implementation. On the other hand, an institutional plan is flexible and open to modifications as demanded by situations.

(7) Dual Focus:

Each institutional plan has two distinct focal points: (a) improvement which is based on human efforts and (b) development necessitating support and assistance of the management, community and the government.

(8) Improved Motivation:

Through its successful implementation with visible output, it enhances motivation among students, teachers, management and the community, creates enthusiasm and a sense of commitment and affiliation in these groups.

(9) Co-operative Endeavour:

It is prepared by close participation and involvement of teachers, parents, students, principal and the management in the planning process.

(10) Democratic Preparation:

Its planning and implementation involve the entire stakeholder; who share their opinions, ideas and ideologies thus enhancing their sense of dignity and worthiness.

(11) Duration of Plans:

An institutional plan can be of a long-term duration, say, 10-15 years or it could be of five

years duration coinciding with the national/state five-year plans. Within the broad frame-work of long-term plan, an institution can prepare a number of projects or programmes for a shorter duration of one or two years.

(12) Relation with State and National Plans:

An institutional plan should be prepared within the State level and National level educational plans and need to reflect the National Policy on Education. However, the institutional plan can be prepared in the spirit of educational plans but still the institution can have the freedom to modify, change, add or reject them.

(13) Community Support:

Community involvement in institutional planning is a pre-condition and an absolute necessity as it ensures community support in implementation of the plan and helps in building a rapport between the institution and the community.

Conclusion

Institutional planning should be drawn by the institution concerned, with the active co-operation of the teacher. To achieve this end, it is necessary that each institution should have a planning board. The headmaster or the principal of the school should be the chairman of this Planning Board. Teachers having some training in drawing out a plan should be represented on this Board. There should be separate sub-committee formed by the head of the Institution. It should, therefore, be a working plan, based on the capacity of teachers, the needs of the pupils and the local community. If it is followed intensively, the teaching, organization and administration become systematic and effective.

References –

- Kochar, S. K. (2011) School Administration & Management. NewDelhi: Sterling Publishers
- Krishnamacharyulu, V. (2016) School Management & Systems of Education. Hyderabad: Neelkamal Publications.
- Mohanty, J. (2014). Educational Management, Supervision, School Organisation. Hyderabad: Neelkamal Publications.
- Nayak, K.C. (2012). School Organization and Administration. Jalandhar: Lotus Publishers.
- Ruhela, S. P. (1968). Human Values and Education. New Delhi: Sterling Publishers.

Online resources –

- <https://archive.org/stream/InstitutionalPlanning-J.P.Naik-1969/JP-70>
- <http://www.nsgmed.com/education/process-of-curriculum-change-definition-need-factors-influencing/>

Occupational Stress Among Teachers And Their Adjustment

Dr. Preeti S.Pendharkar*

ABSTRACT

Occupational Stress is called as stress at work. It occurs when there is discrepancy between the demands of the work place and that of individuals. There may be various reasons of occupational stress of teachers like, anxiety, inability to cope, expectations of the organization, new demands of teaching tactics, personal & professional adjustment etc. Adjustment in teaching profession has traditionally been categorized in five main types as Adjustment with Academic and General Environment of the Institution, Psycho-Physical Adjustment, Professional Relationship Adjustment, Personal Life Adjustment and Financial Adjustment. Present study tries to find out the relationship between the two factors, Occupational Stress among teachers and their overall Adjustment. For this study 800 teachers working at primary and secondary school, junior and senior college of Nagpur city were taken as sample. The assessment of Occupational Stress and Adjustment was derived using Occupational Stress Index by Dr Srivastava and Dr A.P. Singh and Mangal Teacher Adjustment Inventory by Dr. S. K. Mangal (Rohtek). The data was analyzed using coefficient of correlation 'r' to ascertain the relationship. The result reveals that, there is significant relationship between the occupational stress and adjustment of college and school level teachers.

Keywords : Occupation, Stress, Adjustments

Stress is defined as "a state of tension that arises from an actual or perceived demand that calls for an adjustment or adaptive behavior." It generally is recognized as an unpleasant emotional state. It occurs when there have been prolonged, increasing or new pressures that are significantly greater than coping resources. The consequences of stress include health problems and reduction in work performance.

Occupational stress is stress related to one's job. Occupational stress often stems from unexpected responsibilities and pressures that do not align with a person's knowledge, skills, or expectations, inhibiting one's ability to cope. It can increase when workers do not feel supported by supervisors or colleagues or feel as if they have little control over work processes. Work is a central part of human life. It is the expression of the basic need to accomplish, to create, to feel satisfaction, and to feel meaningful. Rewarding work is an important and positive part of our lives.

Teacher's stress has been a topic of much discussion over the years. It can produce both positive and negative results in teachers. Occupational stress in teachers is revealed as they are experiencing higher stress level and lower job satisfaction level, compared to other occupations.

There are a number of reasons why teachers experience stress, such as in disciplinary act of students, expectations of family, responsibilities of principal as well as management, radical changes in syllabus and government policies etc. The major problems facing teachers are due to the fact that

*Research scholar, PG Dept. of Education, RTM Nagpur University, Nagpur, Maharashtra (M.H.)

the increase in responsibility has not been accompanied by appropriated changes in facilities.

"Adjustment is the process by which living organism maintains a balance between its need and the circumstances that influence the satisfaction of those needs." In all the senses adjustment implies a satisfactory adaption to the demands of the day to day life and keeping a balance between need and capacity to realize needs. The teachers who start their carriers enthusiastically devote all their time to the profession, are dedicated to their jobs, may be susceptible to job stress which further results into ' dissatisfaction' and difficulty in adjustment.

Meanwhile, research indicates that teacher plays a very vital role in shaping the future of the nation as this is the profession of personal welfare and emotional support of students. So it should not be bound by stress and any type of adjustment. Most of the teachers cope up with the adjustment in their coping styles with task strategies, logics home and work relationship, time management and involvement. French and Caplan (cited in Sutherland and Cooper, 2009) posit the view that as teachers are being responsible for the work and performance of theirs, demands more interaction with others, and is thus more stressful than being responsible for equipment, budgets and other issues.

Significance of the Study –

The teachers, as front line players in the entire value chain of education system, carry greater responsibility and play a significant role in overall institutional success. Only the satisfied state of teachers can help the school or college to achieve its desired goals and meet the educational objectives. Research studies have widely discussed about the co-relationship between the Occupational Stress and Adjustment. In teaching profession, it is largely seen that due to number of reasons, teachers face the adjustments like, psycho-physical adjustment, professional relationship adjustment, personal life adjustment, financial adjustment and adjustment with academic & general environment of the institution. So teacher's high level of job stress due to such factors creates big gap between promised and actual levels of educational quality. So to find out the reasons, why teachers are stuck to stress and if adjustment and stress is correlated or not, the study is highly significant.

Objectives of the study –

- To study the occupational stress among school and college level teachers.
- To study the adjustment of school and college level teachers.
- To study the relationship between the occupational stress and adjustment of the school and college level teachers.

Hypothesis –

- There is no significant relationship between the occupational stress and adjustment of the school and college level teachers.

Methodology –

Present study is an empirical study and is exploratory in nature. In the present study data has been collected from all government aided and government school and colleges of Nagpur District, Maharashtra by administering Teacher's Occupational Stress scale by Dr. Srivastava and Dr. A. P. Singh. To calculate the relationship of occupational stress with adjustment of the college and school level Teacher Adjustment Inventory, by Dr. S. K. Mangal is used.

Sample –

The present study is conducted at Nagpur district of Maharashtra State. The 800 teachers of four different categories were selected as sample. The teachers working at different levels include 200 primary teachers ,200 secondary teachers (men/women),200 junior college teachers and 200 senior college teachers (men/women) are taken for study.

Result and Interpretation -

The objective wise analysis and results are given as follows:

- To study the adjustment level of college and school level teachers.

Table 1 - Area wise percentage of adjustment among school and college level teacher

Sr. No.	Areas	Category										Total
		Very good		Good		Average		Poor		Very Poor		
		Response	%	Response	%	Response	%	Response	%	Response	%	
1	Adjustment with academic and General Environment of the Institution	12	1.5%	337	42.13%	394	49.25%	57	7.12%	0	0%	800 (100%)
2	Socio-Psycho-Physical Adjustment	01	0.12%	374	46.75%	289	36.13%	125	15.63%	11	1.37%	800 (100%)
3	Professional relationship Adjustment	00	0%	327	40.87%	415	51.88%	58	7.25%	0	0%	800 (100%)
4	Personal Life Adjustment	14	1.75%	375	46.87%	395	49.38%	15	1.88%	1	0.12%	800 (100%)
5	Financial Adjustment and Job Satisfaction	17	2.13%	321	40.12%	293	36.63%	161	20.12%	8	1%	800 (100%)

Interpretation

From the above table of the area wise Adjustment among school and college level teachers we observe that :-

- 12 (1.5%) teachers are having Very Good Adjustment with Academic and General Environment of the Institution. 337 (42.13%) teachers are having Good and 394 (49.25%) teachers are having Average Adjustment with Academic and General Environment of the Institution. 57 (7.12%) teachers are having Poor Adjustment with Academic and General Environment of the Institution.
- 1 (0.12%) teachers are having Very Good Socio-Psycho-Physical Adjustment. 374 (46.75%)

teachers are having Good and 289 (36.13%) teachers are having Average Socio-Psycho-Physical Adjustment. 125 (15.63%) teachers are having Poor and 11 (1.37%) teachers are having Very Poor Socio-Psycho-Physical Adjustment.

- iii) 327 (40.87%) teachers are having Good and 415 (51.88%) teachers are having Average Professional relationship Adjustment. 58 (7.25%) teachers are having Poor Professional relationship Adjustment.
- iv) 14 (1.75%) teachers are having Very Good Personal Life Adjustment. 375 (46.87%) teachers are having Good and 395 (49.38%) teachers are having Average Personal Life Adjustment. 15 (1.88%) teachers are having Poor and 1 (0.12%) teachers are having Very Poor Personal Life Adjustment.
- v) 17 (2.13%) teachers are having Very Good Financial Adjustment and Job Satisfaction. 321 (40.12%) teachers are having Good and 293 (36.63%) teachers are having Average Financial Adjustment and Job Satisfaction. 161 (20.12%) teachers are having Poor and 8 (1%) teachers are having Financial Adjustment and Job Satisfaction.
- To study the relationship between occupational stress and adjustment of college and school level teachers.

Sr. No.	Variable (1) (V1)	Mean	Variable (2) Adjustment (All areas)	Mean (V2)	Correlation of V1 & V2 'r' value
1.	Occupational stress	72.36	Adjustment with Academic and General Environment of institution	67	0.192
2.	Occupational stress	72.36	Socio - Psycho - Physical Adjustment	73.43	0.006
3.	Occupational stress	72.36	Professional Relationship Adjustment	85.65	0.216
4.	Occupational stress	72.36	Personal life Adjustment	79.47	0.045
5.	Occupational stress	72.36	Financial Adjustment And Job Satisfaction	81.21	0.033
6.	Occupational stress	72.36	Total Adjustment	76.37	0.117

Interpretation :

From the above table, we can see that the mean of Occupational Stress is 72.36 and it is correlated with the mean of all the factors of Adjustment. The mean of Occupational Stress is 72.36 where the first type of adjustment of Academic and General Environment of institution is 67. Correlation between Occupational Stress and Adjustment with Academic and General Environment of Institution of college and school level teachers is 0.192. For 798 df table value of 'r' at 0.01 level is .081 and at 0.05 level it is .062. Calculated value of 'r' is 0.192. It means calculated value is more than table value at both levels of significance. Therefore we rejected the null hypothesis and accepted the alternative hypothesis. So we can say that there is significant relationship between the Occupational Stress and Adjustment with Academic and General Environment of Institution of college and school level teacher.

Further from the table it is seen that the mean of Occupational Stress is 72.36 and the mean of Socio - Psycho - Physical Adjustment is 73.43. Correlation between Occupational Stress and Socio - Psycho - Physical Adjustment of college and school level teachers is 0.006. For 798 df table value of 'r' at 0.01 level is .081 and at 0.05 level it is .062. Calculated value of 'r' is 0.006. It means calculated value is less than table value at both levels of significance. Therefore we accepted the null hypothesis. So we can say that there is no significant relationship between the Occupational Stress and Socio - Psycho - Physical Adjustment of college and school level teachers.

According to table the mean of Occupational Stress is 72.36 and the mean of Professional Relationship Adjustment of college and school level teachers is 85.65. Correlation between Occupational Stress and Professional Relationship Adjustment of college and school level teachers is 0.216. For 798 df table value of 'r' at 0.01 level is .081 and at 0.05 level it is .062. Calculated value of 'r' is 0.216. It means that calculated value is more than the table value at both the levels of significance. Therefore we rejected the null hypothesis and accepted the alternative hypothesis. So we can say that there is significant relationship between the Occupational Stress and Professional Relationship Adjustment of college and school level teachers. From the above table it is clear that mean of Occupational Stress 72.36 and the mean of Personal Life Adjustment 79.47. Correlation between Occupational Stress and Personal Life Adjustment of college and school level teachers is 0.045. For 798 df table value 'r' at 0.01 level is .081 and at 0.05 level it is .062. Calculated value of 'r' is 0.045. It means calculated value is less than table value at both levels of significance. Accepting null hypothesis, we can say that there is no significant relationship between Occupational Stress and Personal Life Adjustment of college and school level teachers. Then it is shown in the table that the mean of Occupational Stress is 72.36 and the mean of Financial Adjustment and Job Satisfaction is 81.21. Correlation between Occupational Stress and Financial Adjustment and Job Satisfaction of college and school level teachers is 0.033. For 798 df table value of 'r' at 0.01 level is .081 and at 0.05 level it is .062. Calculated value of 'r' is 0.033. It means calculated value is less than table value at both levels of significance. Therefore we accepted the null hypothesis. So we can say that there is no significant relationship between the Occupational Stress and Financial Adjustment and Job Satisfaction of college and school level teachers. At last it is seen in the table, the mean of Occupational Stress is 72.36 and the mean of Adjustment is 76.37. Correlation between Occupational Stress and Adjustment of college and school level teachers is 0.117. For 798 df table value of 'r' at 0.01 level is .081 and at 0.05 level it is .062. Calculated value of 'r' is 0.117. It means calculated value is more than table value at both levels of significance. Therefore we rejected null hypothesis and it is accepted that there is Significant relationship between the Occupational Stress and Adjustment of college & school level teachers.

Conclusion -

From the obtained data of the adjustment of school and college level teachers, the researchers concluded that the following levels of various adjustment areas. They are

- I. 49.25% School and College level teachers are having average adjustment with Academic and General Environment of the Institution.
- II. 46.75% School and College level teachers are having good Socio - Psycho - Physical Adjustment.
- III. 51.88% School and College level teachers' Professional Relationship Adjustment is of average level.

- IV. 49.38% School and College level teachers' Personal Life Adjustment is average .
- V. 40.12% School and College level teachers are having good level of Financial Adjustment and Job Satisfaction.

Findings :

There is significant relationship between the Occupational Stress and Adjustment of college and school level teachers. Correlation between the Occupational Stress and Adjustment of college and school level teachers is positive. It means that when level of Occupational Stress is increases it affects the Adjustment accordingly and Adjustment level also increases.

Reasons for Result :

1. It is seen that our occupation coexists with lots of factors like colleagues, supervisors, managers, management etc, so dealing with all these factors we need to adjust with many issues and so while doing this our occupational stress affects, positively or negatively.
2. Man has multiple needs. He cannot satisfy all his needs and the obstacles arise in the satisfaction of needs due to personal limitations, social norms or other external factors. So in such situations he struck with lots of adjustments.
3. According to social expectation, a person in any profession has to perform various duties as father/mother, husband/wife, owner or servant. Performing all these gestures he or she needed to be adjustiveand it affects the occupational stress.
4. In working condition, initially we satisfied with our salary but when the time passes, being in the competition, we find ourselves dissatisfied and expect more. In such situation we face financial adjustment and thus it affect our stress at work.
5. Sometimes changes in the environment are so mind that the attempt of adjustment by individual are not manifested openly in fact instead of change the absence of change create the problems of adjustment.

References -

- Abeid, A. A. (2007). Job stress among teachers. *Journal of King Saud University*, 16(2), 16-29.
- Abel, M.H. and Sewell, J.(1999). Stress and burnout in rural and urban secondary school teachers. *The Journal of Education Research*, 92(5), 287 - 293.
- Al - Amri, A. A. (2004). Job Stress among teachers. *Journal of King Saud University - Arts*, 16(2),36-42.
- Allison, G.M.(2007). Type of student and teacher behaviours associated with teacher stress. *Teaching and Teacher Education. International Journal of Research and studies*, 23(945), 625-640.
- Beer, J. & Beer, J. (1992). Burnout and stress, depression and self-esteem of teachers. *Psychological Reports*, 71(3),1331-1336.
- Blasé, J.J.(1982). A social-psychological grounded theory of teacher stress and burnout. *Educational Administration Quarterly*, 18(4), 93-113.
- Brown, Z. A. and Uehare, D. L.(1999). Coping with teacher stress: A research synthesis for pacific educators. *Pacific Resources for Education and Learning*, 15(3),21-38.

- Campbell A. (2005). Aggression. In handbook of evolutionary psychology. Buss, D. New York : John Wiley. 628-652.
- Capel, S. A. (1997). Changes in students anxieties and concerns after first and second teaching practices. *Educational Research*, 39(2), 211-228.
- Duquette, D. (2006). Reducing stress and enhancing the general well - being of teachers using Tai Chi Chihmovements : A pilot study. *Californian Journal of Health promotion*, 4(1), 162-173.
- Encyclopedia Britannica (2012). Stress (psychology and biology).
- Evans, V. Ramsey, J. & Johnson, D. (1986). Analysis of the intrinsic and extrinsic stress factors of physical education teachers *Educations Research*, 36(6), 17-22.
- Fairbrother, K. & Warn, J.(2003). Workplace dimension, stress and job satisfaction. *Journal of managerial Psychology*, 18(1), 8-21.
- Gaudreau, P.,Nicholls, A. and Lavy.A.R.(2010), The ups and down of coping and sport achievement. *J sport Exercise Psychology* 32(3), 298-311.
- Gulwadi, G.(2006) Seeking restorative experiences : Elementary school teachers choices for places that enable coping with stress *Environment and Behavior*, 38, 503,-520.
- Hastings, R.P. &Bham, M.S.(2003). The relationship between student behavior patterns and teacher burnout. *School Psychology International*, 24(1), 115-127.
- Jarvis, M.(2002). Teacher stress:A critical review of recent findings and suggestions for future research directions. *Stress News*, 14(1), 12-16.
- Konukman, F. ,Agbunga, B. &Endogan, S. (2010). Teacher-coach role conflict in school-based physical education in U. S. A. *Biomedical Human kinetics*, 2(2), 19-24.
- Memeon, J. (2008). Teacher stress, job performance and self efficacy of woman school teachers. *Journal of managerial Psychology*, 20(2), 178-187.
- O Lamre, O. (2010). Prevalence of job stress among primary school teachers in south west, Nigeria. *African Journal of microbiology Research*, 4(5), 339-342.
- Poornima. R. (2010). Emotional intelligence, occupational stress and job satisfaction of special education teachers. Ph. D.Thesis. Kuppam. Dept of Education Dravidian University.
- Ready, G.L. &Anuradha, R.V.(2013). Occupational stress of higher secondary teachers working in Vellore District. *International Journal of Educational Planning & Administration*,3(1), 9-24.
- Saba, S.andJangaiah,C.(2005).Adjustment and teacher's stress. *Edutrack*,5(1),32-35.
- Shafeeq, Nikhat Yasmin (2008), A study of job satisfaction of teachers teaching visually impaired in relation to their adjustment disabilities and impairments. Vol 14(2) 115-119.
- Timms, C. Graham, D.(2006), Gender implication of perceptions of trust worthiness of school administration and teacher job stress. *Australian journal of social issues*.Vol 41(3), pp 115-122.

Women Empowerment Through Education

Dr. Gayatree Goswamee*

ABSTRACT

Women empowerment is a global issue and discussions on women's political, educational, economic and social rights are at the forefront of many formal and informal campaigns worldwide. Despite widespread agreement that education is a fundamental human right, women and girls continue to face discrimination at all levels of education. Literacy among women opens the possibility of unlimited exposure to new information and more importantly to new ways of thinking. The status of women in any society is a significant indicator to the level of culture, social justice, economic and social development. Therefore, the education for women has become a necessity for achieving developmental goals. Women constitute half of the human resources but unfortunately the potential resource from this sector is not optimized for several reasons.

Gender discrimination is a universal phenomenon. For ages, women in India have been subjected to various degrees of social discrimination and economic exploitation. She is subjected to prejudices in an orthodox milieu and have to content with a secondary place in society. The exploitation of women is not limited only to the home or to the family but extends well beyond these frontiers. Women have been playing very important and significant economic roles in both the urban and rural areas. We see that both in the organised and unorganised sectors of the economy, be it agriculture, industry or other services, women have been contributing substantially and yet very often her contribution goes unnoticed by both the family and society. Her work remains mostly 'invisible'. Inequality between men and women is one of the most crucial and one of the most persistent disparities in most societies.

Differences in female and male literacy rates are one aspect of this broader phenomenon of gender based inequality in India. While about two thirds of males in the country were literate in 1991, the landmark of 50 percent has still not been achieved for females.

Gender inequality in education, depriving women the right to education was inbuilt into the social system very early in the history of our country. In fact, as early as later vedic age. The Brahmanical Smriti Literature reinforced this view categorically. The purdah system during the medieval era further distanced women from education, though it didn't ban completely. The coming of the British and the social reform movement started during its rule did lay some emphasis on female education as such, but this was more or less confined to the urban society, leaving the vast majority of rural women illiterate.

Today, there is need for change in the right direction. Literacy among women opens the possibility of unlimited exposure to new information and more importantly to new ways of thinking and new perspectives of existing information. Also literate women are able to constructively express their talents and give direction to their aptitudes. This enables them to lead a life which is more fulfilling and satisfying. Literacy is a fundamental component of attending better living standards and it can be regarded as a tool whereby women access to information, knowledge and thereby to power, becomes possible. Literacy is clearly perceived as a means for empowering women in the wider struggle against inequality and justice in society.

*Professor, Department of Education, Gauhati University, Guwahati, Assam

The empowerment of women is a high priority concerned for many of the developing Asian nations of the world. The determination to combat discrimination on the basis of gender and the recognition of equal rights for women have been considered as important as evolution of slavery, elimination of colonialism and establishment of equal rights for racial and ethnic minorities. Education of women will place them on an equal footing with men in decision making position in economic and political fields.

Making women literate and educating them are pre requisites not only for their equality and empowerment but for the development of nation. Women are the educators of the next generation. It is through them that innovation that helped the communities can be introduced in order to enable them to take part more effectively in modern life.

The incidence of unwanted pregnancies is still very high suggesting among other factors in educate access of women to education about reproductive choices and to family planning services. Literacy among women leads to better health status which makes her a more productive worker both home and outside, thereby leading the way to her equality and empowerment. Education of women emancipates them from wasteful child bearing thus giving them more time to participate in productive activities. Infant mortality is less among children of educated women and their surviving children are healthier and better educated compared to the infant mortality rate of Indian children whose mothers are illiterate.

Illiterate women and women with a minimal of education continue to be concentrated in low-paying occupations mostly in the informal sector which not only offers little security but also makes them vulnerable to exploitation. Moreover, they are denied equal pay for equal work, leave benefits etc. Literacy is critical in enhancing women's economic choices by way of improved access to paid employment and higher earnings. In the unorganized sector women's average earnings are consistently lower than that of men.

Self employment is a major sector of employment where poor women are concentrated. But in most cases the scale of operations is small and the consequent returns minuscule. If such poor women are educated, they would be in a position to take credit from banks or financial institutions which offer loans to this group of people. Such loans at present are not being fully utilized due to lack of knowledge among the women and insecurity felt by the lending institutions due to illiteracy of the borrower. Access to credit is one of the key elements in empowering women and enabling them to participate in market opportunities. Empowerment of women through education will lead to their greater participation and thereby enable them to contribute significantly to the national income.

Literacy will also help women to understand how the legal system can help them. In India we find an overdose of legislation whereby theoretically women are considered to be equal and also protected, but unfortunately the loopholes in the laws enable the perpetrators to escape through them. In spite of all the constitutional safeguards, women are subjected to various forms of discriminations in every sphere, be it at home or at the place of work. They become the worst victims in case of riot and insurgency situations. Women are abused, battered, molested, raped, murdered or forced to commit suicide. The laws that are being formulated to help women can only be effective when women themselves are aware enough to take recourse to them. This however calls for a comprehensive human rights education.

Illiteracy does prove to be a major stumbling block for developmental work. Illiteracy of the nation as a whole and of women in general leads to superstitions, economic stagnation and does not help in creating a truly democratic society. All this, in turn, tends to severely lower the status of women. In order to understand how literacy affects the lives of women and thereby of the nation, we may look at Kerala and Mizoram. Both these states enjoy a rate of female literacy higher than in other states of the country. As a result, family welfare programmes have had more success in Mizoram compare to other states. Female literacy has played a key role in improving the

health condition in the state and there is a decline in infant mortality rate. Literacy has help women to take care of their needs, arrange for loans and to take advantage of welfare schemes.

Literacy and education can go a long way in making changes not only in the image women have of themselves but also the roles that they play within the society. It will help change the stereo-typed ideas people hold about women's welfare and productivity. From the psycho-sociological point of view, it is more through the education of women than through the education of men, that changes in attitudes and behavior necessary for a better adaption to the modern world are achieved.

The concept of women's empowerment appears to be the outcome of several important critiques and debate generated by the women's movement throughout the world. It was in the mid 1980s that this term became popular in the field of development, especially in reference to women. In India it was in the Sixth Five Year Plan (1980-85) that the concept of women and development was introduced for the first time.

It is now widely recognised that women must be empowered and that the systems and ideologies which keep them subordinate, dismantled. The basic goal of women's empowerment is equality. Women must be equal partners in decision making in all institutions and at all levels. The more empowered women are, the more fully they live and the more meaningful their lives become. Women must be sufficiently courageous to ask basic questions about the quality of their lives in order to live fully and productively. The accomplishment of women's empowerment does not mean that others will necessarily be oppressed.

Women's empowerment does not imply disempowering men. It simply challenges the traditional power of men over women and outside the family. It is not against men, but against the system of patriarchy and all its manifestations. Power is the key word of the term "empowerment". Power means being able to make a contribution at all levels of society and not just in the home. It also means having women contribution recognised and valued. Empowerment is an active, multi-dimensional process which enables women to realize their full identity and powers in spheres of life. Power as to be acquired, and once acquired it needs exercise, sustained and preserved.

Literacy is a fundamental component of attaining equality and empowerment. It is now widely recognised that literacy for poor women has become a means for acquiring knowledge and skills whereby women can begin to understand and analyse unequal gender relations and the structure of poverty and exploitation in society so that they can collectively challenge the existing reality. In other words, literacy is clearly perceived as a means for empowering women in the wider struggle against inequality and injustice in society. A general awakening has begun and it cannot be permanently suppressed. Women's education can definitely alter India's social and political landscape.

References :-

- Debi,Renu: "women of Assam"Omsons publication, New Delhi 1997.
- Gore, M.S"Education for Women's Equality", Centre for Women's Development Studies, New Delhi 1988.
- Jawed Akhtar, S.M. "Empowerment of women in India-Issues and challenges" in Ajit Kumar Sinha (ed) New Dimensions of Women Empowerment, Deep and Deep Publications Pvt, Ltd, New Delhi 2008.

Problems Affecting Learning of Chemistry Among Secondary School Students

Ms. Dzüvimenó Iralu Yaden*
Dr. Bendangyapangla**

ABSTRACT

Although Chemistry occupies the prime position in the educational system it is regarded as a difficult subject for students because of the abstract nature of many chemical concepts, teaching styles applied in class, lack of teaching aids and the difficulty of language of Chemistry. Chemistry was not very popular among the Nagas until the establishment of Kohima Science College in the year 1961. More than five decades on, performance in Chemistry has not been very encouraging among students at the school level in Nagaland. Therefore, exploration of the factors that led to the problems of teaching and learning Chemistry was necessitated. It was assumed that the problems may lie not only with the students but also with the teachers. The investigation sought to delve into the problematic areas encountered by both the students and the teachers.

In realizing the importance of science, the Kothari Commission (1964-66) remarked, "The basic approach and philosophy underlying the reconstruction of education adopted by us in this Report on our deep conviction that the progress, welfare and security of the nation depend critically on a rapid, planned and sustained growth in the quality and extent of education and research in science and technology"

Science education has been considered as a main area of education. Science began to be a part of the curriculum in some schools in the 19th century. Right from the start, it was supposed to achieve a range of goals-the intellectual goal of developing students' thinking and reasoning skills; the personal and practical goal of developing students' understanding of how things work, and the futuristic goal of building students' capacity for innovation and creativity.

This field is important because it could improve science and technology education and increase the scientific development in higher education and other related fields. According to the National focus Group on Teaching of Science (NFG, 2006), "Science education should enable the learner to acquire skills and understand the methods and processes that lead to generation and validation of scientific knowledge. It further stated that Science curriculum up to class X should be oriented more towards developing awareness among the learners about the interface of science, technology and society, sensitizing them, specially to the issues of environment and health, and enabling them to acquire practical knowledge and skills to enter the world of work. It should not stress only on the content, but, more importantly, the process skills of Science, that is, the methods and techniques of learning science". Therefore, concerning science education curriculum and the content of science books is so important. One of the fields to achieving the desired curriculum is concerning the favorites, needs and attitudes of students towards science and technology, science that is taught in schools and environmental issues. Knowing and awareness of these areas would enable science curriculum planners to

*Asst. Prof., Department of Science Education ,State College of Teacher Education. Kohima

** Asst. Prof., Department of Language Education, State College of Teacher Education. Kohima

develop better and appropriate curricula. Indeed, concerning element of learner in curriculum development is based on the theoretical background that considers learner, knowledge and society as the three main bases of curriculum (Eisner, 1984).

Science education academics identified four broad purposes for school science education. These are-

1. Preparation of students for a career in science (pre professional training).
2. Equipping students with practical knowledge of how things work (utilitarian purpose).
3. Building students' science literacy to enable informed participation in science-related debates and issues (democratic/citizenship purpose).
4. Developing students' skills in scientific thinking and their knowledge of science as part of their intellectual enculturation (cultural/ intellectual purpose).

For the last 60 years or so, the emphasis of the official school science curriculum has oscillated between two different approaches to teaching : 'knowledge centered' teaching approaches, in which the primary focus is to replicate the structures of the discipline, and 'learner-centered' approaches, which are oriented around the learner's needs. Nature study was the focus, and children's understanding and interest was to be built through a variety of experiences, rather than by learning facts. In secondary schools, the emphasis shifts to knowledge, and disciplining students into the discipline. According to Lopes (2005), school disciplines should not be the mere reproduction of scientific knowledge. They should have social purposes. Chemistry is a fundamental science that impacts all facets of our lives. It is often referred as the central science because it joins together physics and mathematics, biology and medicine and the earth and environmental sciences. Knowledge of the nature of chemicals and chemical processes provides insights into a variety of physical and biological phenomena.

Chemistry is one of the most important branches of science. It can be emphasized that the field of Chemistry, and science and technology are related to the economic heart of every highly-developed industrialized and technologically advanced society. As A.K.Bakhshi and Vimal Rarh (2012) highlighted that Chemistry is a fundamental science that impacts all facets of our lives. Chemists not only describe and explain our world as it is but are also changing and extending the world by producing many new chemical substances. The growth of Chemistry knowledge poses a serious challenge for Chemistry education because this knowledge should ultimately be integrated with the education system to pass it on to the future generations.

Despite the prime position, Chemistry in our educational system and the efforts made by the researchers to enhance performance, students' performance in Chemistry and sciences in general are still low. Some of the reasons identified by researchers for this failure are laboratory inadequacy, teachers' attitude, examination malpractices, time constraint for conducting practical, non-coverage of syllabus, class size, non professionalism and environment.

Research has shown that students lack in understanding the fundamental concepts in Chemistry and thereby shows low participation in examinations. Similarly, Maldaner and Piedade (1995) consider that the greatest problem in teaching chemistry is the way that concepts are introduced. The concepts should enable the student to truly learn chemistry, without rote learning of definitions or use of formulas and words devoid of meaning. Ideally, the words or concepts used by the students should gradually become a way of thinking.

Dr. Anita Menon (2005) is of the view that the traditional approach of lecture and note taking

has lost its effectiveness as the modern day around education grows. In efforts to grow academically it must be considered that differentiated modalities of teaching and learning are necessary to implement deeper levels of growth and conceptual development. Since every student is not interested in all subject matters. However, it is the responsibility of the education system to employ a variety of opportunities for the students to gain interests, orchestrating academic growth and progression throughout childhood and adolescence.

Chemistry being in the significant position in education and the low performance in Chemistry, there is a need to explore the problems that are hindering the learning of Chemistry in secondary level in schools of Nagaland. As Rao, Shardamba (1988) found that learning process scores and concept scores were low indicating that the comprehension was not achieved by children by giving bits of information about scientific facts. The low Science achievement scores also showed that very little was retained by children by rote memory.

OBJECTIVES OF THE STUDY –

The study was taken up keeping the following objectives in focus -

1. To find out the concepts in Chemistry that are difficult for the teachers to teach.
2. To analyze the problems faced by Chemistry teachers in teaching the subject.
3. To find out the concepts in Chemistry that are difficult for the students to learn.
4. To find out the problems faced by students in learning Chemistry.

METHODOLOGY –

Descriptive survey was adopted for the study, which comprised of Science teachers teaching chemistry at secondary levels and Class 9 and 10 students of Government Secondary and Private Secondary Schools of Kohima, the capital town of Nagaland.

SAMPLE –

For the present study Simple Random Sampling was adopted to select 14 (fourteen) schools and five students each from classes 9 and 10. Each school comprises of only one Chemistry teacher, therefore, all teachers teaching Chemistry in the sampled schools were under the purview of the study. The same is presented in a tabular form -

Sl. No.	Name of Schools	Teachers	Students	
			Class IX	Class X
1.	Rüzühkhrie Government Higher Secondary School.	2	5	5
2.	PWD Government High School.	1	5	5
3.	Merhülietsa Government High School.	1	5	5
4.	Mount Sinai Higher Secondary School.	2	5	5
5.	Stella Higher Secondary School.	1	5	5
6.	St. John High School, Merhülietsa.	1	5	5
7.	New Market Government High School.	1	5	5

8.	Mewi. High School.	1	5	5
9.	TM Government Higher Secondary School.	2	5	5
10.	Charity High School.	1	5	5
11.	Bayavü High School.	1	5	5
12.	Mezhür Higher Secondary School.	2	5	5
13.	Baptist Higher Secondary School.	2	5	5
14.	Don Bosco Higher Secondary school.	2	5	5

TOOLS –

1. Self constructed Questionnaire for teachers of Chemistry
2. Self constructed Questionnaire for students

Areas of investigation for Teachers of Chemistry included:

- 1. Concepts in Chemistry that were difficult to teach**
 - a. Chemistry topics that were easy for the teachers to teach.
 - b. Chemistry topics that were difficult for the teachers to teach.
- 2. Teachers' performance in teaching Chemistry**
 - a. Teachers' educational qualification
 - b. Types of methods employed in teaching Chemistry.
 - c. Reasons for using different methods of teaching.
 - d. Facilities available in schools to supplement in teaching Chemistry.
 - e. Application of Chemistry to daily life.
 - f. Teaching materials used to supplement teaching of Chemistry.
- 3. Problems faced by teachers in teaching Chemistry.**
 - a. Availability of facilities in the school.
 - b. Opportunity in availing Orientation courses in Chemistry.
 - c. Work load
 - d. Content.

Areas investigated from the Secondary level students covered the following aspects:

- 1. Finding the concepts in Chemistry that are difficult to learn.**
 - a. Chemistry topics that are easy to learn.
 - b. Chemistry topics that are difficult to learn.
- 2. Exploring major problems faced by students in learning Chemistry.**

- a. Methods used in teaching the concepts.
- b. Availability of facilities in the schools.
- c. Attitude towards learning Chemistry.
- d. Application of Chemistry to daily life.

ANALYSIS OF DATA –

Data collected were tabulated and calculated by converting into average and percentages and interpreted accordingly.

FINDINGS OF THE STUDY –

Some important findings against the objectives of the study were:

1. To find out the concepts in Chemistry difficult for the teachers to teach
 - 19% of teachers claimed that rate of chemical reaction as the most difficult concept to teach in Class IX.
 - 8% of teachers find nature of matter and metals and non metals to be least easy to teach in class X.
2. To analyze the problems faced by Chemistry teachers in teaching the subject.
 - Among the teachers under study, 58% of them claimed that there are Science laboratories in their schools but an alarming 25% of them lamented that there is no laboratory or library in the school. Those schools which have libraries have sufficient Chemistry books.
 - 29% of teachers do not have enough apparatus for conducting experiments in the laboratory. Other reasons are funds are not allotted; no laboratory assistant; no chemicals to perform experiments; insufficient tables to accommodate all students.
 - 67% of teachers are interested to go for orientation courses in Chemistry whereas 33% of teachers did not show any interest at all.
 - 42% of teachers were overburdened due to heavy load of the syllabus and 58% of teachers are able to complete the syllabus in time.

Most of the teacher's performances are affected due to overburden of workload in their profession.
3. To find out the concepts in Chemistry difficult for the students to learn
 - In Class 9, 39% of students claimed 'Periodic Classification of Elements' to be a difficult topic followed by 'Hydrocarbons', 'Chemical Reactions', 'Nature of Matter' and 'Structure of Atoms'.
 - In Class 10, 32% of students faced difficulty in understanding the topic 'Carbon Compounds' followed by 'Some Important Chemical Compounds', 'Metals and Non-Metals' and 'Rate of Chemical Reaction'.
4. To find out the problems faced by students in learning Chemistry.
 - 73% of students claimed that teachers use Lecture method only for teaching the concepts,

9% of the students are of the view that their teacher supplements their teaching with teaching aids and 6% of students claimed their teachers use demonstration method in their teaching, conducts experiments in the classroom and laboratory.

- From analysis, it is seen that most teachers still use Lecture method of teaching to teach the different concepts in Chemistry.
- While teaching Chemistry concepts, students claimed that teacher use demonstration method to help in the teaching-learning process. However, 56% of students are of the view that due to large number of students in the class, they are not able to view the demonstration properly. Other reasons for not enjoying teachers' demonstration are some students cannot understand the teachers' explanation while demonstrating; teachers' demonstration was not done properly and the teachers used old and rusty apparatus.
- More than 50% of students can complete their project work themselves and the other students takes the help of their siblings, parents, assistance from teachers and friends.
- 36% of students browse the internet to get a better understanding on chemistry concepts. On reviewing the data, it was found that 70% of students claimed that their teachers do not encourage them to use the internet.
- All the students responded that their teacher ask questions during the process of teaching. 66% of students are not able to answer correctly most of the time; 26% of students claimed that they cannot provide correct answers to the questions and only 8% claimed that they can answer the questions correctly whenever the teacher asks questions during the teaching-learning process.
- The reason for not being able to respond is that 34% of the students find Chemistry difficult to understand; 14% of students do not have interest in Chemistry; 9.6% of students claimed that they learn only by doing and blames the teacher for not teaching properly.

CONCLUSION –

Chemistry teachers in secondary schools of Kohima town identified Periodic Classification of Elements as the most common topic which is easy to teach the students. On the other hand, the teachers claimed the Rate of Chemical Reaction as the most difficult to teach the secondary level.

Chemistry is a discipline which needs a lot of experiments to supplement teaching in order to provide the best learning outcome. Chemistry when taught with practical experience contributes to joyful teaching and learning. Without which, teachers as well as the students will commonly presume Chemistry as abstract, quantitative and boring.

Teachers of Secondary schools were found to employ Lecture Method as the most frequently used method to teach the students. The reason was that the teachers found it easy to teach the concepts, saved time and since there were no provision of teaching aids in the school they were prompted to use the passive way of teaching-learning in classroom.

Yadav (2007) opined that no course in Science and Mathematics can be complete without including some practical work. The practical work ought to be carried out by individuals either in Science laboratories or in Science classes. Though there was lack of laboratory facilities in most schools of Kohima, practical work were conducted two to four times a month

Chemistry learning should be related to day-to-day activities and 92% of teachers supported that they applied Chemistry concepts to day-to-day activities of students which conforms to the view of Ghassan Sirhan (2007) that it is important to take into account the way the learner gains knowledge that is consistent with patterns of human learning.

Teachers can be referred to as a catalyst that brings about changes in the behavior of learners. He/she plays a central role in the actualization of educational goals and the survival of educational system. With such responsibilities a teacher should not be distracted from his/her enthusiasm and devotion to teaching by certain factors of the school. The problems faced by science teachers in teaching Chemistry as analysed through the data collected are as follows.

Laboratory has been given a distinct role in science education and rich benefits in learning, accumulates from using laboratory activities. However, still 25% of schools in Kohima do not have laboratories as according to the study conducted. Out of those schools which have laboratories, the teachers claimed that they do not have enough apparatus for conducting experiments in the class/laboratory. Other reasons are found to be funds are not allotted; no laboratory assistant; no chemicals to perform experiments and insufficient tables to accommodate all the students. Similar findings have been reported by Dr. Rajeshwari.K (2015), Bates (1978), Karolina Broman, Margareta Ekborg, and Dan Johnels (2011)

Singh H. (1986) was of the view that mostly lecture-cum-chalk-board strategy was used in physics and chemistry and rarely in zoology and botany teaching. As children learn by doing than merely listening, this can be a major factor that is affecting the learning of Chemistry. Rajput et al., (1978) also studied the problems faced by the teachers and students and found out that Science was taught without practical or laboratories, teachers strictly confined themselves to the prescribed syllabus and teachers taught subjects other than the one they were qualified and appointed for. These findings bring to light that the lack of laboratories and defective method of teaching chemistry is not confined only to the present study but may be universal in nature.

That Chemistry is related to day-to-day activities was agreed to by majority of the student respondents correspond to Karthikeyan, M. and Mohideen, S. R (2005) finding that there exists a positive correlation between the availability and utilization of laboratory facilities and students' attitude towards practical.

References –

1. Ghassan, S. (2007) Learning Difficulties in Chemistry: An Overview. www.tused.org/internet/tufed/arsiv/V4/i2/metin/tusedv4i2sl.pdf. Retrieved on 28/10/15
2. K. M. Rajan (2011) Phenomenological Primitives and Learning of Science. Journal of Indian Education.
3. Naresh. K. G. (2010) Research in Teaching of Science. APH Publishing Corporation, New Delhi
4. NCF (2005) National Curriculum Framework. Publication Division, NCERT. Sri Aurobindo Marg, New Delhi.
5. Verma N.K., Juneja J.K., Sharma J.P. & Jaiswal J.N.(2015) Science Class IX. Laxmi Publications(p) Ltd, New Delhi
6. Verma N.K., Juneja J.K., Sharma J.P. & Jaiswal J.N.(2015) Science Class X. Laxmi Publications(p) Ltd, New Delhi.

Gender Equality & Women Empowerment

Dr. Urmila Yadav*

ABSTRACT

In the present context, importance of gender mainstreaming cannot be overemphasised. Gender mainstreaming is a continuous, dynamic process of integrating a gender perspective into each stage of the development process, with a view to enabling equality and equity between men and women. This research paper is a effort to identify those loopholes or limitations which are observing the realization of empowerment of women

Key words- catalyzing, empowerment, domains, education

It is well recognised that societies which discriminate by gender tend to experience less rapid economic growth and poverty reduction than societies which treat men and women more equally. Ending of gender based inequities, discrimination and all forms of violence against girls and women has been accorded primary priority for catalysing women empowerment for an equalitarian society. This is fundamental to enabling women to participate fully in development processes and in fulfilling their economic, social, civil and political rights, for more inclusive growth.

Objectives of the Study

- To understand - What is gender equality & Domains of gender equality.
- To understand - Gender Equality & empowerment.
- To assess the status Women Empowerment in India.
- To analyze the Factors influencing the Empowerment of Women.
- To offer useful Suggestions
- Conclusion

What is gender equality :

Like race and ethnicity, gender is a social construct. Gender defines and differentiates the roles, rights, responsibilities, and obligations of women and men. The innate biological differences between females and males form the basis of social norms that define appropriate behaviours for women and men and determine the differential social, economic, and political power between the sexes. Although the specific nature and degree of these differing norms vary to society to society and across time, Reflecting into the " Vedas Purana" of Indian culture, women is being worshiped such as LAXMI MAA, goddess of wealth; SARSWATI MAA, for wisdom; DURGA MAA for power. At the beginning of the twenty-first century they typically favoured male giving them more access than female to the capabilities, resources, and opportunities that are important for the enjoyment of social, economic, and political power and well-being.

*Assistant Professor, School of Law, Sharda University, Gr. Noida

The question now is: how can we catalyze transformative change that can empower women and girls effectively and sustainably? Fundamental to creating this change is empowering women in three key domains:

The domains of gender equality:

For understanding gender equality that has three main dimensions:

The capabilities domain, which refers to basic human abilities as measured by education, health, and nutrition. These capabilities are fundamental to individual well-being and are the means through which individuals access other forms of well-being.

The access to resources and opportunities domain, which refers primarily to equality in the opportunity to use or apply basic capabilities through access to economic assets (such as land, property, or infrastructure) and resources (such as income and employment), as well as political opportunity (such as representation in parliaments and other political bodies). Without access to resources and opportunities, both political and economic, women will be unable to employ their capabilities for their well-being and that of their families, communities, and societies.

The security domain, which is defined here to mean reduced vulnerability to violence and conflict. Violence and conflict result in physical and psychological harm and lessen the ability of individuals, households, and communities to fulfill their potential. Violence directed specifically at women and girls often aims at keeping them in "their place" through fear. These three domains are interrelated, and change in all three is critical to Achieving gender equality. The attainment of capabilities increases the possibility that women can access opportunities for employment or participate in political and legislative bodies but does not guarantee it. Similarly, access to opportunity decreases the possibility that women will experience violence (although in certain circumstances, it may temporarily increase that possibility). Progress in any one domain to the exclusion of the others will be insufficient to meet the Goal of gender equality. Thus, investments need to be directed to interventions across all three domains in order to achieve the Goal of women empowerment. Investing in infrastructure to reduce women's time burdens, guaranteeing girls' and women's property and inheritance rights, eliminating gender inequality in employment, and increasing women's share of seats in national parliaments and local governmental bodies) reflect priorities for economic and political opportunity. And the final strategic priority-combating violence against girls and women-addresses the security domain.

Gender Equality & empowerment :

The concept of empowerment is related to gender equality but distinct from it. The core of empowerment lies in the ability of a woman to control her own destiny (Malhotra, Schuler, and Boender 2002; Kabeer 1999). This implies that to be empowered women must not only have equal capabilities (such as education and health) and equal access to resources and opportunities (such as land and employment), but they must also have the agency to use those rights, capabilities, resources, and opportunities to make strategic choices and decisions (such as is provided through leadership opportunities and participation in political institutions). And for them to exercise agency, they must live without the fear of coercion and violence. Because of the historical legacy of disadvantage women have faced, they are still all too often referred to as a vulnerable minority. In most countries, however, women are a majority, with the potential to catalyze enormous power and progress. While it is identified that the constraints that women face, it also emphasizes their resilience and the contributions they

make to their families, communities, and economies despite those constraints-contributions that could be multiplied if those constraints were removed.

Status of Women Empowerment :

Today we have noticed different Acts and Schemes of the central Government as well as state Government to empower the women of India. But in India women are discriminated and marginalized at every level of the society whether it is social participation, political participation, economic participation, access to education, and also reproductive healthcare. Women are found to be economically very poor all over the India. A few women are engaged in services and other activities. So, they need economic power to stand on their own legs on par with men. Other hand, it has been observed that women are found to be less literate than men. It has also noticed that some of women are too weak to work. They consume less food but work more. Therefore, from the health point of view, women folk who are to be weaker are to be made stronger. Another problem is that workplace harassment of women. There are so many cases of rape, kidnapping of girl, dowry harassment, and so on. For these reasons, they require empowerment of all kinds in order to protect themselves and to secure their purity and dignity.

Where does India stand? In India Gender gap stands at 68 per cent across the four pillars that WEF measures - economy, education, health and political representation.

India is ranked 87 out of 144, improving from its 108 position in 2015. It has closed its gender gap by 2% in a year: its gap now stands at 68% across the four pillars of economy, education, health and political representation. In the economic sphere, much work remains to be done. Overall, it ranks 136 in this pillar out of 144 countries, coming in at 135th for labour force participation and 137 for estimated earned income. India is also among a group of countries that have made key investments in women's education but have generally not removed barriers to women's participation in the workforce and are thus not seeing returns on their investments in terms of development of one half of their nation's human capital..

Population and Vital Statistics :

1. As per Census 2011, the final population of India is 1210.57 million (excluding the estimated population of 3 sub-divisions of Senapati district of Manipur) comprising 587.45 million (48.5%) females and 623.12 million (51.5%) males.
2. The sex ratio (number of females per 1000 males) at the national level is 943. Rural sex ratio is 949 and the urban is 929. Among the States, Kerala at 1084 has the highest sex ratio followed by Puducherry at 1037. Daman and Diu has the lowest sex ratio of 618 in the country.

Participation in Economy-

As per Census 2011, the workforce participation rate for females at the national level stands at 25.51% compared with 53.26% for males. In the rural sector, females have a workforce participation rate of 30.02% compared with 53.03% for males. In the urban sector, it is 15.44% for females and 53.76% for males.

Health and Well-Being-

The female Infant Mortality Rate (IMR) was 46 compared with the male IMR of 43 and the overall IMR of 44 in 2011. Among the major States, the highest overall IMR of 59 was observed in

Madhya Pradesh and the lowest of 12 in Kerala in 2011.

As per Census 2011, the workforce participation rate for females at the national level stands at 25.51% compared with 53.26% for males. In the rural sector, females have a workforce participation rate of 30.02% compared with 53.03% for males. In the urban sector, it is 15.44% for females and 53.76% for males.

Literacy and Education :

As per Census 2011, 73.0% of the population is literate comprising 64.6% females and 80.9% males. The incremental increase over Census 2001 of 10.5% for females is higher than 5.0% for males.

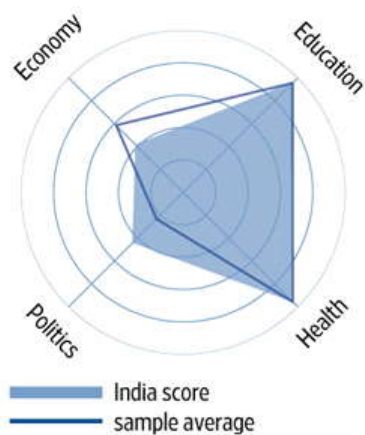
WEF- 2016 The report shows that there remain huge differences in the opportunities for women in the best and worst performing countries around the world.

Table-1- world Economic Forum's (WEF) Global Gender Gap Report 2016,

At a glance

India **87** rank
out of 144 countries

Scores at a glance



Key indicators

GDP (\$ billions)	2,073.54
GDP per capita (constant '11 intl. \$, PPP)	5,730
Total populations (thousands)	1,311,050.53
Population growth rate (%)	1.15
Population sex ratio (female/male)	0.93
Human capital optimization (%)	57.73

	2016		2006	
	Rank	Score	Rank	Score
Global Gender Gap Index	87	0.683	98	0.601
Economic participation and opportunity	136	0.408	110	0.397
Educational attainment	113	0.950	102	0.819
Health and survival	142	0.942	103	0.962
Political empowerment	9	0.433	20	0.227
Rank out of	144		115	

Challenges- Hindrances in the Path of Women Empowerment.

There are several constraints that check the process of women empowerment in India. Social norms and family structure in developing countries like India, manifests and perpetuate the subordinate status of women.

One of the norms is the **continuing preference for a son** over the birth of a girl child which is present in almost all societies and communities. The society is more biased in favor of male child in respect of education, nutrition and other opportunities. The root cause of this type of attitude lies in the belief that male child inherits the clan in India with an exception of Meghalaya. Women often

internalize the traditional concept of their role as natural thus inflicting an injustice upon them.

Poverty is the reality of life for the vast majority women in India. It is the another factor that poses challenge in realizing women's empowerment. There are several challenges that are plaguing the issues of women's right in India. Targeting these issues will directly benefit the empowerment of women in India Education: While the country has grown from leaps and bounds since independence where education is concerned. the gap between women and men is severe. While 82.14% of adult men are educated, only 65.46% of adult women are known to be literate in India.

Health and Safety : The health and safety concerns of women are paramount for the wellbeing of a country and is an important factor in gauging the empowerment of women in a country. However there are alarming concerns where maternal healthcare is concerned.

Professional Inequality : This inequality is practiced in employment and promotions. Women face countless handicaps in male customized and dominated environs in Government Offices and Private enterprises.

Morality and Inequality : Due to gender bias in health and nutrition there is unusually high morality rate in women reducing their population further especially in Asia, Africa and china.

Household Inequality : Household relations show gender bias in infinitesimally small but significant manners all across the globe, more so, in India e.g. sharing burden of housework, childcare and menial works by so called division of work.

"Behind this decline are a number of factors. One is salary, with women around the world on average earning just over half of what men earn despite, on average, working longer hours taking paid and unpaid work into account," WEF said.

Another challenge is stagnant labour force participation, with the global average for women at 54 per cent compared with 81 per cent for men. Moreover, the number of women in senior positions also remains stubbornly low, with only four countries in the world having equal numbers of male and female legislators, senior officials and managers.

Recommendations :

1. The first and foremost priority should be given to the education of women, which is the grass-roots problem. Hence, education for women has to be paid special attention.
2. Awareness programmes need to be organized for creating awareness among women especially belonging to weaker sections about their rights.
3. Women should be allowed to work and should be provided enough safety and support to work. They should be provided with proper wages and work at par with men so that their status can be elevated in the society.
4. Strict implementation of Programmes and Acts should be there to curb the mal-practices prevalent in the society.

Conclusion : Thus, the attainment in the field of income / employment and in educational front, the scenario of women empowerment seems to be comparatively poor. The need of the hour is to identify those loopholes or limitations which are observing the realization of empowerment of women and this initiative must be started from the women folk itself as well as more importantly policy initiative taken

by the state and society. But the Development Goal on gender equality and women's empowerment can be realised in India only when all will take the oath that we want an egalitarian society where everybody whether men or women get the equal opportunity to express and uplift one's well being and well being of the society as whole. Women represent half the world's population and gender inequality exists in every nation on the planet. Until women are given the same opportunities that men are, entire societies will be destined to perform below their true potentials. The greatest need of the hour is change of social attitude to women. The Empowerment of Women has become one of the most important concerns of 21st century not only at national level but also at the international level. Government initiatives alone would not be sufficient to achieve this goal. Society must take initiative to create a climate in which there is no gender discrimination and women have full opportunities of self decision making and participating in social, political and economic life of the country with a sense of equality.

References –

1. http://www.huffingtonpost.com/asa-skogstram-feldt/catalyzing-a-pathway-to-w_b_9409934.html
2. (<http://indianexpress.com/article/india/india-news-india/india-ranked-at-lowly-87-in-terms-of-gender-equality-3103633/>)
3. India: Women's Empowerment - IFAD / OE, 2000. The Republic of India; TamilNadu Women's Development Project : Completion Evaluation, Report 340 - IN Rome, April.
4. Goswami, L. (2013). Education for Women Empowerment. ABHIBYAKTI: Annual Journal, 1, 17-18.
5. Humanities and Social Science (IOSRJHSS), 9(2), 45-52 [WWW page].
6. Kishor, S. and Gupta, K. (2009), Gender Equality and Women's Empowerment in India,
7. Education and Women Empowerment in India. ZENITH: International Journal of Multidisciplinary Research, 1
8. Dhruva Hazarika "Women Empowerment in India : a Brief Discussion" International Journal of Educational Planning & Administration. Volume 1, Number 3 (2011)
9. Pankaj Kumar Baro1 & Rahul Sarania "Employment and Educational Status: Challenges of Women Empowerment in India" , A Peer-Reviewed Indexed International Journal of Humanities & Social Science.
10. <http://www.livemint.com/Politics/6hWxgogtoolxJh5SYBBELN/India-ranks-87-in-WEF-gender-gap-report.html>

Brain Based Learning in Teacher Education

Nivedita Paul*

ABSTRACT

Brain based learning is an application of a meaningful group of principles that represent understanding of how our brain works in the context of education. By integrating what we know about the brain with educational practices, brain-based learning suggests ways that how schools can be transformed into a complete learning organization. Brain-based education has become a new focus in education. It refers to teaching method, lesson design and school programs that are based on the latest scientific research about how the brain learns including factors of cognitive development. Applied to education, however, this will help educators to re-conceptualize teaching by taking out the traditional frames of references and guiding only through text but it will give a proper dimensions for selecting appropriate programs and methodologies. Like the heart, liver or lungs the brain is an incredibly complex physiological organ functioning according to a certain rule. Neuron growth, nourishment, and synaptic interactions are integrally related to the perception and interpretation of experience (Diamond 1985). Stress and threat affects the brain, and it is influenced directly by peace, challenges, boredom, happiness and contentment (Omstein and Sobel 1987). In fact brain is affected by school and life experiences. Anything that affects our physiological functioning will definitely affect the capacity to learn. Brain based education should be fully incorporate stress management, nutrition, exercise, drug education and other facets of health which helps in learning process. The objective of the brain-based learning is to move from memorizing information to meaningful learning. The essential understanding is that our brain can be characterized in three key ways, firstly, it is highly connected in that event in one part of the brain which affects those in other parts of the brain. Second, it is a learning miracles, its just do that much of what it learns which may not be what is intended by a teacher. Finally, it is highly adoptable and designed to respond to environmental input. Thus Brain-based learning is a new perspective in teaching and learning that is based on using technology and knowledge of the brain and its functions in order to get the most out of the educational process.

Key Word- Brain Based Learning.

"Brain based education is the purposeful engagement of strategies based on principles derived from solid scientific research."

Brain based learning is an application of a meaningful group of principles that represent our understanding of how our brain works in the context of education. The educator understands the principles and uses the strategies in a purposeful way and understands the reasoning behind their teaching. For this the teacher keeps themselves constantly updated through continuous professional development. Evidence suggests that stress is a significant factors in creativity, memory, behavior and learning. Teachers who manages stress factors in class are likely to experience a positive classroom environment. Stress in the classroom can be managed by integrating special exercises, incorporating

*Professor, Jabalpur Public College, Patan Road, Karmeta, Jabalpur (M.P.)

recess, teaching coping skills and utilizing physical education. Evidence suggests that moderate glucose level enhance learners memory making. Since glucose can be enhanced through food, stimulating emotions and physical activity, teachers, can manage their instructional strategies so that students can maintain their glucose levels which will help them to have a stronger memories.

Basically, Brain-based teaching is smarter, more purposeful teaching that can reach a greater number of students at one time. Eric Jensen is one of the few presenters who actually practices and adopted this teaching approach of brain's natural way of learning. Jensen research was based on compelling and comprehensive. Students are natural learners. 'Failing children are indication of a faulty system - not a faulty brain'. When students are provided with a learning environment which is optimal for learning, learning difficulties and discipline problems decreases, a love of learning flourishes. In other words it can be said that creating an organization around the way the brain naturally learns best, may be the simplest and most critical educational reforms ever initiated. The brain based learning solution is that its no longer a question of "Can we?" but the question now is "Will we ?"

Brain-based education has become a new focus in education. It refers to teaching methods, lesson design and school programs that are based on the latest scientific research about how the brain learns including factors of cognitive development - how students learn differently as they grow, mature socially, emotionally and cognitively. Brain based learning is motivated by the general belief that learning can be improved if educators think of how and what to teach based on science of learning, rather than on past educational practices about the learning process.

It is commonly believed that intelligence is a fixed characteristics that remains largely unchanged throughout a person's life. However, recent discoveries in cognitive science revealed that the human brain physically changes when it learns, and after practicing certain skills the learning capacity increases. The research finding - that learning effectively improves brain functioning, resiliency and working intelligence - has potentially far-reaching implication for how schools can design their academic programs and how teachers could structure educational experiences in the classroom.

The high level science behind how we learn is not necessary for any educators, but, the basics should be known. For example, how do we learn and what can we do to make it happen more often? How do emotions and stress affect the learning? These questions become more illuminated when we explore what goes on in our brains. At times, educators get over whelmed, particularly if there is a lack of science background. If a text is not understood, take a break, then back up, and read it again each time the text is restarted, the matter will get a bit further, and eventually, knowledge or understanding of the text will be gained. The essential understanding is that our brain can be characterized in three key ways, firstly, it is highly connected in that event in one part of the brain which affects those in other parts of the brain. Second, it is a learning miracles, its just do that much of what it learns which may not be what is intended by a teacher. Finally, it is highly adoptable and designed to respond to environmental input. Thus, the brain processes different types of learning through different pathways. For word, text and pictures, input to the brain arrives from our senses or it may be generated internally. There is no single pathway or process for all learning in the brain. Different types of learning eg- emotional, spatial, vocabulary, skill learning, etc. each take its unique pathways. Although they may share parts of a pathway, each human is unique, and the different input is processed differently.

The brain is the most complex organ we possess cell counts vary widely among humans, but generally a person's brain contains between 50 billion to 100 billion neurons. Brain size and weight

also vary among humans. The process of learning involves the whole body, the brain acts as a way station for incoming stimuli. All sensory input gets sorted, prioritized, processed, stored or dumped on a subconscious level as it is processed by the brain. The human brain has the largest area of cortex of any species on earth, which gives humans extraordinary flexibility and capacity for learning. The neurotransmitters are released, absorbed and reabsorbed via the thousand impulses activated every second in the brain. Neurotransmitters influence the synaptic reactions and result in learning impairment, enhancement or no effect. For example, a low level of the stress hormone cortisol during a learning session has no known effect. Moderate level, however, enhance synaptic efficiency, and high levels impairs learning. Thus a teacher can influence some neurotransmitters by inculcating some types of risk, urgency and excitement that can happen in a classroom competition. Get it, get it right, and strengthen it. This is the basic learning process that builds intricate neural network and makes the knowledge and understanding uniquely of own. A teacher should incorporate brief stretching, breathing exercise and purposeful play in the classroom. Activities and games that add an elements of moderate challenge, fun and stress-free learning can be introduced in the classroom environment. Number of scientific researches and academic related studies on brain-based learning has focused on neuroplasticity - the concept the neural connections in the brain change, remapping, and reorganizing themselves when people learn new concepts, have new experience or practice certain skills over time. Scientist have determined that brain can perform several activities at one time, the same information can be stored in multiple areas of the brain. Learning functions can be affected by diet, exercise, stress and other when the meaning is more important than information. When the brain is learning something new, and that certain emotional states can facilitate learning-among many other findings.

Brain base learning is a new perspective in teaching and learning that is based on using technology and knowledge of the brain and its functions in order to get the most out of the education process. This educational discipline unites the knowledge of neuroscience, psychology and education, with the objective to optimize the learning and teaching process. Brain base learning will definitely bring change in the way children study and learn. The educators will understand how to teach better by finding on how brain learns new things. Brain based learning is a relatively new idea and requires that educators and neuroscientists work together to create new programs. Specialists in the fields of neuroscience, psychology, cognitive science, and educations converge to improve teaching methods and academic programs. This brings neuroscience to the classroom in a new way and its purpose is to apply everything we know about how the brain learns and what stimulates brain development.

Factors intervening in brain based learning –

- 1- Brain plasticity and neurogenesis
- 2- Mirror neurons
- 3- Emotions and learning
- 4- Dyslexia and learning disorder
- 5- Experience influence who we are, just as much as genetics.

The information about neuroscience helps us massively in the classroom but how to apply brain based learning in the context of education? The basics are that we shouldn't limit ourselves to passively receive information, but rather manipulate it, actively participate in its development-

- 1- Create a positive emotional environment in the classroom.

- 2- Use of cognitit neuro education in the classroom.
- 3- Strengthen emotional learning.
- 4- Teach using different styles and form by diverse means.
- 5- Maintain an optiomal physical environment.
- 6- Repeat information in many ways.
- 7- Strengthen significant learning
- 8- Give Feedback.

Brain based learning allows us to adopt teaching to maximum children learning possibilities. It should be treated both in school and home. Educators should understand that the class structure, activities, words and emotions have an enormous influence on the development of their students brains and the way that the students learn.

Students learn better if they are given the opportunity to combine mental and physical activity together. They lose interest in learning when they just sit all day. All a teacher need is to make learning activities more active. Although practice makes a man perfect, but brain - based learning will allow students to establish information firmly.

References :-

1. Jensen, E. (2008). "Brain based learning - A New Paradigm of Teaching", USA, Corwin Press, Second Edition
2. what-is-brain-based-research (2018, Feb, 5) Retrieved from : [www.jensen learning.com/what is brain-is-brain-based-research](http://www.jensenlearning.com/what-is-brain-is-brain-based-research)
3. [https//education.cu-portland.edu](https://education.cu-portland.edu) date - 7th Feb 2018, 2:30 p.m.

भारत में चित्रकला का इतिहास

श्रीमति कीर्ति मिश्रा *

आलेख सार

प्रस्तुत शोध आलेख में चित्रकला के इतिहास को दर्शाया गया है। भारत में चित्रकला और उसका इतिहास पाषाण युग के गुफाचित्रों द्वारा प्रदर्शित होता है। भारतीय कला के विविध विधियों एवं उनके अंगों का वर्णन और उनके विकास पर भी प्रकाश डालने का प्रयास किया। कलाओं में चित्रकला सबसे ऊँची है जिसमें धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष की प्राप्ति को प्रदर्शित किया गया है। चित्रकला हर युग में अपनी छवि बिखेरती आ रही है। बौद्धकाल मध्ययुगीन-काल, राजपूत, मुगल और आधुनिक काल में भी कला का अपना एक महत्वपूर्ण स्थान है चित्रकला के द्वारा ही मानव का अपना विकास सम्भव हो सका। भारतीय कला शाश्वत सत्य का प्रतीक है क्योंकि “सत्यं शिव सुन्दरम्” की भावना से युक्त है।

भारत में चित्रकला का इतिहास बहुत पुराना रहा है पाषाण काल में ही मानव ने गुफाओं में चित्रण करना आरम्भ कर दिया था इसके प्रमाण होशंगाबाद भीमबेटका में मिलते हैं यहाँ कंदराओं और गुफाओं में मानव द्वारा शिकार करते मानव समूहों, स्त्रियों, पशु-पक्षियों आदि के चित्र मिलते हैं। अंजता की गुफाओं में की गई चित्रकारी कई शताब्दियों में तैयार हुई थी इसकी सबसे प्राचीन चित्रकारी ई.पू. प्रथम शताब्दी की है इन चित्रों में भगवान बुद्ध को विभिन्न रूपों में दर्शाया गया है -

प्राचीन युग: ऊद्वव - गुफाओं से मिले अवशेषों और साहित्यिक स्रोतों के आधार पर यह स्पष्ट है कि भारत में कला के रूप में चित्रकाल अतिप्राचीन कला रही, भारत में चित्रकला और कला का इतिहास मध्यप्रदेश की भीमबेटका गुफाओं की प्रागैतिहासिक काल की चट्टानों पर बने पशुओं के रेखांकन और चित्रांकन के नमूनों से प्रारंभ होता है। महाराष्ट्र के नरसिंहगढ़ की गुफा चित्रा में चितकबरे हिरणों की खालों को सूखता हुआ दिखाया गया है इसके हजारो साल बाद हड़प्पाकालीन सभ्यता की मुद्राओं पर भी रेखांकन और चित्रांकन पाया जाता है।

हिन्दू और बौद्ध दोनों साहित्य ही कला के विभिन्न तरीकों और तकनीकों के विषय में संकेत करते हैं। जैसे - लेप्यचित्र, लेखाचित्र और धूलिचित्र -

1. पहले प्रकार की कला का सम्बन्ध लोक कथाओं से है।
2. दूसरी प्रागैतिहासिक वस्त्रों से बने रेखा चित्र और चित्रकला से संबद्ध है और -
3. तीसरे प्रकार की कला फर्श पर बनाई जाती है।

ईसा पूर्व पहली शताब्दी के लगभग षड्दंग चित्रकला का विकास हुआ। वात्स्यायन का जीवनकाल ई. पश्चात 3री शताब्दी है। उन्होंने कामसूत्र में इन छः अंगों - यशोधर, 'पंडित' ने आलोख्य (चित्रकला) के छह अंग बताये हैं -

1. रूपभेद -
2. प्रमाण - सही नाप व संरचना आदि

*सहायक प्राध्यापक, जबलपुर पब्लिक कालेज, करमेता, जबलपुर (म.प्र.)

3. भाव - भावना -
4. लावण्य योजना -
5. सादृश्य विधान -
6. वर्णिका भंग -

“रूपभेदाः प्रमाणिन श्कावलावण्ययोजनम् ।

सादृश्यं वर्णिक भंग इति चित्र षंडगकम्” ॥

बौद्ध धर्म ग्रंथ विनयपाटिका (4-3 ईसापूर्व) में अनेकों शाही इमारतों पर चित्रित आकृतियों के अस्तित्व का वर्णन प्राप्त होता है। मुद्राराक्षस नाटक पांचवी ई.श. पश्चात् में भी अनेकों चित्रों या चित्रपटों का उल्लेख है। छठी शताब्दी के सौंदर्यशास्त्र के ग्रंथ वात्स्यायनकृत ‘कामसूत्र’ के ग्रंथ में 64 कलाओं के अंतर्गत चित्रकला का भी उल्लेख है, यह भी मान्यता है, कि यह कला वैज्ञानिक सिद्धान्तों पर आधारित है। सातवीं शताब्दी ई.सा. पश्चात् के विष्णुधर्मोत्तर पुराण में एक अध्याय चित्रकला पर भी है जिसका नाम ‘चित्रसूत्र’ है। इसमें बताया गया है कि चित्रकला के छः अंग हैं। आकृति की विभिन्नता, अनुपात, चमक रंगों का प्रभाव आदि। अतः पुरातत्वशास्त्र और साहित्य प्रागैतिहासिक कला से ही चित्रकला के विकास को प्रमाणित करते आ रहे हैं। विष्णुधर्मोत्तर पुराण के चित्रसूत्र में चित्रकला का महत्व इन शब्दों में बताया गया है -

“कलानां प्रवरं चित्रम् धर्मार्थं काम मोक्षगंद ।

मांगल्य प्रथम् दोतद् गृहे यत्र प्रविष्टितम् ॥ 38”

इसका अर्थ है कि कलाओं में चित्रकला सबसे ऊँची है जिसमें धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष की प्राप्ति होती है। अतः जिस घर में चित्रों की प्रतिष्ठा अधिक रहती है वहाँ सदा मंगल की उपस्थिति मानी गई है।

अजन्ता के गुप्तकालीन चित्रों की विषयवस्तु थी, पशु-पक्षी, वृक्ष, फूल, मानवआकृतियाँ और जातक कथाएँ। भित्तिचित्र - छतों और पहाड़ी, दीवारों पर बनाए जाते हैं अजन्ता की गुफा नं. 1 में बौद्ध-भिक्षुओं को स्तूप की ओर जाता दिखाया गया है। गुफा नं. 10 में जातक कहानियाँ चित्रित की गई हैं परंतु सर्वोत्कृष्ट चित्र पांचवी-छठी शताब्दी के गुप्तकाल में प्राप्त हुए हैं। ये भित्तिचित्र प्रमुखतया बुद्ध के जीवन और जातक कथाओं में धार्मिक कृत्यों को दर्शाया परन्तु कुछ चित्र अन्य विषयों पर भी आधारित हैं। इसमें भारतीय जीवन के विभिन्न पक्षों को दर्शाया गया है। राजप्रसादों में राजकुमार, अन्तःपुरो में महिलाएँ, कन्धो पर भार उठाया कुली, भिक्षुक, किसान, तपस्वी एवं इनके साथ अन्य भारतीय पशु, पक्षियों तथा फूलों का चित्रण किया गया है।

चित्रों में प्रयुक्त सामग्री -

विभिन्न प्रकार के चित्रों में भिन्न-भिन्न सामग्रियों का प्रयोग किया जाता था साहित्यिक स्रोतों में चित्रशालाओं और शिल्प शास्त्रों के संदर्भ प्राप्त होते हैं। यद्यपि चित्र में जिन रंगों का मुख्य रूप से उपयोग किया गया है वे हैं धातु राग, चटख लाल, कुमकुम या सिन्दूर, हरीताल (पीला), नीला, लापिसलाजुली नीला काला, चाक की तरह सफेद, खड़ी मिट्टी (गेरू) और हरा ये सभी भारत में सुलभ थे सिवाय लापिसलाजुली के यह पाकिस्तान से आता था। कुछ दुर्लभ अवसरों पर मिश्रित रंग जैसे - सिलेटी आदि का भी प्रयोग किया जाता था रंगों के प्रयोग का चुनाव विषय वस्तु तथा स्थानीय वातावरण के अनुसार सुनिश्चित किया जाता था।

बौद्ध चित्रकला -

बौद्ध चित्रकला के अवशेष उत्तर भारतीय 'बाध' नामक स्थान पर तथा छठी और नौवीं शताब्दी के दक्षिण भारतीय स्थानों पर स्थित बौद्ध गुफाओं में प्राप्त होते हैं। यद्यपि इन चित्रों की विषयवस्तु धार्मिक है परन्तु अपने अन्तर्निहित भावों और अर्थों के अनुसार इनसे अधिक धर्मनिरपेक्ष दरबारी और सम्भ्रान्त विषय नहीं हो सकते। यद्यपि इन चित्रों के बहुत कम अवशेष पाये जाते हैं परन्तु उनमें अनेकों चित्र देवी-देवताओं, देव सदृश्य किन्नरों और अप्सराओं विभिन्न प्रकार के पशु-पक्षी, फल-फूलों सहित प्रसन्नता प्रेम, कृपा और मायाजाल आदि के भावों को भी दर्शाते हैं। इनके अन्य उदाहरण बादामी (कर्नाटक) की गुफा नं. 3 कांचीपुरम के मन्दिरों सितावसेल तमिलनाडू की जैन गुफाओं तथा एलोरा (आठवीं और नवीं शताब्दी) तथा कैलाश और जैन गुफाओं में पाए जाते हैं। बहुत से अन्य दक्षिण भारतीय मंदिरों जैसे तंजौर के वृहदेश्व मंदिर के भित्ति चित्र महाकाव्यों और पुराण कथाओं पर आधारित हैं। जहां एक और बाघ, अजन्ता और बादामी के चित्र उत्तर और दक्षिण की शास्त्रीय परम्पराओं के नमूने प्रस्तुत करते हैं। सितानवसल, कांचीपुरम, मलयमदिपट्टी, तिरूमलैपुरम के चित्र दक्षिण में इसके विस्तार को भलीभाँति दर्शाते हैं। सितानवसल जैन सिद्धों के निवास के चित्र जैन धर्म की विषय वस्तु से संबंध है। जबकि अन्य स्थानों के चित्र जैन और वैष्णव धर्म के चित्र हैं। यद्यपि ये सभी चित्र पारंपरिक, धार्मिक विषय वस्तु पर आधारित हैं, यद्यपि यह चित्र मध्ययुगीन प्रभावों को भी प्रदर्शित करते हैं जैसे एक और सपाट और अमूर्त चित्रण और दूसरी और कोणीय तथा रेखीय डिजाइन आदि।

मध्यकालीन भारत में चित्रकला -

दिल्ली सल्तनत के काल में शाही महलों और शाही अन्तःपुरो और मस्जिदों से भित्तिचित्रों के वर्णन प्राप्त हुए हैं उनमें मुख्यतया फूलों, पशुओं और पौधों का चित्रण हुआ है इल्तुतमिश 1210-36, अलाउद्दीन खिलजी 1296-1316 के समय भित्तिचित्र तथा वस्त्रों पर चित्रकारी और अलंकृत पाण्डुलिपियों पर लघुचित्र प्राप्त होते हैं। सल्तनत काल में हम भारतीय चित्रकला पर पश्चिमी और अरबी प्रभाव भी देखते हैं। मुस्लिम शिष्टवर्ग के लिए ईरान और अरब देशों से पर्शियन और अरबी की अलंकृत पाण्डुलिपियों से भी आने के संदर्भ प्राप्त होते हैं। इस काल में हमें अन्य क्षेत्रीय राज्यों से भी चित्रों के सन्दर्भ मिलते हैं। ग्वालियर के राजा मानसिंह तोमर के महल को अलंकृत करने वाली चित्रकारी ने बाबर और अकबर दोनों को ही प्रभावित किया। 14वीं, 15वीं शताब्दियों से सूक्ष्म चित्रकारी गुजरात और राजस्थान में एक शक्तिशाली आन्दोलन के रूप में उभरी और केन्द्रीय, उत्तरी और पूर्वी भारत में अमीर और व्यापारियों के संरक्षण के कारण फैलती चली गई। मध्यप्रदेश में मांडू पूर्वी उत्तरप्रदेश में जौनपुर और पूर्वी भारत में बंगाल ये अन्य बड़े केन्द्र थे जहाँ पाण्डुलिपियों को चित्रकला से सजाया जाता था। 9-10वीं शती में बंगाल, बिहार एवं उड़ीसा आदि पूर्वी भारतीय प्रदेशों में पाल शासन के अन्तर्गत एक नई प्रकार की चित्रणशैली का प्रादुर्भाव हुआ जिसे 'सूक्ष्म चित्रण' कहा जाता है। जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है ये सूक्ष्म चित्र नाशवान पदार्थों से बनाये जाते थे। इसी श्रेणी के अन्तर्गत इनसे बौद्ध, जैन और हिन्दु ग्रन्थों की पाण्डुलिपियों का भोजपत्रों पर सजाया जाने लगा। ये चित्र अजन्ता शैली से मिलते जुलते थे। परन्तु सूक्ष्म स्तर पर ये पाण्डुलिपियाँ व्यापारियों की प्रार्थना पर तैयार की जाती थी इन्हे वे मंदिरों और मठों को दान कर देते थे।

तेरहवीं शताब्दी के पश्चात् उत्तरी भारत के तुर्की सुलतान अपने साथ पारसी, दरबारी, संस्कृति के महत्वपूर्ण स्वरूपों को भी अपने साथ लाए। पन्द्रहवीं, सोलहवीं शताब्दियों में पश्चिमी प्रभाव की अलंकृत पाण्डुलिपियाँ मालवा, बंगाल, दिल्ली, जौनपुर, गुजरात और दक्षिण में बनाई जाने लगी। भारतीय चित्रकारों की पर्शियन परम्पराओं के सम्मिश्रण में फलीभूत हुई जो 16वीं शताब्दी के चित्र में स्पष्ट झलकती है। प्रारंभिक सल्तनत काल में पश्चिमी भारत में जैन चित्रकला का महत्वपूर्ण योगदान रहा जैन शास्त्रों की अलंकृत पाण्डुलिपियाँ मंदिरों के पुस्तकालयों में उपहार स्वरूप दे दी गई। इन पाण्डुलिपियों में

जैन तीर्थकरों के जीवन और कृत्यों को दर्शाया गया है। इन पाठ्यग्रन्थों के स्वरूप को कृत्यों को दर्शाया गया है। इन पाठ्यग्रन्थों के स्वरूप को अलंकृत करने की कला को युगल शासकों के संरक्षण में एक नया जीवन मिला। अकबर और उनके परवर्ती शासक चित्रकला और भोग विषयक उदाहरणों में क्रान्तिकारी परिवर्तन लाए। इसी काल से किताबों की सजावट या व्यक्तिगत लघुचित्रों में भित्तिचित्रकारी का स्थान एक प्रमुख शैली के रूप में विकसित हुआ। अकबर ने काश्मीर और गुजरात के कलाकारों को संरक्षण दिया। हुमायुं ने अपने दरबार में पारसी चित्रकारों को आश्रय दिया। पहली बार चित्रकारों के नाम शिलालेखों पर भी अलंकृत किए गए। इस काल के कुछ महान चित्रकार थे। अब्दुस्समद दासवंत तथा बसावन। बाबरनामा और अकबरनामा के पृष्ठों पर चित्रकला के सुंदर उदाहरण पाये जाते हैं।

राजपूत चित्रकला -

कुछ ही वर्षों में पारसी और भारतीय शैली के मिश्रण से एक सशक्त शैली विकसित हुई और स्वतन्त्र 'युगल चित्रकला' शैली का विकास हुआ। 1562 और 1577 ई. के मध्य नई शैली के आधार पर प्रायः 1400 वस्त्रचित्रों की रचना हुई और इन्हें शाही कला दीर्घा में रखा गया। अकबर ने प्रतिमूर्ति बनाने की कला को भी प्रोत्साहित किया। चित्रकला जहाँगीर के काल में अपनी चरम सीमा पर थी। वह स्वयं भी उश्रम चित्रकार और कला का पारखी था। इस समय के कलाकारों में चटख रंग जैसे मोर के गले सा नीला तथा लाल रंग का प्रयोग करना और चित्रों को त्रि-आयामी प्रभाव देना प्रारंभ कर दिया था। जहाँगीर के शासन काल के मशहूर चित्रकार थे - मंसूर विशनदास और मनोहर। मंसूर ने चित्रकार अबुलहसन की अत्यभूत प्रतिकृति बनाई थी। उन्होंने पशु-पक्षियों को चित्रित करने में विशेषता प्राप्त की थी यद्यपि शाहजहाँ भव्य वास्तु कला में अधिक रुचि रखता था, उसके सबसे बड़े बेटे दाराशिकोह ने अपने दादा की तरह ही चित्रकला को बढ़ावा दिया। उसे भी प्राकृतिक तत्व जैसे पौधे, पशु आदि को चित्रित करना अधिक पसंद था तथापि औरंगजेब के समय में शाही संरक्षण के अभाव में चित्रकारों को देश के विभिन्न भागों में पनाह लेने को बाध्य होना पड़ा। इससे राजस्थान और पंजाब की पहाड़ियों में चित्रकला के विकास को प्रोत्साहन मिला और चित्रकला की विभिन्न शैलियाँ जैसे राजस्थानी शैली और पहाड़ी शैली विकसित हुई। ये कृतियाँ एक छोटी सी सतह पर चित्रित की जाती थी और इन्हें 'सूक्ष्म चित्रकारी' कहाँ जाने लगा। इन चित्रकारों ने महाकाव्यों मिथकों और कथाओं को अपने चित्रों की विषयवस्तु बनाया। अन्य विषय थे बारहमासा, रागमाला (लय) और महाकाव्यों के विषय आदि।

सूक्ष्म चित्रकला स्थानीय केन्द्रों जैसे कांगड़ा, कुल्लु, वसोली, गुलेर, चम्बा, गढ़वाल, बिलासपुर और जम्मू आदि में विकसित हुई।

पन्द्रहवीं और सोलहवीं शती में भक्ति आन्दोलन के उद्भव ने वैष्णव भक्तिमार्ग की विषयवस्तु का चित्र सज्जित पुस्तकों के निर्माण को प्रोत्साहित किया। पूर्व मुगल काल में भारत के उत्तरप्रदेशों में मंदिरों की दीवारों पर भित्तिचित्रों के निर्माण को प्रोत्साहन मिला।

आधुनिक काल में कला -

अठारहवीं शती के उत्तरार्ध और उन्नीसवीं शती के प्रारम्भ में चित्रकला अर्थ पाश्चात्य स्थानीय शैलियों पर आधारित थी जिसको ब्रिटिश निवासियों और ब्रिटिश आगन्तुकों ने संरक्षण प्रदान किया। इन चित्रों की विषयवस्तु भारतीय सामाजिक जीवन, लोकप्रिय पर्व और युगलकालीन स्मारकों पर आधारित होती थीं। इन चित्रों से परिष्कृत मुगल परम्पराओं को प्रतिबिम्बित किया गया था। इस काल की सर्वोश्रम चित्रकला के कुछ उदाहरण हैं -लेडी इम्पे के लिए शेख जियाउद्दीन के पक्षि-अध्ययन, विलियम फ्रेजर और कर्नल स्किनर के लिए गुलाम अली खाँ के प्रतिकृति चित्र अद्वितीय है।

उन्नीसवीं शती के उत्तरार्ध में कलकत्ता, मुम्बई और मद्रास आदि प्रमुख शहरों में यूरोपीय मॉडल पर कला स्कूल स्थापित हुए। राजा रवि वर्मा के मिथकीय और सामाजिक विषयवस्तु पर आधारित तैल चित्र इस काल में सर्वाधिक लोकप्रिय हुए। रवीन्द्रनाथ ठाकुर अवनीन्द्रनाथ ठाकुर, इ.बी. हैबल और आनन्द केहटिंश कुमार स्वामी ने बंगाल कला शैली के उदय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बंगाल शैली 'शांति निकेतन' में फली फूली जहां टैगोर जी ने कलाभवन की स्थापना की। उस समय के प्रतिभाशाली कलाकार नन्द लाल बोस, विनोद बिहारी मुखर्जी रहे थे। नन्दलाल बोस भारतीय लोक कला तथा जापानी चित्रकला से, विनोद बिहारी प्राच्य परम्पराओं में वही अन्य जेमिनी राय ने उड़ीसा की पट-चित्रकारी और बंगाल की कालीघाट चित्रकारी में गहरी रुचि रखते थे एवं अमृता शेरगिल ने पेरिस, बुडापेस्ट में शिक्षा ग्रहण की उन्होंने भारतीय विषयवस्तु को लेकर गहरे चटख रंगों से चित्रकारी की। उन्होंने विशेष रूप से भारतीय नारी और किसानों को अपने चित्रों का विषय बनाया। यद्यपि उनकी मृत्यु अल्प आयु में हो गई और वे भारतीय चित्रकला की समृद्ध विरासत छोड़ गई हैं। सन् 1943 में द्वितीय विश्व युद्ध के समय परितोष सेन, नीरद मजुमदार और प्रदोष दास गुप्ता आदि के नेतृत्व में कलकत्ता के चित्रकारों ने एक नया वर्ग बनाया जिसमें भारतीय जनता की दशा को नई द्व्य भाषा और नवीन तकनीक को प्रस्तुत किया। दूसरा महत्वपूर्ण परिवर्तन था सन् 1948 में मुंबई में फ्रांसिस न्यूटन सूजा के नेतृत्व में प्रगतिशील कलाकार संघ की स्थापना इस संघ के अन्य सदस्य थे एस.एच. रजा, एम.एफ. हुसैन के एम.आर.एम. के बाकरे तथा एच.ए. गोडे रहे। यह संस्था बंगाल स्कूल ऑफ आर्ट से अलग हो गई और इसने स्वतंत्र भारत की आधुनिकतम सशक्त कला को जन्म दिया।

1970 से कलाकारों ने अलोचनात्मक विषयों जैसे गरीबी और भ्रष्टाचार की दैनिक घटनाएँ, अनैतिक भारतीय राजनीति, विस्फोटक, साम्प्रदायिक तनाव एवं अन्य शहरी समस्याओं को अपनी कला का विषय बनाया। इन कलाकारों की मद्रास स्कूल ऑफ आर्ट संस्था स्वतन्त्रोत्तर भारत में एक महत्वपूर्ण कला केन्द्र के रूप में उभरी और आधुनिक कलाकारों की एक नई पीढ़ी को प्रभावित किया।

आधुनिक भारतीय चित्रकला के रूप में जिन कलाकारों ने अपनी पहचान बनाई वे हैं – तैयब मेहता, सतीश गुजराल, कृष्ण खन्ना, मनजीत बाबा, के.जी. सुब्रह्मण्यन, राजकुमार, अंजलि इला मेनन, अकबर, जातिन दास, जहाँगीर सबावबाला तथा ए. रामचन्द्रन आदि। भारत में कला और संगीत को प्रोत्साहित करने के लिए दो अन्य राजकीय संस्थाएँ स्थापित हुई –

1. नेशनल गैलरी ऑफ माडर्न आर्ट – इसमें एक ही छत के नीचे आधुनिक कला का एक बहुत बड़ा संग्रह है।
2. ललित कला अकादमी – जो सभी उभरते कलाकारों को विभिन्न कला क्षेत्रों में संरक्षण प्रदान करती है और उन्हें एक नई पहचान देती है।

संदर्भ ग्रंथ :-

1. [https://hi.wikipedia.org/w/index.php?title = भारतीय चित्रकला & oldid = 3620713](https://hi.wikipedia.org/w/index.php?title=भारतीय_चित्रकला&oldid=3620713)
2. भारतीय कला (गूगल पुस्तक; लेखक – उदय नारायण राय)
3. सी. शिवमूर्ति : Chitrasutra of the Vishnudharmottara, पृष्ठ 166

EMERGING RESEARCH JOURNAL

A Multidisciplinary Peer Reviewed (Refereed/Juried) International Journal

SUBSCRIPTION FORM TEMPLATE

I wish to subscribe to Emerging Research Journal for [1] [2] [3] Year(s). A Bank D.D. Bearing No. Dated for Rs./\$ drawn in favour Of "**JABALIPUR PUBLIC COLLEGE**" payable at Jabalpur, towards subscription has been enclosed herewith.

Name :

Designation : Qualification :

Subscription Year : 1 Year [] 2 Years [] 3 Years []

Subscription Type : Individual [] Institutional []

Delivery Address :

Contact No. : E-mail :

SUBSCRIPTION RATES

DURATION	INDIVIDUAL	INSTITUTIONAL	ROW (USD)
One Year	Rs. 500	Rs. 600	\$ 50
Two Year	Rs. 900	Rs. 1100	\$ 75
Three Year	Rs. 1200	Rs. 1500	\$ 100

Note :

1. Subscriptions are available for a whole volume (June & Dec.) only.
2. No cancellations are permitted.
3. Claims for missing issues can be made only within 45 days of publication date.
4. All legal disputes subject to Jabalpur Jurisdiction only.

SUBSCRIPTION ADDRESS

Subscription Manager
Emerging Research Journal
Jabalpur Public College
49, Karmeta Patan Road, Jabalpur
Madhaya Pradesh Pin-482002
erj.jpc@gmail.com
Cont : 0761-2688838, 9425154312

Get it photocopied for more subscription